आँसू और मुस्कराहट

खलील जिब्रान की सुन्दर तथा सुरुचिपूर्ण एवं चिन्तनपूर्ण कृतियों के कतिपय अनुवाद हमारी भाषा में हो चुके हैं। 'आँसू और मुस्कराहट' भी इसी जादूगर के कुछ चुने हुए लेखों का संग्रह है। जिब्रान को, दृष्टि के विस्तार, चिन्तन, अनुभूति, सौन्दर्य के सिद्धान्त और चित्ताकर्षक शैली के कारण पूर्वी साहित्य में प्रतिष्ठित पद प्राप्त है। विषयवस्तु की नवीनता के अतिरिक्त लेखन-शैली की दृष्टि से भी जिब्रान का रंग दूसरों से भिन्न है। प्रकृति-सौन्दर्य का अनुभव उसके यहाँ इतना गहन, सुसंगठित तथा पूर्ण है कि वह पाठक के ध्यान को जकड़ लेता है और लेख के अन्त में हमें विचारों तथा भावों के एक ऐसे खुले उद्यान में छोड़ देता है जहाँ हर ओर रहस्य की कलियाँ चटकती हैं और यथार्थ के फूल खिलते हैं।

आँसू और मुस्कराहट

आँसू और मुस्कराहट

लेखक

खलील जिब्रान

अनुवादक

मुग़नी अमरोहवी

प्रकाशक

नारायणदत्त सहगल एण्ड संज़

दरीबा कलाँ, दिल्ली ।

उस मज़दूर के नाम

जो

पसीने के ठंडे क़तरों और आँसुओं
की गरम बूँदों से अत्याचारी
पूँजीपतियों के लिए
मुस्कराहटों का सामान
प्रस्तुत करता है।

●

अनुक्रमणिका

प्रकृति के राग

प्रस्तावना

मैं अपने दिल के गम लोगों की खुशियों से नहीं बदलता। मै नहीं चाहता कि मेरे वह आँसू जो लिखते समय मेरी आँखों से लगातार बहते है, हँसी में बदल जायें। मैं तो चाहता हूँ कि मेरा जीवन—आँसू और मुस्कराहट—मुस्कराहट और आँसू ही रहे।

आँसू—जो मेरे दिल को प्रकाशित करदें—मुझे जीवन के भेद और उसकी सूक्ष्मताओं से परिचित करादें।

मुस्कराहट—जो मुझे इंसानों के निकट ले जाये और जिसमें खुदा की प्रशंसा की तरफ़ संकेत हो।

आँसू—जिनके द्वारा मुझे टूटे हुए दिलों से सहानुभूति हो।

मुस्कराहट—जिससे लोगों को मेरी खुशी और हर्ष का पता चले।

मैं तो चाहता हूँ कि मै किसी की अभिलाषा में जान दे दूँ। लेकिन मुझे यह पसन्द नहीं कि दुखी जीवन व्यतीत करूँ।

(मैने गौर किया और देखा तो वही लोग अभागे दिखाई दिये जो किसी को नहीं चाहते और फिर भी दुनिया से चिमटे रहते हैं।)

मैंने कान लगाकर सुना तो किसी को चाहने वाले—किसी की तमन्ना दिल में लिये हुए इंसान की आहें मुझे गाने के सुरों से अधिक मीठी लगीं। इसलिये मैं चाहता हूँ कि मेरे दिल के हर कोने में सौन्दर्य और प्रेम के लिये एक तड़प हो।

संध्या होती है तो कली अपने पत्तों को समेट लेती है—अपने शौक़ से गले मिलकर सो जाती है।

सवेरा होता है तो सूर्य की किरणों का चुम्बन लेने के लिये

अपना मुँह खोलती है—कलियों का जीवन भी अभिलाषा और मिलन है।

आँसू और मुस्कराहट—

आकाश में मँडलाते हुए बादलों को देखो—समुद्र का पानी भाप बनकर उठता है। दूर ऊँचाई पर आपस में मिलकर बादलों का रूप धारण कर लेता है। वादियों और घाटियों पर खुशी-खुशी उड़ता फिरता है। खेतों की ओर रोते हुए गिरता है। नालियों में बहकर फिर अपने देश—समुद्र में जा मिलता है।

बादलों का जीवन—प्रतीक्षा और मिलन

आँसू और मुस्कराहट—

बिल्कुल इसी तरह आत्मा अविनश्वर जगत से इस संसार में आती है। बादलों की तरह ग़म के पहाड़ों और खुशी की घाटियों पर उड़ती फिरती है—और एक दिन मौत की ठण्डी हवाओं से जा टकराती है और जहाँ से आई थी वहीं चली जाती है—प्रेम और सौन्दर्य के समुद्र की ओर—अल्लाह की तरफ़।

—जिब्रान

*** प्रेम का जीवन

वसन्त—

उठो, मेरी प्रेमिका, घाटियों में चलें।

बर्फ़ पिघल गई, जिन्दगी जाग उठी और वादियों में निकल आई।

मेरे साथ चलो ताकि दूर खेतों में वसन्त के पद-चिह्नों पर चलें—आओ, टीलों पर चढ़कर उसके आसपास के खेतों की हरियाली का आनन्द लें।

वसन्त की सुबह ने वह चादर फिर फैलादी है जो जाड़े की लम्बी रातों ने समेट ली थी। सेब और अनार के वृक्ष वसन्त की चादर ओढ़कर शबे बरात की दुल्हन दिखाई देते हैं।

अंगूर की बेलें सजग हो गईं और प्रेमियों की तरह एक दूसरे से गले मिलने लगीं।

नदियाँ घाटियों में हर्ष के गीत गा-गाकर नाचने लगीं।

कलियाँ डालियों से ऐसे फूट पड़ीं जैसे समुद्र की सतह पर झाग।

आओ! नरगिस की प्यालियों से वर्षा के बचे हुए आँसू पी लें।

आनन्द-मग्न चिड़ियों के गीतों से अपना मन भरलें—

और प्रातः समीर में मिली हुई सुगन्धों पर डाका डालें।

आओ! उस घाटी के पास बैठकर प्रेम के चुम्बन लें जहाँ बनफ़शा का फूल छिपा बैठा है।

गर्मी—

उठो ! मेरी प्रेयसी ! खेतों में चलें।

सूरज की स्वाभाविक मुहब्बत से खेती पक गई और उसके काटने का समय आ गया।

जल्दी आओ ! ऐसा न हो कि पक्षी हमसे पहले पहुँच जायें—चींटियाँ पहल करदें और हमारी धरती पर अधिकार जमालें।

उठो ! धरती के फल इस तरह तोड़ें जैसे आत्माएँ वफ़ा के बोये हुए बीज से भलाई का वह फल तोड़ चुकी हैं जिसको मुहब्बत ने हमारे दिल की गहराइयों में बोया और मूल तत्त्वों की पैदावार से अपने ख़ज़ाने वैसे ही भर दें जैसे ज़िन्दगी ने हमारे मन की दुनिया को भरपूर कर लिया।

चलो, प्रेयसि ! हरी-हरी घास के बिछौने पर लेटकर, नीले आकाश का लिहाफ़ ओढ़कर नरम घास के तिनकों पर सिर रखकर सारे दिन की थकन दूर करलें और वादी के कबूतरों की सरगोशियों को कान लगाकर सुनें।

पतझड़—

उठो मेरी प्रियतमा ! बाग़ को चलें, अंगूर का रस निकालें और सूखे मेवे जमा करलें, कोमल कलियाँ निचोड़ें और आँखों के अवलोकन से एक क़दम आगे बढ़कर दृश्य पर हाथ मारने का आनन्द उठायें।

आओ ! बस्ती की ओर चलें। वृक्षों के पत्ते सूखकर पीले पड़ गये। हेमन्त समीर ने उनको बिखेर दिया। वह चाहती है कि गर्मी की खिली हुई कलियों के लिये उन पत्तों का कफ़न तैयार करके पहनाये।

चलो ! पक्षी समुद्र के किनारे की तरफ़ कूच कर गये। उपवन की प्रफुल्लता वे अपने साथ ले गये। कुमुदिनी और चँबेली के चेहरों

पर उपेक्षा बरस रही है और वे अपने बचे हुए आँसू धरती पर गिरा रही हैं।

आओ ! वापस चलें। नदियाँ रुक गईं। आँखों में खुशी के आँसू नहीं हैं। पहाड़ियाँ अपने सौन्दर्य के वस्त्र उतार चुकीं—चलो प्रिये ! तबीअत बेज़ार हो रही है।

सर्दी—

निकट आ ! ओ मेरे जीवन की साथी निकट आ ताकि बर्फ़ की ठण्डी हवायें हमारे शरीरों को अलग न कर सकें। इस अँगीठी के सामने मेरे पहलू में बैठ जा। आग ही तो सर्दी का सबसे प्रिय फल है। मुझे आने वाले जीवन की बातें सुना। ठण्डी हवाओं की साँय-साँय से मेरे कान भारी हो गये हैं। कमरे की सब खिड़कियाँ, सब रौशनदान बन्द करदे। बाहर का भयानक वातावरण और बर्फ़ के नीचे उदास शहर मेरे दिल का खून करते हैं। दिये में तेल डाल। देखती नहीं कि वह बुझने लगा है। उसे अपने पास रखले ताकि मैं उसके उजाले में तेरे चेहरे पर सर्दी की लम्बी रातों का लिखा पढ़ सकूँ। शराब का जाम ला ताकि जी भरकर पीलें और बहार की याद ताज़ा करें।

मेरे निकट आ ! मेरी जान आग बुझ चुकी। राख उसको अपने सीने में छुपाने लगी। मेरे निकट आ'''आ'''और मुझे अपने सीने से लगाले। दिया भी बुझ गया और रात के अँधेरे ने उसे भी अपनी लपेट में ले लिया है। नींद की ऊँघ से आँखें भारी हो गईं। मुझे अपनी सुरमगीं आँखों से घूरकर देख—इससे पहले कि नींद हमें अपनी गोद में ले ले, तू मेरे सीने से लग जा—मेरा चुम्बन ले—बर्फ़, तेरे चुम्बन के अलावा सारी सृष्टि पर छा चुकी है।

अफ़सोस ! अय मेरी प्यारी ! नींद का समुद्र कितना गहरा और सुबह का उजाला कितनी दूर है इस दुनिया में।

*** दो लाशें

नदी के किनारे, अखरोट के वृक्षों की छाया में एक ग़रीब किसान का लड़का बैठा, बड़ी शान्ति से बहते हुए पानी के मनोरम दृश्य को देखने में लीन है। एक नवयुवक जो खेतों में पला-बढ़ा, जहाँ विश्व की हर वस्तु प्रेम की दुनिया में साँस लेती है—वृक्षों की डालियाँ आपस में गले मिलती हैं, फूलों से लदी डालियाँ एक-दूसरे पर झुकी रहती हैं, पक्षी एक-दूसरे की प्रशंसा के गीत गाते हैं, जहाँ हर स्वभाव आत्मा का रूप होता है।

बीस वर्ष का ग़रीब नवयुवक—जिसकी दृष्टि एक दिन पहले चश्मे के किनारे लड़कियों के झुण्ड में एक नवयुवती कुमारी पर पड़ी और वह उससे प्रेम करने लगा।

फिर जब उसे मालूम हुआ कि वह एक धनी माँ-बाप की बेटी है तो अपने दिल को धिक्कारने लगा। उससे अपनी कामुकता की शिकायत करने लगा। परन्तु धिक्कारने से दिल कहीं प्रेम करने से रुका है! और बुरा-भला कहने से कामुकता एक यथार्थ को कहाँ छोड़ सकती है! इंसान अपने दिल और कामुकता में उस कोमल डाली की तरह है जो चौतरफ़ा चलने वाली हवा के रास्ते में खड़ी हो।

नवयुवक ने सामने देखा तो बनफ़्शा के फूल कमल के फूलों के साथ खिले हुए थे। नवयुवक अपने अकेलेपन पर खूब रोया।

प्रेम की मादकतापूर्ण घड़ियाँ छाया की तरह गुजरती हुई दिखाई दीं। वह अपने आप से कुछ कह रहा था। उसके आँसू उसकी दर्द भरी

आँखों से टपक रहे थे और उसके दिल की उमंगें पानी की तरह बह रही थीं। वह कह रहा था—

"मुहब्बत मेरा मजाक उड़ाती है। मुझे खींचकर वह उस मैदान में लाई जहाँ आशाएँ दुगुण दिखाई देती हैं। जहाँ अभिलाषाएँ आत्मा का स्वरूप है। प्रेम—जिसे मैंने अपना आराध्य बनाया था वह मेरा दिल तो आशाओं के महल में उठाकर ले गया, लेकिन मेरी दुनिया एक ग़रीब किसान की झोंपड़ी तक सीमित रखी और मेरे नफ़्स (मन) को उस सौन्दर्य की चारदीवारी में क़ैद कर दिया जिसके आसपास बड़ी-बड़ी हस्तियाँ मँडराती फिरती है और जिसकी सज्जनता उसे अपनी शरण में लेती है······अच्छा! मुहब्बत! मैं तेरे इशारों पर चलने को तैयार हूँ। बता मैं क्या करूँ? मैं आग के भड़कते हुए शोलों में तेरे पीछे चला और मेरा शरीर झुलस गया। मैंने अपनी आँखें खोलीं तो चारों ओर अंधकार ही अंधकार पाया। मैंने जबान खोलनी चाही तो आह! अफ़सोस के सिवाय मैं कोई बात करने के क़ाबिल नहीं रहा।

"अय मुहब्बत! मै दुर्बल और अशक्त हूँ और तू चतुर और बुद्धि-मान। फिर तू क्यों मेरे मुकाबले पर आती है?

"मैं निर्दोष हूँ और तू न्यायप्रिय—फिर तू क्यों मुझ पर अत्याचार करता है?

"तेरे सिवाय मेरा कोई सहायक नहीं फिर तू क्यों मुझे अपमानित करता है?

"तू ही मेरे अस्तित्व का कारण है फिर क्यों मुझे अकेला छोड़ता है?

"तुझे अनुज्ञा है कि यदि तेरी इच्छा के विरुद्ध मेरी धमनियों में खून दौड़े तो तू उसे धरती पर बहादे।

"यदि तेरे बताये हुए मार्ग के अतिरिक्त मेरे क़दम उठें तो तू उन्हें काट दे।

"मेरे शरीर के साथ तू जो चाहे कर परन्तु मेरे मन को स्वतन्त्र छोड़ दे कि वह तेरी छत्रछाया में उन खेतों में स्वतन्त्र जीवन व्यतीत कर सके।

"छोटी-छोटी नदियाँ अपने प्रियतम—समुद्र की ओर जा रही हैं।

"कलियाँ अपने प्रियतम—सूरज को देखकर मुस्कराती हैं।

"बादल अपने देश—वादी की तरफ़ उतर आते हैं।

"परन्तु न नदियाँ मेरे हाल से परिचित हैं, न कलियाँ मेरी फ़रियाद सुनती हैं और न बादलों को मेरी विपत्तियों का ज्ञान है।

"परन्तु मुहब्बत तूने मुझे अपनी विपत्तियों में निस्सहाय पाया, मुझे अपने प्रेमोन्माद में अकेला देखा और उस प्रियतमा से दूर पाया जो न तो मुझे अपने बाप की फौजों का सिपाही देखना पसन्द करती है और न अपने महल का सेवक ही देख सकती है।"

इतना कहकर नवयुवक रुक गया। कान लगाकर किसी की आवाज सुनने लगा। ऐसा ज्ञात होता था कि वह नदी की कलकल और डालियों एवं पत्तों की सरसराहट से कुछ सीखना चाहता है। थोड़ी देर के बाद फिर बोला—

"अय प्रेयसी! जिसके नाम से डरते हुए मैं उसका नाम जबान पर नहीं ला सकता! अय महानता के पर्दों और आतंक की दीवारों में छुपी हुई प्रेयसी!

"अय स्वर्ग की अप्सरा—जिससे मिलने की आशा मुझे संसार के स्रष्टा के दरबार के अलावा कहीं नहीं हैं—जहाँ समता का राज्य होगा—छोटे-बड़े का भेद-भाव न होगा।

"अय वह कि तेज तलवारें तेरे इशारों पर चलती हैं—विद्रोहियों की गर्दनें तेरे सामने झुकती हैं। घमण्डी सम्राटों के खजाने और एकान्त-वासी आराधकों के पूजा-स्थानों के दरवाजे तेरे लिए चौपट खुले रहते हैं।

"तूने ऐसे दिल पर अधिकार कर लिया है जिसको प्रेम की मदिरा ने पवित्र कर दिया है। ऐसे आत्मा को गुलाम बना लिया है जिसको तेरे स्रष्टा ने मान दिया और ऐसी बुद्धि छीन ली जो कल तक इस हरे-भरे मैदान में स्वतंत्र पक्षियों की तरह हरी-हरी खेती से आनन्दित हो रहा था और आज—प्रेम के हाथों क़ैदी बन गया है।

"अय दुनिया की सबसे सुन्दर औरत! मैंने तुझे देखकर जान लिया कि मेरा संसार में आने का उद्देश्य क्या है? और जब मैंने तेरे उच्च स्थान और अपनी न्यूनता पर दृष्टि डाली तो मुझे मालूम हुआ कि खुदा के भेद ऐसे भी हैं जहाँ इंसान की पहुँच नहीं हो सकती, और कुछ रास्ते ऐसे भी हैं जो इंसान के रास्तों से भिन्न हैं परन्तु मुहब्बत उन पर इंसान ही को खेंचते हुए ले जाती है।

"जब मैंने तेरी हिरनी जैसी आँखें देखीं तो मुझे मालूम हुआ कि जीवन एक स्वर्ग है जिसका दरवाजा इंसानों का दिल है। परन्तु जब अपने और तेरे वर्ग पर दृष्टि डाली तो ज्ञात हुआ कि इस संसार में मेरे रहने के लिये कोई स्थान नहीं है। जब मैंने तुझे तेरी सहेलियों के झुरमुट में पहली बार देखा और यों अनुभव हुआ जैसे फूलों के गुलदस्ते में गुलाब का फूल है तो मुझे भ्रम हुआ कि मेरे स्वप्नों की दुल्हन साकार होकर मेरे सामने आगई है परन्तु जब तेरे कुटुम्ब के उच्च स्थान को देखा तो विश्वास हो गया कि गुलाब के फूल तोड़ने से पहले काँटे उँगलियों को घायल करते हैं और स्वप्न की सुन्दर दुनिया को जाग्रत अवस्था का एक क्षण नष्ट-भ्रष्ट कर देता है।"

इतना कहकर नवयुवक चश्मे की ओर चला। उसके शरीर के अंग-प्रत्यंग जवाब दे चुके थे। उसका दिल टूट चुका था और वह दुख और निराशा की मूर्ति बना हुआ था। थोड़ी देर के बाद उसने फिर कहना शुरू किया—

"अय मृत्यु की देवी! आ और मुझे इस दुख भरे जीवन से मुक्ति

दिलादे। वह धरती, जिसके काँटे उसकी कलियों का ख़ून करते हैं, रहने के योग्य नहीं।

"जल्दी आ और मुझे अपनी गोद में ले ले ताकि मैं अपनी आँखों से वह दिन न देखने पाऊँ जब मुहब्बत की जगह धार्मिक गान शासन करे।

"अय मौत मुझे जिन्दगी की क़ैद से छुड़ा दे। इस दुनिया में दो दोस्तों के मिलने से अविनश्वर संसार में उनका मिलना ज्यादा अच्छा है। मैं अविनश्वर जीवन ही में अपनी प्रेयसी की प्रतीक्षा करूँगा और वहीं उससे मिलूँगा।"

नवयुवक चश्मे के किनारे पहुँचा। शाम हो चुकी थी। सूर्य देवता अपनी सुनहरी चादर हरे और लहलहाते हुए खेतों पर से समेटने लगे थे। वह वहाँ बैठकर उसी घास पर अपने आँसू बहाने लगा जिसको थोड़ी देर पहले उसकी प्रेमिका—वह धनी लड़की अपने पैरों तले रौंद चुकी थी। उसका सर सीने की तरफ़ झुका हुआ थी मालूम होता था मानों वह अपने दिल को बाहर निकलने से रोक रहा है।

इसी समय अखरोट के वृक्षों की ओट से एक नवयुवती नाज से अपना दामन हरी-हरी घास पर घसीटती हुई प्रकट हुई और आकर नवयुबक के पास खड़ी हो गई। अपना कोमल हाथ उसके सर पर रखा। नवयुवक ने उसकी ओर उस व्यक्ति की तरह देखा जिसे सूरज की किरणों ने सोते से जगा दिया हो। नजरें उठाते ही अपनी प्रेमिका—उसी धनवान की लड़की को अपनी आँखों के सामने पाया। मूसा की तरह जब उसने तूर पर खुदा का जल्वा अपने सामने चमकता हुआ पाया तो घुटनों पर झुक गया। भय, सौन्दर्य के आतंक और हर्ष के कारण उसकी जबान बन्द रही परन्तु आँखों ने, जिनसे लगातार अश्रु बह रहे थे, दिल का सारा हाल कह सुनाया।

नवयुवती ने उसे गले लगाया। उसके होंटों का चुम्बन लिया।

उसकी आँखों पर मुँह रखकर उसके गरम-गरम आँसुओं को पिया और वंशी से भी मधुर आवाज़ में उससे कहने लगी—

"मेरे प्रियतम! मैंने तुझे अपने स्वप्नों की दुनिया में देखा। मैंने तेरा अनुध्यान उस समय अपने सामने रखा जब सारी दुनिया नींद की गोद में मस्त पड़ी हुई थी। तू मेरा वह साथी है जिसकी मुझे तलाश थी और मेरे सौन्दर्य का वह अधिकारी है जिसको मुझसे उस समय अलग किया गया था जब मुझे इस दुनिया में भेजा जाने लगा था।

"मेरे प्रियतम! मैं छुपकर केवल इसलिये आई हूँ कि तुझसे मिलूँ"। मेरा प्रयत्न सफल हुआ। और देख, इस समय मेरी कोमल बाहें तेरे गले का हार हैं।

"दुखी न हो! किसी दूर की बस्ती में—जीवन और मृत्यु का जाम एक साथ पीने के लिये मैं अपने बाप के उच्च व्यक्तित्व को छोड़-कर आई हूँ।

"मेरे प्रियतम! आओ, इंसानों की इस बस्ती से दूर एक नई दुनिया बसायें।"

दोनों प्रेमी—दोनों आशिक़ चल पड़े। रात का अंधकार दोनों को दुनिया की नजरों से छुपा रहा था। रात की भयानकता से निडर वे चले जा रहे थे।

कुछ दिनों के बाद धनी व्यक्ति के जासूस ने शहर से दूर दो लाशें देखीं। एक के गले में सोने का हार था। पास ही पत्थर की एक शिला पर लिखा था—

"हमें मुहब्बत ने मार दिया है। कौन है जो हमें अलग कर सके! मौत ने हमें अपनी गोद में जगह दे दी है। कौन है जो हमें वापस ला सके!"

*** मुर्दों की बस्ती में

कल शहर के कोलाहल से तंग आकर, हरे-भरे खेतों के शान्तिमय वातावरण से गुज़रकर बस्ती से बाहर ऊँचे-ऊंचे टीलों पर गया। प्रकृति के सर्वोत्तम वस्त्र—हरी घास से वह ढके हुए थे। टीले पर चढ़कर मैंने शहर पर एक दृष्टि डाली। उसके ऊँचे-ऊँचे महल और भव्य इमारतें कारखानों के काले धुएँ के पीछे, जो काली-काली घटाओं की तरह आकाश में घूम रहा था—आँखों से ओझल हो गये थे।

मैं इस शान्त वातावरण में बैठकर मानव, उसके जीवन और उसकी कार्य-कुशलता पर विचार करने लगा। परिश्रम और कष्ट के अलावा कोई चीज नज़र न आई। मैंने अपनी कल्पना को दूसरी तरफ़ मोड़ दिया और निश्चय कर लिया कि इस मनोरम वातावरण को मानवी कर्मों के दुखप्रद अनुध्यान से मलिन न करूँगा।

मैंने हरे-भरे खेतों को देखा। वह अपनी मृदुलता और हरे-भरे-पन से खुदाई तख्त मालूम हो रहे थे। खेतों के बीच में मेरी दृष्टि एक क़ब्रस्तान पर पड़ी जिस में सर्ज के वृक्षों से घिरी हुई क़ब्रें सामने दिखाई दे रही थीं।

मैं उस स्थान पर था जिसके एक ओर जीवितों का नगर अपने ऊँचे प्रासादों और कोलाहलपूर्ण वातावरण के साथ मेरे सामने था। दूसरी ओर मुर्दों का शहर नीरवता की मूर्ति बना खड़ा था। इन दोनों

बस्तियों के बीच टीले पर बैठकर मैं दोनों के हालात पर विचार करने लगा—

एक—जीवित इंसानों की बस्ती—जहाँ लगातार दौड़-धूप और कभी न खत्म होने वाली हरकत—और दूसरी ओर—मुर्दा लाशों की बस्ती—शान्त वातावरण और कभी आन्दोलित न होने वाली—मैं सोचने लगा—एक ओर जीवितों की बस्ती—आशा और निराशा की दुनिया—प्रेम और द्वेष की दुनिया—पूँजीपतियों और मजदूरों की दुनिया—मानने वालों और इन्कार करने वालों की दुनिया है।

दूसरी ओर—मुर्दा लाशों की बस्ती—नितांत—हर तरफ़ मिट्टी के तोदों पर तोदे दिखाई दिये—रात के सन्नाटे में मिट्टी के इस तोदे को चाक करके पौधा अपना सर निकालता है जहाँ किसी प्राणी की आवाज़ वातावरण को मलिन नहीं करती।

मैं अपने विचारों में लीन था—दोनों बस्तियों की स्थिति पर विचार कर रहा था कि अचानक मेरे कानों में बाजों की आवाज पड़ी और आँखों ने देखा कि जीवित इंसानों की एक भीड़ चली आ रही है। उसके आगे-आगे शोक और दुख का बैण्ड बज रहा है। वातावरण ग़मनाक आवाज़ों से भरा जा रहा है। जीवित इंसानों का एक समूह है जिनके चेहरों से महानता और गम्भीरता टपक रही है और जिसमें विभिन्न रंगों के चेहरे हैं—यह एक धनाढ्य व्यक्ति का जनाज़ा था—एक मुर्दा लाश जिसके पीछे-पीछे जीवितों का समूह था—रोता हुआ—चीखता-चिल्लाता हुआ।

जीवित इंसानों का यह जनसमूह जनाज़ागाह पहुँचा। पादरी एकत्रित होकर जनाज़ा पढ़ने और सुगन्धों की धूनी देने लगे। बैण्ड बजाने वालों की टुकड़ी एक ओर को हटकर ग़म का बैण्ड बजाने लगी। थोड़ी देर में उन महान् व्यक्तियों की टुकड़ी आगे बढ़ी और मँजी हुई भाषा तथा चुने हुए शब्दों में अपने जोरदार भाषणों से मरने वाले

की प्रशंसा की। फिर कविगण आगे बढ़े और मरने वाले की शान में लम्बे-लम्बे मरसिये पढ़े गये।

मुर्दे को दफ़न करने के बाद ये लोग एक ऐसी क़ब्र छोड़ गये जिसकी तैयारी में कब्र बनाने वालों और चित्रकारों ने अपनी कला को चरमसीमा पर पहुँचा दिया था।

मैं दूर से यह सारा दृश्य देखता रहा। जुलूस शान्तिपूर्वक शहर की तरफ़ लौटा। सूरज धीरे-धीरे अपनी मंजिल की तरफ़ लौटने लगा। प्रकाश विलीन होने लगा और दुनिया पर अंधकार छाने लगा।

इस झुटपुटे में दूर से दो व्यक्ति आते हुए दिखाई दिये। उनके कंधों पर लकड़ी का बना हुआ एक ताबूत था। उनके पीछे कंधे पर एक दूध पीता बच्चा उठाये, मैले और फटे-पुराने कपड़े पहने एक औरत सर झुकाये चली आ रही थी। और उसके पैरों में एक कुत्ता जो कभी औरत की तरफ़ ललचाई हुई नजरों से देखता था और कभी ताबूत पर अपनी दृष्टि गाड़ देता था। एक ग़रीब का ताबूत—जिसके पीछे उसकी पत्नी शोक और व्यथा के आँसू बहाती हुई—एक बच्चा जो माँ की आँखों में आँसू देखकर रो रहा था और एक वफ़ादार कुत्ता जो विधवा ही की तरह ग़म से निढाल होते हुए भी चल रहा था—

ये लोग क़ब्रस्तान पहुँचे। रंगीन और चित्रित क़ब्रों से दूर—क़ब्रस्तान के एक कोने में—एक खड्डे में लाश को दफ़न कर दिया और चुप्पी साधे हुए वापस लौट गये। कुत्ता अपने मालिक की अन्तिम विश्रामगाह की तरफ़ बार-बार देख रहा था।

मेरे देखते-देखते ये लोग वृक्षों के पीछे ग़ायब होगये। ये दोनों दृश्य देखकर मैंने जीवित इंसानों के शहर की तरफ़ देखा और दिल में कहा—

"यह भी शक्तिशाली सरमायादारों का शहर है।"

फिर मुर्दा लाशों की दुनिया की तरफ़ देखा और कहा—"यह भी शक्तिशाली सरमायादारों की दुनिया है।

"अय ख़ुदा—अत्याचार सहन करने वाले मजदूरों की दुनिया कौनसी है ?"

अचानक मेरी दृष्टि आकाश में उड़ते हुए बादलों पर पड़ी जिनके किनारे सूरज की किरणों से लाल होकर चमक रहे थे। दिल ने मुझे पुकारा—यह है ग़रीब मजदूरों की दुनिया।

*** कवि की मृत्यु ही उसका जीवन है

रात के अंधकार ने शहर की आबादी पर अपनी काली चादर फैला दी। बर्फ़ ने उसे अपने सफ़ेद वस्त्र पहनाये। बसने वाले सर्दी के भय से अपने-अपने महलों, मकानों और झोंपड़ियों में घुस गये। ठण्डी हवायें मकानों से टकराकर एक आवाज पैदा करने लगीं जैसे क़ब्रों की नीरव बस्ती में कोई शोकालाप करने वाला मौत का मर्सिया पढ़ रहा हो।

शहर के किनारे—आबादी से जरा हटकर—एक पुराना मकान था। मकान की दीवारें जीर्ण-जीर्ण हो चुकी थीं और छत बर्फ़ के बोझ से दबी जा रही थी।

मकान के एक कोने में—फटे-पुराने बिस्तर पर लेटा हुआ एक नवयुवक सामने जलते हुए दिये को टकटकी बाँधकर देख रहा है जो रात के भयानक अंधकार पर विजय पाने का प्रयत्न कर रहा था। नवयुवक, जिसकी आयु अपनी बहार की मंजिलें तय कर रही थी—जान गया था कि जीवन की कष्टदायक घड़ियों से मुक्ति मिलने का समय निकट है। वह मृत्यु की प्रतीक्षा में पड़ा था। उसके पीले चेहरे पर आशा की झलक दिखाई दे रही थी। उसके होंटों पर दुखी मुस्कराहट के लक्षण थे—एक कवि—जिसकी सृष्टि का उद्देश्य यह था कि अपनी कविताओं से मानव-हृदय को प्रफुल्ल करदे—पूँजीपति इंसानों की दुनिया में भूक से मर रहा था। एक पवित्र आत्मा जो खुदा की तमाम नेमतों को छोड़कर आया था कि लोगों का जीवन का राज समझावे

—उनकी दुनिया इस हालत में छोड़ रहा था कि मानवता के होंटों पर अभी मुस्कराहट के लक्षण भी नहीं थे। मृत्यु और जीवन के संघर्ष का सामना करने वाला एक इंसान ऐसी स्थिति में अपनी जान दे रहा था कि उसके सामने उसके एकाकी जीवन के साथी एक दिये और काग़ज़ के कुछ टुकड़ों के अतिरिक्त, जिन पर उसके पवित्र विचार अंकित थे—कुछ न था।

नवयुवक ने अपनी शक्तियों को, जो जवाब दे रही थीं—एकत्रित किया। अपने हाथ ऊपर को उठाये और अपनी पलकों को यों गति दी मानों वह चाहता है कि अन्तिम समय में उस पुरानी छत को फाड़कर बादलों से परे सितारों की दुनिया पर दृष्टि डाले। फिर कहने लगा—

"अय मौत! आ, मैं तुझे दिल से चाहता हूँ। मेरे निकट आ और इस भौतिक दुनिया की जंजीरों को तोड़कर रखदे। मैं इनको उठाते-उठाते तंग आ गया हूँ। अय मधुर मौत! आ और मुझे इंसानों की इस बस्ती से उठाले। ये मेरे साथ सिर्फ इसलिये अपरिचितों का सा व्यवहार करते हैं क्योंकि मैं फरिश्तों की जबान से दूसरी दुनियाँ की सुनी हुई कहानियाँ इनकी भाषा में इनको सुनाता हूँ। मौत, मेरे पास जल्दी आ। इंसान मुझे अकेला छोड़ गये। ये मुझे केवल इसलिये भूल गये कि मैं इनकी तरह सम्पत्ति एकत्रित करने का लोलुप नहीं था और कमजोरों का शोषण करने से घृणा करता था।'''अय मधुर मौत आ और मुझे उठाले। इस संसार के रहने वालों को मेरी आवश्यकता नहीं। मुहब्बत से मुझे अपने सीने के साथ लगाले। मेरे होंटों को चुम्बन दे, जिन्होंने कभी माँ के चुम्बन का आनन्द नहीं उठाया—बहन के गालों का चुम्बन नहीं लिया और न किसी प्रेयसी के श्वेत दाँतों को इन्होंने छुआ। अय मेरी प्यारी मौत! शीघ्रता कर और मुझे गले लगाले।"

मृत्यु-शैया पर पड़े हुए नवयुक के बिस्तर के पास—एक सुन्दर स्त्री की कल्पना आई जो बर्फ़ से ज्यादा श्वेत कपड़े पहिने हुए थी और जिसके हाथों में स्वर्ग के हरे पत्तों से तैयार किया हुआ मुकुट था। स्त्री नवयुवक के पास आई, उसे गले लगाया, उसकी आँखों को बन्द कर लिया ताकि वह दिल की आँखों से उसे देखे—मुहब्बत से उसके होंट चूमे—एक चुम्बन जिसने नवयुवक के होंटों पर मुस्कराहट के चिह्न छोड़ दिये।

घर खाली हो गया। केवल मिट्टी का ढेर रह गया या कागज के पन्ने जो अन्धकार के कोनों में बिखरे पड़े थे।

समय गुजरता रहा। इस बस्ती के लोग अपनी बदमस्तियों और मदहोशियों में बेहोश पड़े रहे। जब वे होश में आये और आँखों से मस्ती का नशा जाता रहा तो—एक दिन—शहर के मध्य में—सार्वजनिक पार्क में—कवि की प्रतिमा स्थापित कर दी गई और उसका वार्षिक उत्सव मनाने लगे।

"आह! इंसान कितना मूर्ख है!

*** एक स्वप्न

खेत के बीच में एक स्वच्छ नहर के किनारे एक सुन्दर पींजरा पड़ा नज़र आया। पिंजरे के एक कोने में मरी हुई चिड़िया पड़ी थी और दूसरे कोने में दो प्यालियाँ पड़ी थीं जिनका दाना और पानी समाप्त हो चुका था।

मैं ख़ामोश खड़ा रहा। निश्प्राण पक्षी की आत्मा और नहर की आवाज में एक शिक्षा थी जो मेरे अन्तःकरण से सम्बोधित थी और मेरे दिल से कुछ कह रही थी। मैं सोचने लगा कि यह बिचारा पक्षी नहर के किनारे होते हुए प्यास से मर गया और खेतों के बीच पड़े रहने के बावजूद—जहाँ से संसार को अन्न बँटता है—वह भूख से व्याकुल हो गया। बिलकुल उसी तरह जैसे किसी सरमायादार को उसके सोने-चाँदी के खज़ाने में बन्द कर दिया जाय और वह अनन्त सम्पत्ति के बीच भूख और प्यास से तड़प-तड़पकर मर जाय।

थोड़ी देर में मैं क्या देखता हूँ कि वह पिंजरा अचानक एक इंसान के रूप में परिवर्तित हो गया और उस पक्षी ने उसके हृदय का रूप धारण कर लिया जिसमें एक गहरा घाव था और उससे लाल-लाल रक्त बह रहा था। घाव के किनारे दुखी औरत के होंटों की तरह दिखाई दे रहे थे।

घाव से खून की बूँदों के साथ-साथ एक आवाज निकलती हुई सुनाई दी जो कह रहा था—"मैं वही इंसानी दिल हूँ जो इस भौतिक दुनिया का क़ैदी बना रहा और उस मिट्टी के पुतले—इंसान—के बनाये

हुए क़ानून से क़त्ल कर दिया गया। सौन्दर्य की खेती के बीच, जिन्दगी के चश्मों के किनारे मुझे इंसानी क़ानून के पिंजरे में गिरफ़्तार कर लिया गया। मैं मुहब्बत की गोद में—खुदा की पैदा की हुई धरती पर लाचार होकर मर गया। इसलिये कि इस धरती के फलों और मुहब्बत के सुन्दर परिणाम से मुझे वंचित कर दिया गया। जो मैं चाहूँ वह इंसान की परिभाषा में लज्जा और जिसकी मैं इच्छा रखूँ वह उनके फैसले के अनुसार अपमान गिना जाता है।

"मैं मानव-हृदय हूँ। संसार के अन्धकार में फँसकर निर्जीव हो गया। निरर्थक भ्रमों का क़ैदी बनकर विवश हो गया। प्रसिद्धि के पथ-भ्रष्ट मार्ग पर चलकर मेरी चेतना जाती रही—और अब भी इंसान की ज़बान गूँगी है, उसकी आँखें आँसू नहीं बहातीं बल्कि मुस्कराती हैं।"

मैंने ये बातें घायल दिल से बहते हुए खून के साथ निकलती हुई सुनीं। और इसके बाद न तो मैंने वहाँ कुछ देखा न कोई आवाज़ ही सुनी। मुझ पर अपनी वास्तविकता प्रकट हो गई।

*** सौन्दर्य

"सौन्दर्य ही दार्शनिकों का धर्म है"—एक हिन्दुस्तानी कवि

अय बिखरे हुए धर्मों के रास्तों में भटकने वालो! और प्रतिकूल मतों की दीवारों में उद्विग्न फिरने वालो! स्वीकृति और अनुमति के बन्धनों पर खुदा के इन्कार की स्वतन्त्रता को प्रधानता देने वालो! और किसी मार्ग-दर्शक के पीछे से—"कोई नहीं" की रट लगाने वालो!—आओ और सौन्दर्य के धर्म पर ईमान लाओ और उसे खुदा समझकर उससे डरो। खुदा की सारी सृष्टि में उसका सौन्दर्य प्रकाशमान है और तुम्हारे सारे ज्ञान का स्रोत यही सौन्दर्य है। उन लोगों को छोड़ो जो धर्म को बेकारी का मदशाला समझते हैं और धन की लोलुपता तथा जीवन के भोग-विलास में दिन-रात खोये रहते है। सौन्दर्य की खुदाई पर ईमान लाओ। तुम सौन्दर्य को देखकर ही जीवन से प्यार करते हो और उसी तरह नेकी से मुहब्बत की तरफ़ ध्यान दो। वह औरत की सीढ़ी से तुम्हें अक्ल का आईना दिखादेगा और तुम्हारी विद्रोही आत्माओं में जीवन के जौहर भर देगा।

और अय बेकार बातों के गहन अंधकार में अपनी आयु गँवाने वालो! और व्यर्थ की कल्पनाओं में लीन रहने वालो! सौन्दर्य तुम्हें ऐसे यथार्थ का मार्ग दिखायेगा जो तुम्हारी शंकाओं को दूर कर देगा। वह ऐसा प्रकाश है जो असत्य के अंधकारों में तुम्हारा मार्ग-प्रदर्शन करेगा। देखो, वसन्त के आगमन और सूर्योदय पर विचार करो—सौन्दर्य सोचने वालों ही के हिस्से में है—पक्षियों के गीत—कलियों

की आवाज और नदी के कोलाहल को कान लगाकर सुनो—सौन्दर्य सुनने वालों ही के भाग्य में है। बच्चे की निश्चिन्तता, जवान के दिल, यौवन की शक्ति और बूढ़ों की बुद्धि को देखो—सौन्दर्य देखने वालों को सम्मान की दृष्टि से देखता है।

नरगिसी आँखों की—गुलाब के फूल की तरह गालों की—और कली के समान मुँह की प्रशंसा के गीत गाओ। सौन्दर्य ऐसे गीत गाने वालों का आदर करता है।

सर्वक़द प्रेमिका की रात की तरह काली ज़ुल्फ़ों की और हाथी-दाँत जैसी श्वेत गर्दन की तारीफ़ करो। सौन्दर्य ऐसे तारीफ़ करने वालों के साथ फिरता है।

सुन्दर प्रतिमा को सामने बिठाकर उसकी आराधना करो। दिल को प्रेम की बालिवेदी पर चढ़ादो। सौन्दर्य ऐसे आराधकों का अच्छा बदला देता है।

अय सौन्दर्य के सूत्रों को पढ़ने वाले लोगो! खुश हो जाओ, ग़म न खाओ। न तुम्हें कोई भय है न तुम्हे उदास होना चाहिये।

*** आग के शब्द

मेरी क़ब्र के पत्थर पर यह लेख खुदवादो —

"यह उस व्यक्ति की सड़ी हुई हड्डियाँ हैं जिसका नाम पानी की सतह पर लिखा गया।"

—जॉन कीट्स

क्या हमारी रातें ऐसी ही गुज़रेंगी ? क्या इसी तरह हम ज़माने के पैरों में रौंदे जायेंगे ? क्या इसी तरह समय हमें अपनी लपेट में लेगा और स्याही की जगह पानी से लिखे हुए नाम के सिवा हमारी कोई यादगार बाक़ी नहीं रहेगी ?

क्या यह प्रकाश विलीन हो जायगा ? यह मुहब्बत खत्म हो जायगी और हमारी अभिलाषाएँ मिट जायेंगी ?

क्या मृत्यु हमारी आशाओं के महल गिरा देगी ? हमारी बातें हवा में उड़ जायेंगी और मौत की छाया हमारे कर्मों पर पड़ जायेगी ?

क्या यही जीवन है ? क्या जीवन—भूत जो गुजर गया और उसके निशान मिट गये—वर्तमान जो तीव्र गति से भूत के साथ मिलने का प्रयत्न कर रहा है और—भविष्य, जिसका कोई अर्थ नहीं—मगर वर्तमान है या भूत—के सम्मिश्रण ही का नाम है ?

क्या हमारी खुशियाँ और ग़म यों ही बीत जायेंगे और हमें उनके परिणाम तक का ज्ञान न होगा ?

क्या इंसान उस झाग की तरह ही रहेगा जो थोड़ी देर तक पानी की सतह पर फिरता है । हवा आती है और उसे नष्ट-भ्रष्ट कर देती है ?

नहीं, मुझे अपनी जिन्दगी की क़सम । जिन्दगी की वास्तविकता को पाना ही ज़िन्दगी है। ऐसी ज़िन्दगी जिसका आरम्भ माँ के पेट से नहीं और जिसका अन्त अंधेरी क़ब्र में नहीं । ज़िन्दगी के ये चन्द साल शाश्वत जीवन की एक घड़ी के बराबर भी नहीं । दुनिया का यह चार दिन का जीवन अपने सारे उपकरण के साथ—एक स्वप्न है—उस चेतना से पहले जिसे हम मौत के नाम से पुकारते हैं और उससे डरते रहते हैं । एक ऐसा स्वप्न जिसमें किये हुए सब कर्म खुदा—सौन्दर्य—की आज्ञा से बाक़ी रहेंगे ।

·········हर उस मुस्कराहट को जो हमारे होंटों पर खेलती है—और हर उस ठण्डी आह को जो हमारे दिल की गहराइयों से निकलती है और प्रेम के हर चुम्बन से जो आवाज़ निकलती है फ़रिश्ते ग़म से निकले हुए आँसुओं की एक-एक बूँद गिनते रहते हैं। और हमारी ज़बान से खुशी के वक़्त निकलता हुआ हर गीत हमारी आत्मा के कानों तक पहुँचता रहता है ।

वहाँ—आने वाले जीवन में हम अपनी ज़बान से निकले हुए गीत अपने कानों से सुनेंगे और अपने दिल की खुशियाँ अपनी आँखों से देखेंगे । वहाँ हम पर उस खुदा की खुदाई की वास्तविकता प्रकट हो जायेगी, जिससे हम निराशा की घटाओं में घिरकर यहाँ इन्कार करते हैं ।

वह दुराचारिता जिसे आज दुर्बलता के नाम से पुकारा जाता है—कल उस ज़ंजीर की तरह होगी जिसका अस्तित्व इंसान के जीवन का सिलसिला पूर्ण करने के लिये आवश्यक होगा ।

यह परिश्रम जिसका बदला आज हमें नहीं मिल रहा है, वह हमारे दूसरे जीवन में हमारे साथ उठकर हमारा मान बढ़ायेगा । और वे

विपत्तियाँ जो आज हम झेल रहे हैं—कल हमारे सर गर्व का मुकुट बनकर चमकेंगी।

याद रखो ! यदि पश्चिम की उस बुलबुल—कीट्स—को मालूम होता कि उसके शेर इंसानों के दिलों में सौन्दर्य-प्रेम का भाव सदैव पैदा करते रहेंगे तो वह कहता—

मेरी क़ब्र के पत्थर पर खुदवादो—

"यहाँ उस इंसान की हड्डियाँ दफ़न हैं जिसका नाम आकाश में आग के अक्षरों से लिखा गया है।"

*** उजड़े दयार में

चाँद ने संसार पर अपनी स्वच्छ चाँदनी की चादर फैलादी और चारों ओर नीरवता छा गई। वह उजड़ी हुई बस्ती एक भयानक देव की तरह दिखाई देने लगी जो रात के अंधकार के हमलों पर हँसता हो।

उस समय मेरी कल्पना में समुद्र की नीली सतह से उठती हुई भाप की तरह दो काल्पनिक चित्र उत्पन्न हुए और एक ऊँची मीनार पर जाकर बैठ गये।

थोड़ी देर में एक ने सर उठाया और दूर के पहाड़ से टकराकर लौटने वाली आवाज़ के समान बोला—

प्रिये! ये उन बस्तियों के मिटे हुए चिह्न हैं जो मैंने तेरे लिये बसाईं और यह उस आलीशान महल के खण्डहर हैं जो मैंने तेरी ख़ुशी के लिये खड़ा किया। अब ये इमारतें गिर गई हैं और महल ढह गया है। इनकी शान ख़ाक में मिल गई। केवल एक निशान बाक़ी है जो आने वाली पीढ़ियों को अपनी महानता का विश्वास दिलायेगा और वह भग्नावशेष बाक़ी है जिनको देखते हुए लोग इस स्थान को सम्मान की नजरों से देखेंगे। मेरी प्यारी! ध्यान दो। दुनिया के मूल तत्त्व इस मजबूत शहर पर भी छा गये। ज़माने की गर्दिश ने मेरी बुद्धिमानी को भी घृणा की दृष्टि से देखा। जिस शहर को मैंने आबाद किया था वह बरबाद हो गया। अब मेरे पास उस मुहब्बत के सिवा—जिसका स्रष्टा तेरा सौन्दर्य है और सौन्दर्य के परिणाम के अलावा

जिसको तेरी मुहब्बत ने जीवन प्रदान किया—और कुछ भी नहीं।

मैंने यरुशलम में एक आराधनाघर की बुनियाद डाली। मसीही पादरियों ने उसका सम्मान किया, लेकिन ज़माने के निष्ठुर हाथों ने उसे बाक़ी न रहने दिया। और मैंने अपनी पसलियों में मुहब्बत के लिये एक छोटा सा घर बसाया। खुदा ने उसे सम्मान दिया। उस पर ज़माने की तेज हवाओं का कोई असर नहीं।

मैंने प्रत्यक्ष वस्तुओं और भौतिक कामों की वास्तविकता मालूम करते-करते अपनी उमर गुजारदी। इंसान ने कहा-- "कितना शक्तिशाली शासक है।" फ़रिश्तों ने कहा—"कितना नादान है।"

फिर मैंने—प्यारी! तुझे देखा, तेरी मुहब्बत के गीत गाये। फ़रिश्ते सुनकर खुश हुए परन्तु इंसान अपनी बेहोशी की नींद में सोता रहा।

मेरे शासन के दिन -मेरे प्यासे प्राण और मेरी आकाश में बसने वाली आत्मा के बीच पर्दे की तरह बाधक थे। जब मैंने तुझे देखा—मुहब्बत जाग उठी—पर्दे हट गये। बीते हुए दिनों पर हाथ मलने लगा और चांद सूरज की रोशनी में रहने वाली हर चीज़ को बेकार समझने लगा।

मैंने मजबूत कवच और टिकाऊ ढालें तैयार कराईं और सारे इंसान मुझसे डरने लगे। लेकिन जब मुहब्बत की आग मेरे सीने में भड़क उठी तो मैं अपने क़बीले की नजरों में भी गिर गया! मौत ने आकर इन तमाम हथियारों को मिट्टी में दबाकर केवल मेरी मुहब्बत को खुदा के दरबार में पेश किया।

थोड़ी सी खामोशी के बाद दूसरी काल्पनिक तस्वीर ने कहा—"जिस तरह कली अपना जीवन और सुगन्ध मिट्टी से प्राप्त करती है

उसी तरह शक्ति और दर्शन आत्मा को भौतिक कमजोरियों और उसकी गलतियों से बचाता है।"

फिर दोनों तस्वीरें आपस में मिलकर एक हो गईं और वहाँ से चली गईं। कुछ समय बीतने के बाद हवा ने यह बात फैलादी—

"मुहब्बत के सिवा किसी चीज़ की रक्षा न करो। केवल मुहब्बत ही शाश्वत है।"

*** मैंने देखा

यौवन मेरे सामने से गुजरा। मैं उसके पीछे-पीछे चला। हम दूर एक खेती में पहुँचे। यौवन ठहर गया। हाथीदाँत के समान श्वेत बादलों को जो दूर क्षितिज पर उड़ रहे थे—उन वृक्षों को जो अपनी नंगी डालियों से ऊँचाई की ओर संकेत कर रहे थे मानों आकाश से अपने हरे पत्तों की भीख माँग रहे हैं—को देखकर चिन्ता में पड़ गया। मैंने उससे कहा—

"यौवन ! हम कहाँ पहुँच गये ?"

"विस्मय की खेती में—होशियार होजा।"

"हम क्यों न वापस चलें। इस स्थान की वीरानी मुझे भयभीत कर रही है। श्वेत बादलों और नंगे वृक्षों का दृश्य मुझे दुखी कर रहा है।"

"धैर्य से काम ले। विस्मय ही अध्यात्म की पहली सीढ़ी है।"

फिर मैंने अप्सरा की एक काल्पनिक मूर्ति देखी जो हमारे निकट आ रही थी। मैंने आश्चर्य से पूछा—

"यह कौन है ?"

"यह जुपीटर की लड़की और शोकपूर्ण कहानियों की हीरोइन है। इसका नाम मेलोबीन* है।

---

*प्राचीन यूनानियों के मतानुसार कला और ज्ञान के नौ देवता थे जिन्हें "म्यूज" कहा करते थे। इनमें से हरएक अपने अनुयायियों को उसके प्रेम, जिज्ञासा, पात्रता और योग्यता के अनुसार कुछ न कुछ हिस्सा दिया करता था। इनके नाम ये हैं : (१) मेलोबीन—

"मनमोहक यौवन ! जब तू मेरे पहलू में है तो ग़म मुझसे क्या माँगने आया है ?"

"ग़म इसलिये आया है कि तुझे धरती पर बसने वालों का ग़म दिखादे। जिसने ग़म नहीं देखा वह खुशी कहाँ देख सकता है ?"

अप्सरा की काल्पनिक मूर्ति ने अपना हाथ मेरी आँखों पर रखा। जब उसने अपना हाथ उठाया, मैंने स्वयं को अपने यौवन से दूर और भौतिक दुनिया से अलग पाया। मैंने उससे पूछा—

"देवी ! यौवन कहाँ है ?"

उसने कोई उत्तर नहीं दिया और मुझे अपने परों पर बिठाकर एक ऊँचे पहाड़ की चोटी पर ले गई। वहाँ से मैंने धरती और पूरे ब्रह्माण्ड को अपनी आँखों के सामने एक किताब की तरह खुला हुआ देखा। उस पर रहने वालों के भेद किताब की लाइनों की तरह साफ़ दिखाई दे रहे थे। मैं अप्सरा की काल्पनिक मूर्ति के पास भयभीत खड़ा हुआ इंसान के गुप्त भेदों को ध्यान से देख रहा था और जीवन के रहस्य के सम्बन्ध में प्रश्न कर रहा था।

मैंने क्या देखा ? काश, मैं वह दृश्य न देखता। मैंने देखा कि नेकी के फ़रिश्ते बदी के फ़रिश्तों से लड़ रहे हैं और इंसान आशा और निराशा के भँवर में फँसा हुआ आश्चर्यचकित खड़ा है। मैंने देखा कि प्रेम और शत्रुता इंसान के दिल से खेल रहे हैं। प्रेम उसके पापों पर पर्दा डालने का प्रयत्न करता है। स्वीकृति और अनुमति के नशे में उसको बेहोश करने की कोशिश करता है और उसकी ज़बान से प्रशंसात्मक शब्द निकालता है। शत्रुता उसे क्रोधित करती है। उसकी यथार्थ की आँखों को फोड़ने की कोशिश करती है। उसके

यमनाक कहानियों की देवी, (२) बोलीना—शेरोसुरूर की देवी, (३) सालिया—हास्यप्रद काव्य की देवी, (४) काल्यूब—वीर काव्य की देवी, (५) अरातू—प्रेम काव्य की देवी, (६) तरसकोरी—नृत्य की देवी, (७) ओराइना—आकाश-विद्या की देवी, (८) कल्यू—इतिहास की देवी, और (६) ओतरबी—संगीत की देवी।

कानों में ईर्ष्या और द्वेष की रूई ठूँसकर उसे सच्ची बात सुनने से रोकती है।

मैंने दैवज्ञों को देखा, कि लोमड़ी की तरह कपट का जाल बिछाकर इंसानी आत्माओं को उसमें फँसा रहे हैं—और इंसान—वह ज्ञान और बुद्धि को पुकार-पुकारकर सहायता माँग रहा है। लेकिन बुद्धि उससे दूर-दूर भागती फिरती है। उसे प्रकोप की दृष्टि से घूरती है और कहती है कि जब मैंने हर स्थान पर, हर रास्ते में पुकार-पुकारकर तुम्हें अपनी ओर बुलाया, उस समय तुम मेरे पास क्यों नहीं आये?

मैंने दुनियापरस्त विरक्तों को देखा जिनकी निगाहें बार-बार आकाश की तरफ़ उठती है लेकिन उनके दिल लोलुपता की गहरी क़ब्रों में घुसकर नये-नये जाल फैलाने की चिन्ता में लगे हुए हैं। मैंने युवकों को देखा जो केवल ज़बान से अपना प्रेम प्रकट करने में व्यस्त थे और अपनी ग़लत आशाओं के आलीशान महल निर्माण कर रहे थे लेकिन ख़ुदा का साया उनके सरों पर नहीं था। और उनकी भावनायें सोई पड़ी थीं। मैंने धर्मोपदेशकों और वक्ताओं को देखा जो छल और कपट का जाल बिछाकर अपनी भाषण-शक्ति के ज़ोर पर अपने व्यापार का बाज़ार गर्म कर रहे थे और चिकित्सकों को देखा जो सीधे-सादे और नेक लोगों की जानों से खेल रहे थे।

ग़रीब किसानों को देखा जो धरती पर हल चलाते हैं और बीज बोते हैं और धनवान वही खेती काटकर खा लेते हैं। अत्याचार खड़ा यह तमाशा देख रहा है और लोग इस अत्याचार को क़ानून का नाम देकर उसे उचित सिद्ध करते हैं। अंधकार के पर्दे बुद्धियों पर लगातार पड़ रहे हैं और रक्षक—बुद्धि का प्रकाश अचेत पड़ा सो रहा है। कोमलांगनियों को इस तरह पाया जैसे किसी अनजान व्यक्ति के हाथ में बरबत हो और उससे बेसुरे राग निकलते हों। मैंने नैसर्गिक स्वतन्त्रता को सड़कों और लोगों के दरवाज़ों पर अकेले फिरते हुए और शरण माँगते हुए देखा लेकिन किसी ने उसे शरण न दी। और उसी

समय असीम अपयश को देखा जिसके पीछे लोगों की भीड़ है—और उसे "आजादी" का नाम देते फिरते हैं। मैंने देखा कि धर्म, पवित्र ग्रंथ की तरह बन्द विस्मृति के आले पर पड़ा है और उसके स्थान पर मिथ्या धारणाओं को धर्म का नाम दे दिया गया है।

इंसान को देखा कि संतोष को कायरता के वस्त्र पहनाते हैं। वीरता को मूर्खता और मेहरबानी को डर का नाम देते हैं। सम्पत्ति को अपव्ययी व्यक्ति के हाथों में भोग-विलास का और कंजूस के हाथों में लोगों की रोजी मारने का यंत्र पाया और किसी बुद्धिमान के हाथों में दौलत का निशान तक नहीं देखा।

मैंने ये हालात अपनी आँखों से देखे और इस दृश्य को देखकर व्याकुल हो उठा।

"अय देवताओं की बेटी! क्या यही वह धरती है? क्या यही वह इंसान है?"

उसने निहायत इत्मेनान के साथ कहा—

"यही यथार्थ का मार्ग है, जिसमें काँटे बिछे हुए हैं। यह इंसान की छाया है, यह उसकी रात है। बहुत जल्द सुबह का प्रकाश फैलेगा।"

फिर उसने अपना हाथ मेरी आँखों पर रखा और हाथ उठने के बाद मैंने देखा कि मैं यौवन के साथ इत्मेनान से जा रहा हूँ और आशा की किरणें मुझे अपनी ओर बुला रही हैं।

*** आज और कल

एक धनाढ्य व्यक्ति अपने बाग की ओर चला। दुख उसके पीछे-पीछे चला और रंज उसके सर पर छाया डाले, मँडराने लगा। जैसे मरे हुए पशु को खाने वाले पक्षी लाश पर मँडराते हैं। वह एक ऐसे तालाब के किनारे पहुँचा जिसके निर्माण में इंसानी हाथों ने अपना कमाल दिखाया था। जिसके चारों ओर बहुमूल्य पत्थरों का चबूतरा बना हुआ था। वह तालाब के किनारे बैठकर कभी मूर्तियों के मुँह से तीव्रता के साथ निकलने वाली पानी की धारा को देखता और कभी अपने उस महल की तरफ़ दृष्टि उठाता जो इस सुन्दर बाग में यों दिखाई दे रहा था जैसे किसी सुन्दर कुमारी के गुलाबी गाल पर काला तिल।

वह कल्पना की दुनिया में अपनी स्मरण-शक्ति से दिल बहलाने लगा। वह भूत की किताब में घटनाओं के पन्ने पलटने लगा। आँसू उसकी आँखों में डबडबाने लगे। उसके चारों ओर बिखरे हुए इंसानी कमालात उसकी आँखों में चुभ गये। उसके दिल में बीते हुए दिनों की याद ताजा हो गई और बेधड़क स्वयं से कहने लगा—

"कल मैं इन हरे-भरे टीलों पर भेड़ें चराया करता था और आनन्द का जीवन व्यतीत कर रहा था और आज लोलुपता का गुलाम हूँ। धन और दौलत मुझे अपने पीछे खींच रही है और मैं दीन और दुनिया से बेखबर पड़ा हूँ। और इसी बेखबरी में दुर्भाग्य की गहराइयों

में उतरता जा रहा हूँ। मैं पक्षियों की तरह स्वतन्त्रता के गीत गाने में मग्न था। मैं कल तक इसी स्थान पर प्रातः समीर की तरह कोमल और ठण्डी घास पर धीरे-धीरे क़दम रखता हुआ आजादी से फिरा करता था। और अब इंसानी टुकड़ी और उसके क़ानून का क़ैदी बनकर रह गया हूँ। मैं हमेशा यही चाहता था कि जीवन की सारी खुशियाँ अपने लिये समेट लूँ। लेकिन आज मैं देखता हूँ कि धन-दौलत के इशारों पर चलते हुए मैं दुख भरे कंटक-मार्ग पर चल रहा हूँ। मेरी दशा उस ऊँटनी के समान है जो सोने के बोझ से नीचे दबी जा रही हो और सोना उसकी जान ले रहा हो।

कहाँ हैं वह खुले मैदान ? वह मद भरे गीतों से गूँजते हुए बाजार, वह स्वच्छ हवा, निर्मल हृदय ? और कहाँ गई वह मेरी खुदा-परस्ती ? ये सब सुख और शान्ति प्रदान करने वाली वस्तुएँ मैंने खो दीं। मेरे पास 'सोना' बाक़ी रह गया है जिससे मैं प्रेम करता हूँ तो वह मुझ पर हँसती है। गुलाम रह गये जिनकी अधिकता ने मेरी खुशियाँ कम करदीं। शानदार महल बाक़ी रहा जिसकी ऊँचाई ने मेरे दिल की दुनिया बरबाद करदी। एक वह जमाना था कि मैं गाँव की किसी लड़की के साथ अकेला घूमा करता था। संयम और प्रेम हमारे साथी होते, चाँद हमें प्रतिद्वन्दी की दृष्टि से घूरता।—और आज—मैं उन औरतों के झुरमुट में फँस गया हूँ जो अकड़कर चलती हैं। आँखों से चारों तरफ़ हर छोटे-बड़े को इशारे करती हैं। सोने की श्रृंखलाओं में मीठी-मीठी बातों से कृत्रिम तौर पर सुन्दर बनने का प्रयत्न करती हैं। मिलन की घड़ियाँ सोने के बने हुए आभूषणों और अँगूठियों के बदले बेचती फिरती हैं।

या वे दिन थे कि मैं अपने साथियों से मिलकर जंगल के आज़ाद हिरनों की तरह घने वृक्षों में भागता फिरता, उनके सुर से सुर मिलाकर गाता, हरे-भरे खेतों के आनन्द में उनका बराबर का हिस्सेदार बनता—

और आज—अपनी टुकड़ी में ऐसा मालूम होता हूँ जैसे हिरनों के समूह में एक भेड़। मैं रास्ते में चलता हूँ तो मुझे दुश्मन की निगाह देखा जाता है और ईर्ष्या से मुझ पर उँगलियाँ उठाई जाती हैं। यदि सैर के लिये चमन की तरफ़ निकलता हूँ तो भयानक चेहरों और घमण्ड से अकड़ी हुई गर्दनों के सिवा किसी पर दृष्टि नहीं पड़ती। कल मुझे जीवन और जीवन के सौन्दर्य से मालामाल कर दिया गया लेकिन आज वे दोनों मुझसे छीन लिये गये। कल मैं अपने सौभाग्य के कारण समृद्ध था और आज धनवान होते हुए भी ग़रीब हूँ। कल मैं अपनी भेड़ों पर एक दयालु सम्राट की तरह शासन करता था। लेकिन आज—अपनी दौलत के सामने अत्याचारी मालिक का पीड़ित ग़ुलाम बनकर रह गया हूँ—मैंने कभी कल्पना भी नहीं की थी कि धन मेरे दिल की आँखों पर पर्दे डाल देगा और मुझे मूर्खता के खड्डों में धकेल देगा। मैं नहीं जानता था कि लोग जिसकी इज्ज़त करते हैं वह नरक की वादी है। आह मेरे गुज़रे हुए ज़माने!"

सरमायादार अपनी जगह से उठ खड़ा हुआ। धीरे-धीरे क़दम उठाता हुए अपने घर की ओर चलने लगा। वह ठण्डी आहें भर रहा था और उसके मुँह से ये शब्द निकल रहे थे—

"....क्या इसी का नाम दौलत है? यही वह खुदा है जिसकी मैं आराधना करने लगा हूँ? यही वह वस्तु है जिसे हम अपनी ज़िन्दगी के बदले ख़रीदते हैं। लेकिन असली ज़िन्दगी का एक क्षण भी इससे नहीं ख़रीदा जा सकता। कौन है जो मेरे दौलत के ढेर लेकर मुझे एक सुन्दर कल्पना प्रदान करे? कौन है जो मुट्ठियाँ भर-भर मुझ से हीरे और जवाहरात ले और मुझे थोड़ी देर सच्चे प्रेम का आनन्द लेने दे? कौन है जो मेरे माल और दौलत के सारे खज़ाने लेकर वह आँखें दे जो असली सौन्दर्य को देख सकें?"

ज्यों ही वह अपने मकान के दरवाज़े पर पहुँचा उसने, शहर की

तरफ़ इस तरह देखा जैसे अर्मिया यरूशलम को देखा करता था। फिर उसकी तरफ़ संकेत करके अपने आप से बातें करने लगा मानों वह शहर के मरने पर शोक-काव्य पढ़ रहा हो—

"ओ अंधकार में भटकने वाले, मौत की छाया में पड़े हुए, झूठ पर न्याय करने वाले और मूर्खता से भरी हुई बातें करने वाले लोगो ! कब तक फलों और कलियों को नरक में फेंकते रहोगे ? कब तक काँटे और सूखे पत्ते खाते रहोगे ? कब तक ज़िन्दगी के उद्यान छोड़कर वीरानों और डरावनी इमारतों में पड़े रहोगे ? रेशम के कोमल और मुलायम कपड़े तुम्हारे ही लिये बनाये गये हैं ; क्यों मोटे और पुराने कपड़े पहनते हो ? लोगो ! बुद्धि का चिराग़ बुझने लगा है, खुदा के लिये इसमें तेल डालो। जागो, चोर तुम्हारे सुख और शान्ति के खजाने लूट रहे हैं।"

इसी समय एक ग़रीब भिखारी ने उसके सामने हाथ फैलाया। उसके गतिमान होंट रुक गये। उसके चेहरे पर प्रसन्नता के लक्षण प्रकट हुए और उसकी आँखों से कोमल प्रकाश की किरणें निकलकर भिखारी के चेहरे पर पड़ने लगीं। कल की वह स्थिति जिसकी याद में वह आँसू बहा चुका था, उसकी आँखों में फिरने लगी। वह भिखारी के पास गया। उसके माथे पर प्रेम और समता का चुम्बन दिया और उसका हाथ सोने से भर दिया और प्यार भरी आवाज़ से कहने लगा—

"भाई ! इस समय इतनी ही ले लो और कल अपने साथियों को लेकर आओ और अपनी सारी दौलत सँभाल लो।"

भिखारी मुस्कराने लगा, जैसे वर्षा के बाद कली मुस्कराती है और जल्दी-जल्दी क़दम उठाता हुआ वापस चला गया।

अब दयालु धनी यह कहते हुए अपने मकान में दाखिल हुआ कि ज़िन्दगी में हर चीज़ अच्छी है। यहाँ तक कि दौलत भी। दौलत

इंसान को शिक्षा देती है। दौलत सारंगी की तरह है। जो उसको बजाना नहीं जानता उसके कानों में वह बेसुरे और अरुचिकर राग गाती है। माल प्रेम की तरह है। जो उसे खर्च नहीं करता उसे वह मौत के दरवाज़े तक पहुँचाता है। और जो उसे प्राप्त करने के बाद दाता बनता है उसे वह शाश्वत जीवन से मालामाल कर देता है।

★★★ ग़रीब विधवा

लिबनान के उत्तरी पहाड़ों में वादिये क़ादेशा के श्वेत बर्फ़ से ढके हुए गाँव पर रात की काली चादर दिन के प्रकाश को ढकने लगी। बर्फ़ के कारण वादी के खेत सफ़ेद काग़ज के पन्ने के तरह दिखाई दे रहे थे। हवायें उन पर रेखाएँ खींचतीं और मिटाती जाती थीं। प्रचण्ड आँधियाँ उनके साथ खेल रही थीं।

इंसान अपनी-अपनी झोंपड़ियों में और पशु-पक्षी अपनी विश्राम-गाहों में छुप गये थे। आकाश के खुले वातावरण में कोई प्राणी दिखाई न देता था। स्तब्ध कर देने वाली सर्दी, शिथिल करने वाली हवाओं, भयानक रात के अंधकार और दिल दहला देने वाली मौत के सिवा कोई चीज दिखाई न देती थी।

एक छोटे से घर में, आग के पास बैठी हुई एक औरत ऊन कातने में व्यस्त थी। पहलू में उसका इकलौता लड़का बैठा था जो कभी आग के गर्म शोलों की ओर और कभी अपनी दयालु माँ की ओर नजरें उठाकर देख लेता था। अचानक तेज हवा चलनी शुरू हुई। कमज़ोर दीवारें हिलने लगीं। लड़का घबराकर माँ से चिमट गया और आँधी के भयंकर हमलों से अपने आप को छुपाने लगा। माँ ने उसे अपने सीने से लगाकर उसका चुम्बन लिया और फिर उसे अपनी रान पर बिठाकर उससे कहने लगी—

"मेरे लाल! घबराने की कोई बात नहीं। यह प्रकृति अपनी महानता प्रकट करके इंसान को बताना चाहती है कि तू कुछ भी

नहीं। अपनी शक्ति का प्रदर्शन करके उसको बताना चाहती है कि तू कितना दुर्बल है। डर नहीं ! धरती पर लगातार बरसने वाली बर्फ, आकाश में छा जाने वाले बादलों और तबाही व बरबादी फैलाने वाली प्रचण्ड आँधियों के पीछे एक ऐसी शक्ति भी है जो लहलहाते हुए खेतों और हरी-भरी वादियों की आवश्यकताओं को अच्छी तरह जानती है। इन सब विनाशकारी हालात को देखने वाली एक ऐसी आँख भी है जो इंसान की विवशता पर कृपा और दया की दृष्टि डालती है।

"मेरे दिल के टुकड़े ! डरो नहीं। इसलिये कि तत्वों का स्वभाव जो वसन्त में मुस्कराता रहा, गर्मी में कहकहे लगाकर हंसता रहा, पतझड़ में रोनी सूरत बनाकर प्रकट होता रहा, अब चाहता है कि फूट-फूटकर रोये और धरती की गहराइयों में बसने वाली जिन्दगी के बीज को अपने ठण्डे आँसुओं से तृप्त करदे। कल जब तुम अपनी मीठी नींद से जाग होगे तो देखोगे कि आकाश साफ़ है और खेत बर्फ़ के श्वेत कपड़े पहने हुए है, जिस तरह आत्मा इंसानी जीवन और मृत्यु के संघर्ष के बाद उजले सफ़ेद कपड़े पहन लेती है।

"मेरे इकलौते बेटे ! सोजा, तेरा बाप शाश्वत जीवन के हरे-भरे मैदानों से हमें देख रहा है। उन हमेशा की मीठी नींद सोने वालों की याद से, हमारे दिलों को हिला देने वाली आँधियाँ कितनी अच्छी लगती हैं। मेरे प्यारे बच्चे ! सोजा, इसलिये कि इन्हीं तीव्र और प्रचण्ड हवाओं के कारण वसन्त में विभिन्न प्रकार के फूल खिलेंगे। और इन्हीं की बदौलत तुम विभिन्न प्रकार के फल, वृक्षों पर से तोड़-तोड़कर लाओगे। इसी प्रकार, मेरे बेटे, इंसान भी दर्दनाक कष्ट, असह्य विपत्तियाँ और जानलेवा निराशा के बिना प्रेम का फल प्राप्त करने के योग्य नहीं हो सकता।

"मेरे नन्हें बच्चे ! सोजा, तू नींद में अच्छे-अच्छे स्वप्न देखेगा और उस समय तू डरावनी रात और कड़ाके की सर्दी से बेखबर

होगा।"

नींद के नशे से लाल आँखें उठाकर उसने माँ की तरफ़ देखा और कहा—

"माँ! नींद से मेरी आँखें भर गई हैं। मुझे डर है कि कहीं नमाज पढ़े बिना ही न सो जाऊँ।"

माँ ने उसे गोद में ले लिया और डबडबाई हुई आँखों से उसके चेहरे की तरफ़ देखते हुए बोली—

"मेरे बेटे! मेरे साथ बोलता जा। अय संसार के पालनहार! ग़रीबों पर दया कर और इस सख़्त सर्दी से उनकी रक्षा कर। अपने हाथों से उनके नंगे शरीरों को ढँक दे। उन अनाथों का ध्यान रख जो कच्ची झोंपड़ियों में सोये हुए हैं और उनके शरीर बर्फ़ से बातें कर रहे हैं। अय ख़ुदा उन निस्सहाय औरतों की आवाज़ सुन जो नीले आकाश के नीचे मौत के पंजों में हैं और सर्दी के थपेड़ों का सामना कर रही हैं! अय परमात्मा! अपनी दया से धनवानों के हृदय के पट खोल दे। उनकी आँखों को बुद्धि की ज्योति से प्रकाशित करदे ताकि वे भूखों के फ़ाक़ों को अनुभव न कर सकें। अय धरती और आकाश पर बसने वाले प्राणियों के अन्नदाता! उन भूखों पर दया कर जो इस अँधेरी रात में लोगों के दरवाज़ों पर दस्तक देते फिरते हैं। ग़रीबों की दरिद्रता को दया की दृष्टि से देख। अय दयालु भगवन्! दुर्बल चिड़ियों को भी अपने रक्षण में रख और प्रचण्ड आँधियों की लपेट में आये भयभीत वृक्षों का भी ध्यान रख। ख़ुदा या हमारी यह दुआ क़ुबूल कर।"

जब बच्चा मीठी नींद का आनन्द लेने लगा तो माँ ने उसे अपने बिस्तर पर लिटाकर तड़पते हुए होंटों से उसके माथे का चुम्बन लिया और फिर आग के पास बैठकर ऊन कातने में लग गई।

★★★ एक सच्चे मित्र की घटना

मैंने उसको जीवन के रास्तों में भटका हुआ राही देखा। यौवन के नशे में चूर पाया। वह अपनी उमीदों में मौत के किनारे तक पहुँच गया था। वह एक ऐसी नम्र और मृदुल डाली की तरह था जिसको हवा के तेज झोंकों ने चारों ओर से घेर लिया हो।

मैंने उसे उस गाँव में पहचाना जहाँ वह हर वक़्त अकड़ा रहता। चिड़ियों के कमजोर घोंसलों को नष्ट करके उनके बच्चों को मारने में उसको आनन्द आता। नन्हीं-नन्हीं कलियों को पैरों तले रौंदने और उनके सौंदर्य को मिट्टी में मिलाने में उसे मजा आता।

फिर मैंने उसे स्कूल में देखा। वह पढ़ने-लिखने के बजाय खेल-कूद में व्यस्त रहता और एक क्षण शान्ति से न गुजारता। फिर मैंने उसे शहर में एक ऐसे युवक के रूप में देखा जो अपनी पैतृक सज्जनता को बाजारों में बेचता फिरता था। अपना धन निर्लज्जता के रास्तों में निस्संकोच बरबाद कर रहा था और अपनी बुद्धि को मदिरा की भेंट चढ़ा रहा था।

इन सब दोषों और बुराइयों के बावजूद मुझे उससे मुहब्बत थी। ऐसी मुहब्बत जिसमें दुख और दया मिली हुई थी। मुझे उससे इसलिये मुहब्बत थी कि उसकी ये बुरी आदतें प्रकृति की देन नहीं थीं बल्कि उसकी कमजोर और निराश आत्मा की दी हुई थीं।

लोगो ! इंसानी प्रकृति बुद्धि के कामों से जबरदस्ती पथ-भ्रष्ट होती है और फिर स्वयं ही उसकी ओर लौटती है। यौवन की

प्रचण्ड हवाओं में धूल और बारीक रेत के दिखाई न देने वाले छोटे-छोटे कण सम्मिलित होते है जो बुद्धि की पलकों में गिरकर उसे अंधा कर देते हैं और अक्सर एक लम्बे समय तक उसे अंधा ही रखते है।

मुझे इस युवक से मुहब्बत थी। मेरे दिल में उसके लिए निष्ठा के भाव थे और यह केवल इसलिये कि मैं उसके अंत.करण के कबूतर को उसके बुरे कर्मों के गिद्ध से लड़ते हुए देख रहा था। और यह कबूतर अपनी दुर्बलता से नहीं बल्कि दुश्मन की शक्ति से प्रभावित हो गया था। उसका पवित्र अंतःकरण एक न्यायी परन्तु कमजोर काजी की तरह था जो अपनी कमजोरी के कारण अपनी आज्ञाएँ मनवाने में विवश हो।

मैंने कहा कि मुझे उससे मुहब्बत थी। मुहब्बत विभिन्न रूप बदलकर आती है। कभी बुद्धिमानी के रूप में, कभी न्याय के रूप में और कभी आशा के रूप में। मेरी मुहब्बत उस आशा के रूप में थी कि मैं उसके प्राकृतिक सूरज के प्रकाश से उसका यह अस्थायी अंधकार दूर कर दूँ लेकिन इसके बावजूद मैं नहीं समझ सका कि यह अस्थायी मैलकुचैल कब और किस तरह उसके दिल से दूर होगा। उसकी यह निष्ठुरता कब सुशीलता में परिवर्तित होगी और उसकी मूर्खता कब बुद्धिमानी का रूप धारण करेगी। इंसान को इस क़ैद से आजाद होने से पहले यह खबर ही नहीं होती कि वह इन बन्धनों से कब छुटकारा पायेगा। सुबह का प्रकाश फैलने से पूर्व उसे यह ज्ञान ही नहीं होता कि कलियाँ कैसे मुस्कराती हैं?

जमाना गुजरता गया और उस नवयुवक की याद मेरे दिल में काँटे की तरह चुभती रही। उसका नाम लेते ही मैं बराबर ऐसी ठण्डी आहें भरने लग जाता था जो मेरे दिल को घायल कर देती थीं। कल मेरे पास उसका पत्र आया है, जिसमें वह लिखता है—

"मेरे दोस्त! मेरे पास आओ। मैं चाहता हूँ कि तुम्हें एक

ऐसे नवयुवक से मिलाऊँ जिससे मिलकर तू खुश होगा और जिसे जानकर तुझे हद से ज्यादा प्रसन्नता होगी।"

खत पढ़कर मैं कहने लगा कि अफ़सोस, अब यह नवयुवक चाहता है कि अपनी याद के साथ, जो मुझे हमेशा दुखी रखती है, किसी और की याद भी मिलादे। क्या वह अकेला दुराचारिता और अनियमितता का उदाहरण देने के लिये काफ़ी नहीं था। क्या अब वह चाहता है कि अपने साथ एक और को मिला मुझे पूर्ण रूप से भौतिक बन्धनों में जकड़ दे।

फिर कुछ सोचकर मैंने कहा—चलो मिल लें! आखिर आत्मा प्रियजनों से मिलकर ही तो प्रसन्न होती है और दिल उसकी मुहब्बत के प्रकाश ही के सहारे दुनिया के अंधकार पर विजय प्राप्त करता है। जब रात का अंधकार चारों ओर फैल गया तो मैं नवयुवक के घर की ओर चला। उसके कमरे में पहुँचकर मैंने देखा कि नवयुवक बिल्कुल अकेला बैठा पद्य की कोई किताब पढ़ रहा है। उसके हाथ में किताब देखकर मुझे आश्चर्य हुआ। थोड़ी देर के बाद मैंने पूछा—"तुम्हारा नया साथी कहाँ है?"

उसने कहा—"दोस्त, वह मैं ही हूँ।" फिर वह गम्भीरता के साथ बैठकर मेरी ओर देखने लगा। उसकी आँखों में ऐसा प्रकाश था जो दिल को घायल और देह को शिथिल कर रहा था। वह आँखें जिन्हें मैंने अनेक बार ध्यान से देखा और जिन में क्रोध और कठोरता के सिवा कोई भाव नहीं पाया, अब ऐसी आँखों में परिवर्तित हो चुकी थीं जिनकी ज्योति देखने वालों का दिल अपनी तरफ़ खींच लेती है।

फिर वह ऐसी मधुर आवाज़ से, जो उसकी आवाज़ नहीं मालूम होती थी, कहने लगा—"वह व्यक्ति जिसको तूने बचपन में पहचाना, स्कूल के ज़माने में जिसका साथ दिया और जवानी में जिसके साथ-साथ फिरता रहा, वह अब मर गया। उसकी मौत मेरे अस्तित्व का कारण

बनी। मैं तुम्हारा बिल्कुल नया दोस्त हूँ। लाओ, दोस्ती का हाथ मेरी ओर बढ़ाओ !"

मैंने उसके कहने पर उसका हाथ अपने हाथ में ले लिया और मुझे ऐसा अनुभव हुआ जैसे उसमें बिजली का करण्ट है जो मेरे सारे शरीर में दौड़ गया। उस हाथ का खुरदरापन अब नम्रता में बदल गया था। वह उँगलियाँ जो कल तक अपने कुकर्मों के कारण चीते के पंजे से उपमा देने योग्य थीं अब अपनी कोमलता से दिल के कोनों को टटोल रही थीं। फिर मैंने बड़े आश्चर्य से पूछा—

"तू कौन है ? तू कहाँ-कहाँ और कैसे-कैसे फिरता रहा ? क्या किसी पवित्र आत्मा ने तेरी आराधना करके तुझे इस स्थान पर पहुँचाया है या मैं कोई स्वप्न देख रहा हूँ ?"

उसने कहा—"हाँ, आत्मा की पवित्रता की छाया मुझ पर पड़ी और मेरी दशा बदल गई। प्रेम की तीव्र भावना ने मेरे दिल को एक पवित्र बलिवेदी में परिवर्तित कर दिया। मेरी दशा को बदल देने वाली हस्ती एक औरत है—उस औरत ने, जिसको मैं कल तक मर्द का खिलौना समझ रहा था, मुझे नरक की यातनाओं से निकालकर स्वर्ग के दरवाज़े पर न केवल खड़ा कर दिया बल्कि उसके दरवाज़े खोलकर मुझे अन्दर ले आई।

"वह यथार्थ को परखने वाली औरत ही है, जिसने मेरे दिल में अपने प्रेम का बीज बोया और फिर मेरी तरफ़ आगे बढ़ी। वही औरत—जिसकी दूसरी बहनों को मैंने अपनी मूर्खता के कारण घृणा की दृष्टि से देखा—मुझे प्रतिष्ठा और सम्मान के आकाश पर पहुँचा गई। वही औरत—जिसकी सहेलियों को मैंने अपने अज्ञान के कारण बुरी नज़रों से देखा, मुझे अपनी मेहरबानियों से सच्चरित्र बना गई। उसी औरत ने, जिसकी बहनों को मैंने सोने और चाँदी के दाम में फँसाकर अपना ग़ुलाम बनाया—अपने सौन्दर्य से मुझे आज़ाद कर दिया।—

और वही औरत जिसने पहले आदम को उसकी दुर्बलता और अपनी इरादे की शक्ति से जन्नत से निकाला, मुझे अपनी आराधना और अनुकम्पा से दुबारा उसी जन्नत में ले आई।"

इस समय मैंने नजरें उठाकर उसकी तरफ़ देखा। उसकी आँखों में आँसू डबडबा रहे थे, उसके होंटों पर मुस्कराहट खेल रही थी। और प्रेम की ज्योति की किरणें उसके सिर पर ताज की तरह फैली हुई थीं। मैं उसके पास गया और ईसाई पादरी की तरह, जो प्रसाद के लिये बलिवेदी की धरती को चूमता है, उसके ललाट पर चुम्बन दिया और उससे आज्ञा लेकर वापस लौटा। उसके शब्द बार-बार मेरे कानों में गूँज रहे थे—

"वही औरत—जिसने पहले आदम को उसकी दुर्बलता और अपने इरादे की शक्ति से जन्नत से निकाला—मुझे अपनी आराधना और अनुकम्पा से दुबारा उसी जन्नत में ले आई।"

*** ग़रीब दोस्तों के नाम

अय ! दुर्भाग्य के बिस्तर पर तू पैदा हुआ। तिरस्कार के वातावरण में तू पला-बढ़ा। अत्याचार के माहौल में तू जवान हुआ। केवल तू ही है जो सूखी रोटी, ठण्डी आहे भर-भरकर खाता है और मैले पानी में अपने आँसू मिला-मिलाकर पीता है।

और अय नृशंसित फौजी सिपाही ! तू अत्याचारी इंसानों के हुक्म पर अपनी अर्धांगिनी और अपने मासूम बच्चों और प्रिय साथियों को छोड़कर केवल इसलिये मौत के मैदान में जाता है कि तुझे वह इनाम मिले जिसको ये इंसान तंख्वाह कहते हैं।

और अय शाइर ! तू अपने ही देश में मुसाफ़िर की तरह रहता है। अपनी जान-पहचान के लोगों में अजनबी दिखाई देता है और दुनिया के भोग-विलास में से सिर्फ़ दो रोटी पर सन्तोष करता है।

और अय जेल की अँधेरी कोठरी में बन्द क़ैदी ! तू दुनिया के घमण्डी इंसानों के अत्याचारों से मजबूर होकर एक साधारण सा अपराध कर बैठा और फिर इन्हीं घमण्डी इंसानों ने जो ग़रीब के अच्छे कामों को भी बुरी निगाह से देखने के आदी हैं, तुझे प्रकोप की दृष्टि से देखा।

और अय बिचारी भिखारिन ! कि जिसे ख़ुदा ने सौन्दर्य की दौलत से मालामाल किया। सरमायादार नवयुवक की दृष्टि ने उसे ताड़ा। तेरी दरिद्रता से लाभ उठाकर चमकते हुए सोने के चन्द टुकड़ों से तुम्हें धोखा दिया। और जब वह अपने बुरे इरादों में सफल हो गया तो तुझे

तिरस्कार और दुर्भाग्य के गहरे खड्डे में धकेलकर तुझ से आँखें फेर लीं।

अय मेरे विवश साथियो! तुम सब इंसानी क़ानून द्वारा क़त्ल किए गये हो। तुम सब अशुभ समझे जाते हो और तुम्हारे अशुभ होने का कारण निरंकुश शक्तियों का घमण्ड, शासक की निर्दयता, सरमायादार का अत्याचार और भोग-विलास के ग़ुलाम इंसान का घमण्ड ही है।

उम्मीद का दामन पकड़े रहो। निराशा को अपने पास भी न फटकने दो। इसलिये कि संसार के अत्याचार, भौतिक दुनिया से दूर, बादलों के उस पार, नजरों से भी छुपी हुई, एक ऐसी शक्ति मौजूद है जो नितांत न्याय है, नितांत दया है और नितांत प्रेम है।

तुम उन कलियों की तरह हो जो छाया में फूट निकली। बहुत जल्द ठण्डा प्रातः समीर चलेगा और सूरज की किरणें तुम पर पड़ेंगी और फिर तुम एक नई ज़िन्दगी—सुख-शान्ति—आनन्द और सन्तोष की ज़िन्दगी पाओगे।

तुम बर्फ़ के बोझ से लदे हुए बिन पत्तों के वृक्ष हो। शीघ्र ही वसन्त अठखेलियाँ करता हुआ आयेगा और तुम्हें हरे-भरे सुन्दर पत्तों के वस्त्र पहनाकर दुनिया के सामने पेश कर देगा।

वह दिन दूर नहीं जब यथार्थ का प्रकाश तुम्हारी आँखों से आँसुओं के वे पर्दे हटा देगा जो तुम्हारी मुस्कराहट पर पड़े हुए हैं।

मेरे ग़रीब भाइयो! मेरे दिल में तुम्हारी इज्जत है और तुम्हें दुख पहुँचाने वालों के लिये घृणा के भाव ठाठें मार रहे हैं।

मैं सूरज निकलने से कुछ देर पहले, सुबह के सुहाने वक़्त में टहलते हुए चमन की सैर को निकला और वहाँ बैठकर अपने दिल से कानाफूसी करने लगा। मौसम सुहाना था। बसन्त की ठण्डी घास तबीअत में नशा पैदा कर रही थी, और मैं उस वक़्त जबकि दुनिया के बसने

वाले इंसान अपने बिस्तरों पर अर्ध-निद्रा की अवस्था में करवटें बदल रहे थे, मैं हरी और कोमल घास पर तकिया लगाये अपने दिल से प्राकृतिक सौन्दर्य के बारे में कुछ मालूम कर रहा था और यथार्थ की बातें जो मुझ पर प्रकट हो गईं थीं, उसे बता रहा था।

विचारों की धारा पर बहती हुई जब मेरी कल्पना मुझे इंसानों से दूर ले गई और मेरे अनुध्यान ने भौतिक दुनिया का पर्दा हटाकर मेरा वास्तविकरूप मुझे दिखाया तो मुझे अनुभव होने लगा कि मेरी आत्मा मुझे प्रकृति के निकट ला रही है और उसके भेद मुझ पर प्रकट होने लगे हैं।

ऐसी दशा में मैंने देखा कि प्रातः समीर निराश अनाथ की तरह ठण्डी आहें भरता हुआ, डालियों पर से गुजर रहा है। मैंने उससे पूछा—"प्रातः समीर! तू इतनी सर्द आहें क्यों भर रहा है?" उसने उत्तर दिया—"इसलिये कि सूरज की गर्मी मुझे धकेलकर शहर के वातावरण की ओर भेज रही है। उस वातावरण की तरफ़ जहाँ मेरे स्वच्छ वस्त्रों को विभिन्न बीमारियों के कीटाणु चिमट जायेंगे। उस वातावरण की तरफ़ जहाँ इंसानों के मुँह से निकली हुई जहरीली हवाएँ चलती हैं।

फिर मैंने अधखिली कलियों की तरफ़ देखा। उनकी आँखों से आँसुओं की बूँदें पानी के सफ़ेद क़तरों के रूप में जारी थीं। मैंने उनसे सवाल किया—"प्रकृति की गोद में खिलने वाली सुन्दर कलियो! इस समय यह रोना कैसा?"

उनमें से एक ने अपनी सुराहीदार गर्दन उठाकर कहा—"हम रोते हैं, इसलिये कि वह समय आ गया है जब इंसान आकर अपने जालिम पंजे से हमारी ये सुराहीदार गर्दनें तोड़ देगा। आजाद होते हुए भी हमें शहर के बाजारों में ग़ुलामों की तरह बेचेगा और शाम के समय जब हमारी यह ताज़गी ख़त्म हो जायेगी, हम मुर्झा जायेंगी तो

कचरे के ढेर में हमें फेंक देगा। हम क्यों न आँसू बहायें? जबकि हम अपनी आँखों से देख रहे हैं कि कठोर दिल इंसान के अत्याचारी हाथ हमें बहुत जल्द अपने देश से दूर फेंकने वाले हैं।"

थोड़ी देर में नदी की आवाज़ कानों में पड़ी जो उस औरत की तरह रो रही थी, जिसका बच्चा गुम हो गया हो। मैंने उससे पूछा—"नदी! तू क्यों चीखें मार-मारकर रो रही है?" उसने उत्तर दिया—"मैं अपने स्वभाव के विरुद्ध उस शहर की तरफ़ जा रही हूँ, जहाँ इंसान मेरा अपमान करेंगे। अंगूर से खींची हुई शराब पियेंगे और मेरा पानी अपनी देह का मैल-कुचैल दूर करने के काम में लायेंगे। मैं क्यों न रोऊँ जबकि मैं देख रही हूँ कि बहुत जल्द मेरा यह स्वच्छ और निर्मल जल शहर की गन्दगी से मैला और अपवित्र हो जायेगा।"

फिर मैंने सुना कि पक्षी शोक-गीत गाने में व्यस्त हैं। मैंने उनसे पूछा—"सौभाग्यशाली पक्षियो! तुम किसके ग़म में दर्द भरे गीत गा रहे हो?" एक चिड़िया मेरे पास ही वृक्ष की एक टहनी पर आकर बैठी और कहने लगी—"इंसान अभी एक यन्त्र लेकर आयेगा और हमारे प्राण लेने की कोशिश करेगा। हम नहीं जानते कि हम में से कौन उसके अत्याचार का शिकार होगा। इसलिये हम एक दूसरे को आख़री सलाम कह रहे हैं। आख़िर हम ऐसे गीत क्यों न गायें, जब हम जानते हैं कि जहाँ भी हम जाते हैं मौत हमारा पीछा करती है।"

पहाड़ की ओट से सूर्य उदय हुआ और वृक्षों की फुंगियों को सोने के मुकुट पहनाने लगा और मैं स्वयं से पूछ रहा था कि आख़िर प्रकृति जिस चीज को बनाती और पैदा करती है, इंसान उसे क्यों बिगाड़ता और नष्ट करता है?

*** झोंपड़ी और महल

महल—

धनाढ्य व्यक्ति के आलीशान मकान के सुन्दर और सुसज्जित कमरे बिजली के प्रकाश से जगमगाने लगे। संध्या हुई; नौकर मख़मली वर्दियाँ पहनकर दरवाज़ों पर तनकर खड़े हो गये। उनके सीनों पर पीतल के पालिश किये हुए बटन चमक रहे थे और वे आने वाले महमानों के लिये आँखें बिछाये खड़े थे।

शरीफ़ मर्द और औरतें अभिमान से सर उठाये फ़ख्र और गर्व के दामन घसीटते हुए सुनहरी वस्त्र पहने इस आलीशान महल की तरफ़ आना शुरू हुए। मोहक गीत और दिलों को गर्माने वाले संगीत की आवाज़ें दिल और दिमाग़ पर पर छाने लगीं।

थोड़ी देर में मर्दों ने खड़े होकर औरतों को अपनी ओर बुलाया। हर औरत अपनी-अपनी पसन्द के अनुसार एक-एक मर्द के साथ चिमट-कर नाचने लगी। यह शानदार मकान संगीत और नृत्य की रंगीनियों के कारण उस हरे-भरे उद्यान की तरह नजर आने लगा जिसमें चारों ओर रंगीन फूल सुन्दर पौदों की डालियों पर खिले हुए हों और जब प्रातः समीर नाचता और गाता हुआ वहाँ से गुज़रे तो वे गुरूर और नाज़ से अठखेलियाँ करने लगें।

जब रात अपनी आधी यात्रा पूर्ण कर चुकी और शहर की आबादी पर श्मशान की सी नीरवता छा गई तो दस्तरख्वान बिछाया गया। इस

पर विभिन्न प्रकार के स्वादिष्ट भोजन और रंगबिरंग के उत्तम फल चुन दिये गये। इससे निवृत होने के बाद शराब का दौर शुरू हुआ। सबने मिलकर इतनी पी कि उसके नशे में धुत्त होकर दुनिया से बेसुध हो गये।

रात—इसी बेसुधी की दशा में—गुजर गई। प्रातःकाल का प्रकाश पूर्व की ओर से प्रकट होकर चारों ओर फैलने लगा और धनिकों का यह समूह, अनिद्रा से थका हुआ, शराब के नशे में उन्मत्त, नाचने और गाने से चूर-चूर एक-एक करके वहाँ से रवाना होने लगे और घर जाकर अपने-अपने कोमल बिस्तरों पर नींद की गोद में जा सोये।

झोंपड़ी—

शाम हुई। एक ग़रीब किसान, फटे-पुराने वस्त्र पहने, एक टूटी-फूटी झोंपड़ी के दरवाज़े पर आकर रुका। दरवाज़ा खटखटाया और पट खुलने पर मुस्कराता हुआ अन्दर गया और आग के निकट अपने बच्चों के पास बैठ गया। थोड़ी देर में उसकी पतिव्रता स्त्री ने फटा-पुराना कपड़ा बिछाकर उस पर साधारण सा खाना परोस दिया। सबने मिलकर खाना खाया और फिर एक टिमटिमाते हुए चिराग़ के सामने बैठ गये।

रात का प्रारम्भिक हिस्सा गुजरने के बाद सब अपने-अपने बिस्तरों पर लेट गये और मीठी नींद ने उन्हें अपनी गोद में सुला लिया।

रात गुजर गई और प्रातःकाल का प्रकाश चारों ओर फैलने लगा। ग़रीब किसान अपने मालिक का नाम लेकर जाग उठा। उसने अपनी बीवी और बच्चों के साथ मिलकर बासी रोटी के चन्द कौर जल्दी-जल्दी खाये और कंधे पर हल रखकर खेत को रवाना हुआ, ताकि अपने माथे के पसीने से उसे तरबतर करके अपनी मेहनत का फल उन धनिकों के दस्तरख़्वान पर चुनदे जिन्होंने कल की रात शराब की बदमस्ती और नाच-गाने की रंगीनियों में व्यतीत की।

सूरज ने पहाड़ की ओट से अपना सर निकाला। उसकी किरणें किसान के पसीने से लतपत ललाट पर सीधी पड़ने लगीं। उसका शरीर सूरज की गर्मी से तपने लगा। और वह धनिक अपने आलीशान महलों में, खस की टट्टियों और बिजली के पंखों की ठण्डी हवा में, दुनिया से बेखबर—उनका पेट भरने वाले किसान की अवस्था से बेसुध, अपने नरम बिस्तरों पर नींद की गोद में खर्राटे भर रहे थे।

यह है इंसान की हालत और उसका न्याय। दुनिया के भोग-विलास में डूबकर बदमस्त होने वाले तो बहुत हैं लेकिन समझने और सोचने वाला कोई नहीं।

*** अय मेरी भर्त्सना करने वाले !

अय मेरी भर्त्सना करने वाले ! मुझे अकेला रहने दे। तुझे उस मुहब्बत का वास्ता, जो तेरे मन को तेरी साथी की कल्पना पर मजबूर करती है। जो तेरे दिल को तेरी माँ की अनुकम्पा की याद दिलाती है। जो तेरे हृदय को तेरे बेटे की याद में व्यस्त रखती है—कि मुझे मेरे हाल पर छोड़ दो।

मुझे मेरी हालत पर रहने दे। मेरे स्वप्नों की दुनिया बरबाद न कर। कल तक धैर्य रख। कल मेरे बारे में जो फैसला करेगा वह मुझे मंजूर है।

मुझे विश्वास है कि तूने मेरे फ़ायदे के लिये मुझे सीख दी। लेकिन मैं उसे मानने के लिये तैयार नहीं हूँ। इसलिये कि सीख एक काल्पनिक वस्तु है जो मन को व्याकुलता के मैदानों में लिये फिरती है। जहाँ जिन्दगी मिट्टी की तरह निर्जीव है। मैं अपने सीने में एक छोटा सा दिल रखता हूँ। मैं चाहता हूँ कि सीने के अन्धकार से उसे बाहर निकालूँ, हथेली पर रखकर उसकी गहराइयों का अन्दाजा लगाऊँ और उसके भेद मालूम करूँ। अय मुझे कोसने वाले ! खुदा के लिये अपनी तीर और नश्तर की तरह चुभने वाली बातों से डराकर उसे पसलियों के पिंजरे में क़ैद न कर।

इसे छोड़ दे ताकि वह अपना खून बाहर निकालकर दुनिया के सामने बहा दे। और प्रेम तथा सौंदर्य का सन्देश जो प्रकृति ने उसके पास अमानत के रूप में रख छोड़ा है, लोगों तक पहुँचा दे।

सूरज निकल आया। फूलों के आसपास घूमकर बुलबुल मीठी बोलियाँ बोलने लगीं। मैं भी चाहता हूँ कि अचेतना की नींद की चादर फेंककर सफ़ेद कबूतरों के साथ-साथ फिरूँ। मुझे बुरा कहने वाले ! मुझे न रोक। जंगल के शेरों और वादी के काँटों से मुझे न डरा। मेरा दिल उस वक़्त तक भावी विपत्तियों से कभी नहीं डरता और न कष्ट से घबराता है जब तक कि वह आ न जाये।

भर्त्सना करने वाले ! मुझे छोड़ दे। अपने उपदेशों को बन्द करदे। दुनिया की विपत्तियों और आँसुओं की लगातार वर्षा ने मेरी आँखें खोल दी हैं।

मुझे तू क्यों रोक रहा है ? मुझे चलने दे। देख, मुहब्बत की सवारी आ रही है। सौन्दर्य अपने झण्डे उठाकर आगे बढ़ रहा है। यौवन ख़ुशी का बैण्ड बजा रहा है। उनके मार्ग में गुलाब और चमेली के फूल बिछा दिये गये हैं और हवा फूलों की भीनी-भीनी सुगन्ध से सुवासित हो रही है।

मुझे दौलत के क़िस्से और प्रतिष्ठा की कहानियाँ सुनने का शौक़ नहीं। मेरा दिल दौलत से निःस्पृह है और मेरे लिये प्रकृति की प्रतिष्ठा से बढ़कर कोई प्रतिष्ठा नजर नहीं आती।

मुझे राजनीति की बातों और राज्य की खबरों से वंचित रख। इसलिये कि पूरी दुनिया मेरा देश और सारे संसार के वासी मेरे देश-वासी हैं।

*** सरगोशियाँ

मेरी सुन्दर प्रेयसी ! तू कहाँ है ? क्या तू उस छोटे से उद्यान की सैर कर रही है, जिसकी कलियाँ तुझे इस तरह चाहती हैं जैसे दूधपीते बच्चे अपनी माँ को। या अपनी किताबों में संलग्न होकर इंसान को विज्ञान पढ़ाने में व्यस्त है इसलिये कि तू खुद प्रकृति के विज्ञान की बदौलत इन किताबों से बेपरवा है।

मेरी जीवन-साथी ! क्या तू आराधनालय में मेरे लिये दुआ माँगने में व्यस्त है या खेतों में अपने स्वभाव से बातें कर रही है जो तेरे सोते-जागते तेरे विचारों पर छाया रहता है ? या ग़रीबों की झोंपड़ियों में अपनी मीठी बातों से उन बिचारी औरतों की दिलजोई कर रही है जिनके दिल टूट गये हैं और आशाओं पर पानी फिर गया है ?

नहीं, नहीं, तू हर जगह है इसलिये कि तू खुदा की ज्योति से सीधे प्रकाश लेती है और तू हर समय है इसलिये कि तू ज़माने से अधिक शक्तिशाली है।

क्या वे रातें तुझे याद हैं जिन्होंने हमें आपस में मिला दिया था ? जिनमें तेरे मन की किरणों ने हम दोनों को चाँद के हाले की तरह घेर लिया था और मुहब्बत के फ़रिश्ते रूहानी गीत गाकर हमारे आसपास घूम रहे थे ?

क्या तुझे वे दिन भी याद हैं जब हम दोनों बाग़ के वृक्षों की घनी छाँव में बैठ जाया करते थे ? उनकी डालियाँ हमारे ऊपर झुकी ऐसी मालूम होती थीं मानों हमें दुनिया वालों की आँखों से छुपाये रखना

चाहती हों। जैसे पसलियों की हड्डियाँ दिल के भेद किसी पर प्रकट नहीं होने देतीं।

क्या तुझे पहाड़ के दामन और हरी-भरी वादियों की वे राहें भी याद हैं जिन पर हम दोनों मिलकर चला करते थे? तेरी कोमल और मृदुल उँगलियाँ मेरी उँगलियों में यों गुँथी रहती थीं जैसे तेरी चोटियाँ एक-दूसरी में गुँथी हुई हों।

क्या तुझे वह घड़ी भी याद है जब मैं तुझ से बिदा होने के लिये तेरे पास आया? तूने मुझे गले लगाया और मेरे होंटों पर अपने होंट रखकर एक लम्बा और मीठा चुम्बन लिया जिससे मुझ पर यह राज खुल गया कि चार होंट आपस में मिलकर ऐसे भेद बताने लगते है जिन तक जबान की पहुँच नहीं।—एक ऐसा चुम्बन जो एक लम्बी आह की भूमिका थी। वह आह जो उस साँस के समान थी जिसके असर ने मिट्टी के ढेर से इंसान का पुतला बनाया। वह लम्बी आह जिसने हमें रूहों की पवित्र दुनिया में पहुँचाया और हम पर अपना भेद खोलकर रख दिया। फिर तूने बार-बार मेरा चुम्बन लिया और आँसू बहाते हुए कहा—शरीर तो हेय स्वार्थ के पुतले हैं। वह दुनिया के हालात से प्रभावित होकर एक-दूसरे से दूर हटते हैं और कामुकता के कारण एक-दूसरे को अपनाते हैं—लेकिन आत्माएँ वे हमेशा-हमेशा मुहब्बत के क़ब्ज़े में संतोष का साँस लेती हैं। यहाँ तक कि मौत आकर उन्हें खुदा के दरबार में पहुँचा देती है। मेरे महबूब जा! सुन्दर जीवन ने, जो इसकी बात मानने वालों को आनन्द के जाम भर-भरकर पिलाता है—मुझे अपनी तरफ़ बुलाया है। उसके पीछे चल। मेरा ख़याल न कर! तेरी मुहब्बत हमेशा मेरे पास रहती है और तेरी याद मुझे दुनिया के सुखों से बेपरवाह रखती है।

मेरी जीवन-साथी! तू अब कहाँ है? क्या तू रात की नीरवता में उस प्रातः समीर की राह देखती है, जो मेरे दिल की धड़कनें और छुपे हुए भेद लिये हुए तेरी तरफ़ आती है? या तू अपने प्रेमी—मुझे—

अपनी कल्पना की दृष्टि से देखती रहती है ? लेकिन प्रिये ! अच्छी तरह जान ले कि मेरा चेहरा तेरे उस काल्पनिक प्रेमी के चेहरे की तरह नहीं रहा जो कल तक तेरे दर्शनों के कारण हमेशा फूल की तरह खिला रहता था—अब तेरे विछोह के दुख से उदास दिखाई देता है। वे पलकें जो कल तक जंगल की आजाद हिरनी की पलकों की तरह सुरमगीं दिखाई देती थीं, अब रोते-रोते झड़ गई हैं। और ये दाँत जो तेरे चुम्बन का आनन्द ले-लेकर मोती की तरह चमकते थे, अब काले पड़ गये हैं।

मेरी प्यारी ! तू कहाँ है ? क्या सात समुद्र पार भी तू मेरे दिल की पुकार सुन सकती है ? मेरी कमजोरी और दुर्बलता देख सकती है ? मेरे धैर्य और सन्तोष का अनुमान लगा सकती है ? यदि नहीं तो क्यों ? क्या उड़ती हुई हवायें तुझे एक विवश और मजबूर परदेसी का सन्देश नहीं पहुँचातीं ? क्या मेरे और तेरे दिल का वह रिश्ता भी टूट गया जो मेरे टूटे हुए दिल की फ़रियाद तुझ तक पहुँचाने का साधन बनता ?

अय मेरी जिन्दगी ! तू कहाँ है ? मेरा जीवन अंधकारमय हो गया है। ग़म के बादल छा गये। ख़ुदा के लिये हवा को देखकर मुस्करा और प्रातः समीर को ठण्डी आहों से भर दे।

तू कहाँ है ? प्यारी ! तू कहाँ है ?

अफ़सोस ! मुहब्बत ने मुझे कितना गिरा दिया ?

*** अपराधी

नवयुवक भिखारी सड़क के किनारे बैठा है। एक नवयुवक—शक्तिशाली शरीर वाला—भूख से तंग आकर रास्ते के मोड़ पर—राह चलते हुए लोगों के सामने—देने वालों को विभिन्न शब्दों में दुआ देते हुए और अपनी भूख का दुखड़ा रोते हुए—हाथ पसारकर भीख माँग रहा है।

रात का अंधकार छाने लगा। भिखारी की जबान और उसके होंट आवाजें देते-देते सूख गये—लेकिन उसका हाथ—उसके पेट की तरह—अब भी खाली है। अब वह उठा। शहर के बाहर वृक्षों के झुरमुट में अकेला बैठकर दहाड़ें मार-मारकर रोया। अपनी डबडबाती हुई आँखें आकाश की तरफ़ उठाईं और भूख द्वारा सिखाये हुए शब्दों में उसे सम्बोधित करके कहने लगा—

"अय खुदा! मैं मज़दूरी की तलाश में धनिक के द्वार पर गया। मेरे फटे-पुराने और मैले कपड़े देखकर उसने मुझे दुतकार दिया। पढ़ने के लिये पाठशाला की ओर गया तो मुझे वहाँ घुसने भी न दिया गया। इसलिये कि मेरा हाथ खाली था। मैंने सिर्फ़ खाने पर नौकरी खोजी लेकिन दुर्भाग्य से वह भी न मिली। और अन्त में तंग आकर मैंने भीख माँगी तो दुनिया में बसने वाले निर्दयी प्राणियों ने कहा कि हट्टाकट्टा है—आलसी और निकम्मे आदमी पर उपकार करना पाप है। तेरे हुक्म से मैं पैदा हुआ और तेरे ही हुक्म से जीवित हूँ। फिर अय मेरे पालक! तेरे बन्दे मुझे तेरे नाम पर रोटी का टुकड़ा क्यों नहीं देते?"

नवयुवक भिखारी इतना कहकर रुक गया। उसके चेहरे का रंग बदल गया। वह उठ खड़ा हुआ। उसकी आँखें आग बरसाने लगीं। वृक्षों की सूखी डालियों में से एक डाली तोड़ी और दूर शहर की तरफ़ मुँह फेरकर चीख़-चीखकर कहने लगा—

"अपना पसीना बहाकर मैंने जीवित रहने का प्रयत्न किया। मुझे सफलता न मिली। अब मैं अपनी भुजाओं के बल पर जीवित रहूँगा। प्रेम के मधुर नाम पर मैंने रोटी का एक टुकड़ा माँगा। घमण्डी इंसान ने मेरी बात न सुनी। अब मैं शत्रुता के नाम पर रोटी प्राप्त करूँगा और बहुत कुछ लेकर छोड़ूँगा······"

बहुत दिन गुजर गये। नवयुवक भिखारी—माल और दौलत के लिये लोगों की गर्दन तोड़ने के काम में लगा हुआ था। उसकी लिप्सा का देव इंसानों के कोमल प्राण लेने में व्यस्त था। उसकी दौलत बढ़ गई। उसके हमलों से लोग भयभीत होने लगे। वह राष्ट्र के डाकुओं का सरदार और धनिकों के लिये एक भूत बन गया और अन्त में सरदार ने—धनिकों की ओर से गिड़गिड़ाकर क्षमा माँगी।

इस तरह इंसान विवश होकर अत्याचारी बनता है। और नेकी और सलामती की राह से निराश होकर कठोर दिल ख़ूनी का रूप धारण कर लेता है।

*** प्रेमिका

पहली झाँकी—

निद्रा और जाग्रत अवस्था के बीच जीवन का भेद करने वाली यही है। यह ज्योति का वह पहला प्रभात है जो मन के अंधकार में प्रकाश का काम देता है। यह सारंगी के साज की वह आवाज है जो इंसान के दिल के तारों में से पहले तार से निकले। यह वह घड़ी है जो बीते हुए दिनों की याद दिलाती है और बीती हुई रातों की कहानी दोहराती है। दुनिया की असार जिन्दगी का यथार्थ और परलोक के शाश्वत जीवन की वास्तविकता से दिलों को परिचित करती है। यह वह गुठली है जिसे सौन्दर्य और प्रेम का देवता आकाश से फेंकता है। आँखें उसे अपनी खेती में स्थान देती हैं। हृदय की प्रवृत्तियों की सिंचाई से वह सर निकालती है और मन के प्रयत्नों से वह फल देने लग जाती है। प्रेमिका की पहली नजर उस आत्मा के समान है जो बादलों के समान उड़ती फिरती है और उसके दम से धरती और आकाश की सारी सृष्टि फूट पड़ी है। और सत्य यह है कि जीवन-साथी की पहली दृष्टि स्रष्टा के उस शब्द "तथास्तु" का दर्जा रखती है जिसके कहने से दुनिया की रचना हुई।

पहला चुम्बन—

पहला चुम्बन प्रेम-मदिरा का पहला पात्र है जिसे सौन्दर्य के देवता ने अपने हाथ से भरकर वितरित किया। यह दिल को दुखी करने वाली शंका

और हृदय को प्रफुल्लित कर देने वाले विश्वास के बीच की दूरी है। यह आध्यात्मिक जीवन की कविता का पहला चरण है—इंसानी यथार्थ की पुस्तक का पहला पन्ना है। यह वह कड़ी है जो भूतकाल की कल्पनाओं को भविष्य की, मन को प्रसन्न करने वाली घड़ियों से मिलाती है।

यह वह घोषणा है जिसके द्वारा पहले चुम्बन में चार मिलने वाले होंट ऐलान करते हैं कि इस लोक और परलोक में कोई अन्तर नहीं रहा। मुहब्बत गुलाम बन गई और वफ़ादारी का मुकुट हमारे सर पर रखा गया—चार होंटों का आपस में एक दूसरे को छूना, गुलाब के फूल पर प्रातः समीर की अठखेलियों और ठण्डी आहें भरने की नक़ल उतारता है। जिससे संगीत से भरे तारों की आवाज निकलती है। यह पहला चुम्बन सुबह की उन ठण्डी हवाओं का संदेश है जो प्रेमी और प्रेमिका को काल्पनिक और भौतिक दुनिया से स्वप्न और आध्यात्म की दुनिया की ओर ले जाती है।

और जब पहली झाँकी उस बीज के समान है जिसे सौन्दर्य के देवता ने मनुष्य के हृदय में बोया तो पहला चुम्बन वह कली है जो जीवन की डाली पर सबसे पहले फूटी।

मिलन—

यहाँ से मुहब्बत जीवन के बिखरे हुए मोतियों को एक में पिरोने लग जाती है। जीवन के बिखरे हुए पन्नों को पुस्तक के रूप में एकत्रित करना आरम्भ कर देती है। बीते हुए दिनों की जटिल गुत्थियाँ हल होती दिखाई देने लगती हैं और बीते हुए आनन्द को एक ऐसे सौभाग्य का रूप देती है जिससे बढ़कर और कोई सौभाग्य नहीं सिवाय उस घड़ी के जब मन अपने स्रष्टा से हमेशा के लिये जा मिलता है।

मिलन, दो मजबूत दिलों का मिलकर कमजोर जमाने का मुक़ाबला करने का वचन है। यह प्रातःकाल उषा के नूरानी रंग के समान शराब तैयार करने की भूमिका है। यह उस सोने की जंजीर की आखरी

कड़ी है जिसकी पहली कड़ी प्रथम दर्शन और आखरी कड़ी शाश्वत जीवन है। यह नीले स्वच्छ आकाश पर उड़ता हुआ बादल है जो तबीअत की पवित्र धरती पर बरसता है ताकि उससे रंगबिरंगे सुन्दर फूल फूट पड़ें। पहली नज़र मुहब्बत की खेती में फेंकी हुई गुठली की तरह थी। पहला चुम्बन ज़िन्दगी की पहली डाली पर फूटी हुई कली था और मिलन—पहली गुठली की पहली कली से पैदा हुआ पहला फल है।

*** दो मौतें

रात की नीरवता में—मौत का फ़रिश्ता दुनिया के स्रष्टा के दरबार से, नींद में बेसुध पड़े हुए शहर की तरफ़ उतरा। शहर के सबसे ऊँचे मीनार पर खड़े होकर उसने अपनी ज्वाला की तरह चमकती हुई आँखों से मजदूर के टूटे हुए घर की जीर्ण-जीर्ण दीवारों पर दृष्टि डाली। नींद की दुनिया में उड़ती हुई आत्माओं और नींद की आज्ञा पालन करने वाले शरीरों को देखा।

जब चाँद अरुणोदय में छुप गया और शहर की आबादी ने काल्पनिक दुनिया का नक़ाब ओढ़ लिया, मौत भारी-भारी क़दम उठाती हुई एक धनिक के आलीशान मकान के दरवाजे पर पहुँची। कोई शक्ति उसके मार्ग में बाधक न हो सकी और वह मकान के अन्दर दाखिल होकर मकान-मालिक के पलंग के पास खड़ी होगई। उसके ललाट को धीरे-धीरे छुआ और इस तरह उसे नींद से जगाया। धनिक ने आँखें खोलकर मौत का खयाल अपने सामने खड़ा पाया। भय और निराशा से भरी हुई चीख उसके मुँह से बरबस निकली और बोला—"अय भयभीत करने वाले स्वप्न! मुझसे दूर हो जा। अय बुरे ख़याल! हटजा! अय रातों को दूसरों के घरों में घुसने वाले चोर! और बेसुध लोगों के आराम में विघ्न डालने वाले शैतान! तू यहाँ कैसे आया और मुझ से क्या चाहता है? भाग जा यहाँ से! जानता नहीं कि मैं इस घर का मालिक हूँ। वापस लौट जा वरना अभी मेरे नौकर और चौकीदार आकर तेरी बोटियाँ नोच लेंगे।"

अब मौत और निकट आई और बिजली की कड़क के समान आवाज़ से उसे सम्बोधित करके कहने लगी—

"देख ! ख़बरदार होजा ! आँखें खोल ! मैं मौत ही हूँ।"

धनिक ने उससे पूछा कि आख़िर तू मुझसे क्या माँगने आई है और मुझसे क्या चाहती है ?

"तू क्यों आई है ? तू मेरे समान धनी व्यक्तियों से क्या चाहती है ? जा, किसी ग़रीब बीमार के पास जा। मेरी आँखों के सामने से हटजा। मुझे अपने ख़ून में लिथड़े हुए पंजे और काले नागों की तरह लटकते हुए बाल न दिखा। जा, मैं तेरे भयानक बाज़ुओं और खूसट बदन को देखते-देखते उकता गया हूँ।"

फिर थोड़ी देर ख़ामोश रहने के बाद बोला—

"नहीं,नहीं, अय दयालु मौत ! मैंने जो कुछ कहा उसे माफ़ करदे। इसलिये कि डर के कारण पता नहीं मेरी ज़बान से क्या निकल गया ?—मेरे सोने के ढेर में से जितनी इच्छा हो सोना ले ले। मेरे ग़ुलामों की जितनी जानों की ज़रूरत हो ले ले। लेकिन मुझे अपनी हालत पर छोड़ दे······मौत ! मुझे ज़िन्दगी के साथ अभी हिसाब साफ़ करना है और दुनियावालों से अभी अपना माल वसूल करना है। अभी मेरे माल से लदे हुए जहाज़ किनारे तक नहीं पहुँचे हैं और अभी धरती के अन्दर मेरे अनाज के अम्बार दफ़न हैं जो अभी तक उगे ही नहीं हैं। इन सब चीज़ों में से जो भी तू चाहे ले ले, लेकिन मुझे छोड़ दे—मेरे पास सुन्दर और बन्द कलियों की तरह हसीन और नवजवान लौंडियाँ हैं, उनमें से जिसे चाहे ले ले। अय मौत ! सुन, मेरा एक इकलौता लड़का है—उससे मेरे जीवन की आशाएँ नत्थी हैं, चाहे तो उसे ले ले—मेरी हर चीज़ ले ले—लेकिन मुझे छोड़ दे।"

वह इतना ही कहने पाया था कि मौत ने अपना पंजा उसके मुँह पर रख दिया—उसकी जान ले ली और उसे हवा में उड़ा दिया।

मौत फिर ग़रीब मज़दूरों की बस्ती की तरफ़ गई। एक कच्चे

घर में दाखिल हुई और एक खटिया के निकट खड़ी हो गई, जिस पर पन्द्रह वर्ष का एक नवयुवक मीठी नींद में सो रहा था। थोड़ी देर तक उसके चेहरे की ओर—जिससे धैर्य और संतोष टपक रहा था, देखती रही। फिर उसकी आँखों पर अपना हाथ फेरा। वह जाग उठा और मौत को अपने निकट खड़ा देखकर उसके सामने घुटने टेक दिये और अपनी बाहें उसकी तरफ़ फैलाकर प्रेम भरे शब्दों में कहने लगा—

"अय सौन्दर्य की देवी, मौत! मैं हाजिर हूँ। अय मेरे स्वप्नों को साकार कर देने वाली और मेरी आशाओं की दुनिया में बसने वाली मौत! आ और मेरे प्राणों की भेंट स्वीकार कर। मेरी प्रेयसी मौत! मुझे अपनी गोद में ले ले। तू बड़ी दयालु है। मुझे इस दुनिया में न छोड़। तू खुदा की भेजी हुई है, मुझे छोड़कर न जा। मैंने तुझे कितना खोजा लेकिन न पा सका। मैंने तुझे कई बार पुकारा, लेकिन तूने मेरी पुकार न सुनी—अब तो सुन लिया। तू खुदा के लिये, आँखें फेरकर मेरी अभिलाषाओं पर पानी न फेर—मेरी प्यारी मौत! मुझे गले लगा ले।"

मौत ने अपनी कोमल उँगलियाँ नवयुवक के होंटों पर रखीं और उसकी जान लेकर उसे अपने बाजुओं के नीचे छुपा लिया।

मौत आकाश में उड़ने लगी और दुनिया की तरफ़ देखकर कहने लगी—"शाश्वत जीवन उसी को प्राप्त हो सकता है, जो शाश्वत जीवन से प्रेम करता है।

*** दोस्त से

मेरे निर्धन दोस्त ! यदि तुम जानते कि वह फ़ाक़े जो तुम करते हो और जिनको अपना दुर्भाग्य समझते हो—वही हैं जो तुम्हें न्याय और समानता का मार्ग दिखाते हैं, वही हैं जो तुम्हें जीवन की यथार्थता से परिचित कराते हैं, तो मुझे विश्वास है कि तुम स्रष्टा के इस वितरण से खुश होते। इसलिये कि सोने-चाँदी के भरे ख़ज़ाने पूँजीपति को इस से दूर रखते हैं। और जो मैंने यह कहा कि यह तुझे जीवन की यथार्थता से परिचित कराते हैं, वह इसलिये कि पूँजीपति जीवन की राह छोड़ कर मान, घमण्ड और अभिमान के रास्ते पर चल रहा है।

अय मेरे ग़रीब दोस्त ! तुझे न्याय और समता का रास्ता मुबारक हो। तूही उसकी ज़बान है और तुझे जीवन के भेद मुबारक हों। तू ही उस जीवन की किताब है। प्रफुल्लित होजा। तू ही अपनी मदद आप है। लोग तुझसे सहायता माँगते हैं और तुझे किसी की सहायता की ज़रूरत नहीं।

मेरे दुखी साथी ! यदि तू जानता कि ये विपत्तियाँ, जिनके पंजे में तू फँसा हुआ है, तेरे दिल को प्रकाशित करने वाली और तेरे मन को इस दुनिया के असार जीवन से यथार्थ के शाश्वत जीवन की तरफ़ उड़ा ले जाने वाली हैं, तो मुझे विश्वास है कि तू इन विपत्तियों को हद से ज्यादा पसन्द करता और उनके प्रभाव से प्रभावित हुए बिना न रहता और तू विश्वास कर लेता कि जीवन आपस में फँसी हुई कड़ियों से बनी हुई जंजीर है। और ग़म ! ग़म इस जंजीर में सोने की एक कड़ी

है जो वर्तमान पर सन्तुष्ट और भविष्य से प्रसन्न होने की दो कड़ियों को आपस में जोड़ती है। बल्कि ऐसे जैसे सुबह का सुहाना वक़्त नींद और चेतना को जोड़ता और अलग करता है।

मेरे दोस्त! निर्धनता मन की शराफ़त को प्रकट करती है और धनाढ्यता उसकी नीचता को सामने लाती हैं। दुख हार्दिक प्रवृत्तियों को तेज करता है और खुशी उन्हें नष्ट करती है। इंसान माल और खुशी को बढ़ाने के लिये दिन-रात उनकी खिदमत में लगा रहता है। वह गुनाह करता रहता है और उनको खुदा की तरफ़ नत्थी करता है। ऐसे ही वह इंसानियत की आड़ में ऐसे करतूत करता रहता है जिनसे इंसानियत पनाह माँगती है।

यदि धरती पर से भिखारियों का नामोनिशान मिट जाय, ग़म ढूँढने से न मिले तो विश्वास रखो कि मनुष्य का हृदय एक सफ़ेद पन्ने की तरह रह जायेगा जिसमें घमण्ड और अभिमान तथा माल और दौलत की पाशविक इच्छाओं के अलावा कोई चीज नजर नहीं आयेगी। उसमें केवल वे शब्द लिखे होंगे जिनका अर्थ कामेच्छा के सिवा कुछ न होगा। इसलिये मैंने सोचा तो मालूम हुआ कि खुदा परस्ती तथा इंसान के वास्तविक सुख और आनन्द, न धन-दौलत से बिक सकते हैं न जवानी की बदमस्तियों से फूलते-फलते हैं। मैंने और ध्यान से देखा तो मुझे स्पष्ट दिखाई दिया कि धनाढ्यता हृदय के वास्तविक आनन्द पर हर समय डाका डालने को तत्पर है और नवयुवक अपनी जवानी के नशे में उससे धोखा खाता रहता है और आँखें बन्द करके उन इच्छाओं के पीछे-पीछे जा रहा है।

अय मजदूर किसान! तेरी वह घड़ी जो खेत या कारखाने से वापस होकर अपनी जीवन-साथी और अपने मासूम बच्चों के साथ बैठकर गुजरती है, वही घड़ी उस शाश्वत जीवन का पता देती है जिसकी ओर तमाम दुनिया और दुनिया वाले दौड़ते जा रहे हैं। यदि तुम्हारे भावी

सुख और आनन्द की खुशखबरी सुनाती है—और धनवान का जीवन जिसे वह सोने-चाँदी के खजानों में बैठकर गुजारता है—वह आने वाली बुरी जिन्दगी का पता देती है। ऐसी जिन्दगी का जैसे क़ब्रों में कीड़ों की—खौफ़ और डर की जिन्दगी।

मेरे ग़मगीन दोस्त ! याद रख, वह आँसू जो तेरी आँखों से मोतियों की लड़ी की तरह लगातार बहते रहते हैं, वह दुनिया के ग़म को दिल से भुलाने वाले इंसान के तबस्सुम और ग़रीबों की हँसी उड़ाने वाले धनाढ्य के क़हक़हों से ज्यादा मीठे और स्वादिष्ट हैं। इसलिये कि ये आँसू दिल से ईर्ष्या और द्वेष का मैल धो डालते हैं। ये आँसू रोने वाले को बतलाते हैं कि टूटे हुए दिलों के टुकड़े किस तरह खुदा से मिलते हैं। ये ग़म के नहीं बल्कि इंसान की मदद करने वाले आँसू हैं।

अय ग़रीब मजदूर ! खूब याद रख कि तूने अपनी जो शक्ति व्यय की है और जिसे सरमायादार ने सोने-चाँदी के बदले खरीद लिया है—यह शक्ति फिर लौटकर तेरे ही पास आयेगी। हर वस्तु अपने मूल की तरफ़ दौड़ी हुई जाती है—यही प्रकृति का नियम है। और अय दुखी साथी ! सुना है कि तेरा यह ग़म प्रकृति के ही नियम के अनुसार खुशी में परिवर्तित होगा और जरूर होगा।

क़रीब है कि आने वाली नस्लें ग़रीबी से समता का और ग़म के आदलों से मुहब्बत का पाठ सीखें।

*** मुहब्बत की बातें

आबादी से दूर छोटे से घर में एक नौजवान बैठा हुआ कभी रौशनदान के रास्ते तारों से भरे हुए आकाश की ओर दृष्टि उठाता है और कभी उस तस्वीर को देखता है जो उसके सामने पड़ी हुई है। एक तस्वीर—जिसकी आकृति का प्रतिबिम्ब नौजवान के चेहरे पर पड़ रहा है और जिसके कारण तीनों लोकों के भेद उस पर प्रकट हो रहे हैं—एक कुमारी की तस्वीर जो नौजवान से सरगोशी करती हुई मालूम होती है, अपनी बातें उसे उसकी आँखों के रास्ते सुनाती है। रौशनदान से दिखाई देने वाले वातावरण में उड़ती हुई आत्माओं की बातें उसे समझाती हैं और उसके शरीर के हर-हर हिस्से को एक ऐसे दिल का आइना बताती हैं जो प्रेम की ज्योति से प्रकाशित है और जो नितांत शौक़ बना हुआ है।

थोड़ी देर इसी तरह गुजर गई। मेरे स्वप्न की एक घड़ी की तरह—जीवन के एक वर्ष की तरह—फिर नवयुवक ने तस्वीर अपनी आँखों के सामने रखी। क़लम और काग़ज उठाया और लिखने लगा—

"मेरे प्राणों से प्यारी प्रेयसि !

"यह प्रत्यक्ष शरीर और यह दुनिया की गन्दगियों से घिरा हुआ दिल किसी व्यक्ति की दिन-प्रतिदिन की बातों से यथार्थ और प्रकृति की तरफ़ आकर्षित नहीं हो सकता। इस परिवर्तन के लिये पूर्ण सन्तोष और एकाग्रता की जरूरत है। और मैं जानता हूँ कि रात का यह

शान्त वातावरण हम दोनों के दिलों में दौड़ता फिरता है। उसके हाथों में उन पत्रों से अधिक मधुर पत्र हैं जो प्रातः समीर पानी की सतह पर लिखता रहता है—यही फ़िज़ाएँ हम दोनों को एक दूसरे का सन्देश पढ़कर सुनाती हैं—लेकिन जिस प्रकार ख़ुदा की इच्छा के अनुसार हमारी आत्माएं हमारे शरीर के क़ैदखानों में बन्द पड़ी हैं उसी प्रकार प्रेम की इच्छा के अनुसार मैं बातों का क़ैदी हूँ।...प्रिये! लोग कहते हैं कि प्रेम इंसान पर आग के शोलों की तरह असर करता है। लेकिन मैंने तो देखा कि विछोह के भयंकर हमले हमें—हमारे वास्तविक शरीरों को—एक दूसरे से अलग न कर सके। जिस प्रकार प्रथम मिलने के दिन तू जान गई थी कि मेरा दिल तुझे बहुत पहले से जानता है और मेरी पहली नज़र भी वास्तव में पहली नज़र नहीं थी।

"प्रिये! क्या तुझे बाग़ का वह दृश्य याद है जब हम खड़े होकर एक दूसरे को घूर रहे थे? और क्या तू जानती है कि तेरी नज़रें उस समय मुझसे क्या कह रही थीं—कि यह मुहब्बत हमेशा-हमेशा रहेगी? वह नज़रें मुझसे कह रहीं थीं कि मैं अपने दिल के द्वारा और लोगों तक यह सन्देश पहुँचा दूँ कि नेकी के बदले जो एहसान किया जाता है वह इतना टिकाऊ नहीं होता जितना वह एहसान होता है जो दया और करुणा की भावना से किया जाता है। और वह प्रेम जो कपोल के तेल को देखकर पैदा हो वह उस बदबूदार पानी की तरह है जो गन्दी नालियों में बहुतायत से पाया जाता है।

"प्रिये! मैं एक ऐसे जीवन की कल्पना कर रहा हूँ जो बहुत ही सुन्दर है। ऐसा जीवन जो आने वाली नस्लों को भाईचारे का सन्देश दे। उनमें प्रेम और विश्वास की भावना पैदा करे। ऐसा ही जीवन जो तेरे प्रथम मिलन से शुरू होता है और मुझे विश्वास है कि हमारा यह जीवन सदैव बना रहेगा। इसलिये मुझे विश्वास है कि तू मेरी भावनाओं को उभारने की शक्ति रखती है जो मेरे दिल में छुपी हुई हैं। और तू

उन गुप्त शक्तियों को प्रत्यक्ष ला सकती है जिनके धुँधले निशान मेरी बातों और मेरे कामों में दिखाई देते है। जिस तरह सूरज की रोशनी से बाग़ की महकती हुई कलियाँ खिलती हैं उसी तरह तेरी मुहब्बत से मेरी और आने वाली नस्लों की जिन्दगी खिलकर रहेगी और वह ऐसी होगी जिसमें घमण्ड और अहंकार का नामोनिशान तक न मिलेगा और न ही उसमें तिरस्कार और निन्दा का डर होगा।"

इतना लिखने के बाद नवयुवक धीरे-धीरे क़दम उठाता हुआ खिड़की की ओर गया। बाहर के वातावरण पर दृष्टि डाली। दूर क्षितिज पर चाँद नजर आ रहा था। उसकी हल्की चाँदनी और मृदुल किरणों से आकाश चमक रहा था। वह वापस लौटा और पत्र में निम्नलिखित लाइनें बढ़ादीं—

"प्यारी! मुझे क्षमा करदो। मैंने तुमसे ऐसी बातें कीं जैसे तुम मेरे सामने हो, हालाँकि तुम मुझे छोड़कर उसी समय बिदा हो चुकी हो जब हम दोनों एक ही साथ स्रष्टा के हाथ से बनकर निकले थे। प्रिये! मुझे क्षमा करदो! मुझसे भूल हो गई।"

*** गूँगा जानवर

"जानवरों की शान्त निगाहों में वह संकेत हैं जिनको
केवल एक दार्शनिक की निगाह समझ सकती है।"

—एक हिन्दुस्तानी कवि

एक शाम को—जब मैं अपने उलझे हुए विचारों में दुनिया और दुनिया वालों को भूल चुका था—शहर के बाहर खुले हुए वातावरण में घूम रहा था। चलते-चलते मैं आबादी से दूर एक मकान के सामने ठहर गया। मकान की दीवारें गिर गई थीं और उसके खम्भे टूट चुके थे। मकान की जीर्ण-शीर्ण दशा बता रही थी कि एक लम्बे समय से वहाँ कोई नहीं रहता। मेरी दृष्टि एक कुत्ते पर पड़ी जो मिट्टी में लोट रहा था। उसका दुर्बल शरीर घावों से भरा हुआ था। वह निराशा भरी आँखों से पश्चिम में डूबते हुए सूरज की तरफ़ टकटकी बाँधे देख रहा था। उसकी आँखें बता रही थीं कि वह सूरज की आख़री किरणों को देखकर समझ गया है कि अब वह भी अपनी गर्मी से इस वीरान मैदान को वंचित कर देना चाहता है जिसमें इस अशक्त कुत्ते के सिवा किसी और प्राणी का निशान तक न था।

वह दुखी नजरों से सूरज को देखकर मानों उसे बिदा कर रहा हो मैं धीरे-धीरे उसके पास आया। मैं चाहता था कि काश! मैं इस बेजबान जानवर की आवाज समझ सकता और उसके दुख में सम्मिलित हो सकता! काश! मैं उसके सामने अपनी सहानुभूति प्रकट कर सकता! मुझे अपने पास देखकर वह डरा। अपनी पूरी शक्ति लगाकर,

जो अब समाप्त होने ही वाली थी, उसने अपने शरीर को हिलाया। अपने कमजोर पैरों पर खड़े होने का असफल प्रयत्न किया और पूरी कोशिश के बाद निराश होकर मेरी ओर देखने लगा। उसकी दृष्टि में दया माँगने की कटुता और मेहरबानी की मधुरता मिली-जुली थी। ऐसी दृष्टि जिसमें निन्दा और करुणा मिली हुई हो। ऐसी दृष्टि जो जबान का काम देती थी। ऐसी नजर जो मर्द की जबान से ज्यादा सादी और औरत के आँसुओं से अधिक अर्थभरी थी। और जब मेरी आँखें उसकी दुखी आँखों से टकराई तो मेरे विचारों में गति पैदा हुई। मेरी भावनाएँ जाग उठीं। मैं उस दृष्टि को शब्दों में परिवर्तित करने लगा और इंसान की जबान में उन नजरों की बातें बयान करने की कोशिश की। ऐसी नजरें जो कह रही थीं—

''मुझे अपनी हालत पर छोड़ दे। अत्याचारी इंसान के हाथों मैंने जो कष्ट उठाये, विभिन्न बीमारियों ने मुझे जहाँ पहुँचा दिया, मेरे लिये वही काफ़ी है। जाओ! और मुझे मेरे हाल पर अकेला छोड़ दो। मैं सूरज की गर्मी से दो-चार घड़ी के जीवन की भीख माँगूँगा। मैं इंसान के अत्याचार और उसकी कठोर-दिली से तंग आकर इस मिट्टी में भाग आया हूँ जो इंसान के दिल से अधिक दयालु है। और इस वीराने में आ पड़ा हूँ जिसकी उपेक्षा उसके दिल से कहीं कम है। मुझे छोड़ दे। आखिर तू भी तो इसी धरती का बसने वाला इंसान है जिसके क़ानून में न्याय का नाम नहीं······मैं एक ग़रीब जानवर हूँ। मैंने इंसान की सेवा की। मैंने निष्ठावान और वफ़ादार रहकर उसके घर में अपनी जिन्दगी गुजारी। उसका रखवाला बनकर उसके साथ रहा। मैंने उसके ग़म को अपना ग़म और उसकी खुशी को अपनी खुशी समझा। उसकी जुदाई के दिन एक-एक करके गिनता रहा और उसके आने पर खुशी से फूला न समाया। मैंने उसके दस्तरख्वान पर बचे हुए टुकड़ों और मुँह से फेंकी हुई हड्डियों पर सन्तोष किया। लेकिन जब मैं बूढ़ा और कमजोर हो गया, बीमारियों ने मेरे शरीर में अपने पंजे गड़ा दिये और

मेरे बचने की कोई आशा न रही तो उसने मुझे अपने घर से निकाल बाहर किया और मुझे निर्दयी बच्चों का खेल बनाया। मुझे दुनिया की विपत्तियों का निशाना बनाया।

अय इंसान ! मैं एक कमज़ोर जानवर हूँ लेकिन मैंने अपने आप में और तेरे बहुत से भाइयों—इंसानों—में एक चीज़ समन्वित पाई। तेरे उन भाइयों में कि जिनकी शक्ति जवाब दे जाती है, उन्हें रोजी नहीं मिलती और उनकी दशा बिगड़ती जाती है।—मैं उन सिपाहियों की तरह हूँ जो अपनी जवानी में देश और राष्ट्र के लिये सर हथेली पर रखकर लड़ते हैं—अधेड़ उम्र में खेती-बाड़ी करते हैं—लेकिन जब जीवन का पतझड़ आ जाता है, हाथ-पाँव जवाब दे जाते हैं तो उन्हें दूर फेंक दिया जाता है और कोई उनका नाम तक नहीं लेता।

मैं उस कुमारी की तरह हूँ जो जवानों का दिल खुश करने के लिये जवानी में अपने सौन्दर्य का प्रदर्शन करती है। बीवी बनकर बच्चों की परवरिश में रातों की नींद अपने ऊपर हराम कर लेती है। औरत बन-कर आने वाली नस्लों को इंसान बनाने में अपनी सारी शक्ति लगा देती है—जब बूढ़ी हो जाती है, उसकी शक्ति समाप्त हो जाती है तो उसको घृणा और तिरस्कार की दृष्टि से देखा जाता है और उसकी तरफ़ कोई ध्यान नहीं देता।

अफ़सोस, अय इंसान तू कितना ज़ालिम है ? तू कितना निर्दयी है ?"

उस कुत्ते की निगाहें कह रही थीं और मेरा दिल सब कुछ समझ रहा था। मेरे विचार उस पर दया और करुणा के भाव और अपने भाइयों के अत्याचार के दरमियान चक्कर खा रहे थे। और जब उसकी आँखें बन्द हो गईं तो मैंने उन्हें खोलना उचित न समझा और चला गया…।

*** कवि

कवि इस लोक को परलोक से मिलाने वाली कड़ी है। वह मीठे पानी का वह चश्मा है जिससे प्यासी आत्माएँ तृप्त होती हैं। वह सौन्दर्य के दरिया के किनारे ताज़ा फलों से लदा हुआ वृक्ष है जिससे भूखे दिल फल तोड़ते हैं। वह कविता की डालियों पर उड़ने वाला बुलबुल है जो मधुर-मधुर गीत गाकर दिल के ख़ाली कोनों को आर्द्रता और मृदुलता से भर देता है। वह उस श्वेत बादल के समान है जो लालिमा के किनारे से उठकर बढ़ता जाता है, बढ़कर ऊपर को उठता है और उठकर सारे आकाश में छा जाता है। फिर वर्षा के रूप में गिरता है कि जीवन के उद्यान को तृप्त करदे और उसकी कलियाँ खिल जायें। वह ख़ुदा का भेजा हुआ फ़रिश्ता है ताकि लोगों तक ख़ुदा की बातें पहुँचा दे। वह धरती पर छा जाने वाली चमक है जिस पर कभी अंधकार नहीं छा सकता और न वह किसी पर्दे के पीछे छुप ही सकता है।

वह इश्मदत्त—प्रेम की देवी और अपोलोन—संगीत की देवी से—अपना प्रकाश प्राप्त करता है।

वह अकेला रहने वाला इंसान है, जो सादे वस्त्र पहनता है और आनन्द के भोजन से अपने जीवन के दिन काटता है। तबीअत की कुर्सी पर बैठकर नई-नई बातें सिखाता है। रात की नीरवता में जागकर आत्मा के उतरने का दृश्य देखता है। वह एक किसान है जो अपने दिल का बीज शाइर औरतों के खेत में बिखेरता है, जिससे हरी-भरी खेती

उग आती है। उससे मानवता अपना जीवन व्यतीत करती है और यही उसका अन्न है।

यही वह कवि है जिसे जीवन में कोई नहीं पहचानता और इस दुनिया को छोड़ने के बाद—जब वह अपने असली देश की ओर चला जाता है—उसकी आराधना शुरू हो जाती है। हाँ, यह वही कवि है जो मानव से एक हलकी-सी मुस्कराहट के सिवा और किसी वस्तु की इच्छा नहीं रखता। और यह वही है जिसकी ठण्डी आहें आकाश में सुन्दर रूप धारण करके उड़ती फिरती हैं लेकिन मानव उसको खाना और कपड़ा तक देने में कृपणता करते हैं।

पस अय इंसान! आखिर कब तक तू उनको गर्व से ऊँचे-ऊँचे महल निर्माण करके देगा जिन्होंने धरती की सतह को खून के छींटों से लाल कर दिया है। और इन से—जो अपना दिल तेरे सामने रखते हैं—अपना पहलू बचाता रहेगा। आख़िर कब तक तू उन अत्याचारी हत्यारों और आज़ाद इंसानों को गुलाम बनाने वालों का सम्मान करता रहेगा और उन्हें भूलता रहेगा जो अपनी प्यारी आँखों की ज्योति रातों के अन्धकार में समाप्त कर देते हैं ताकि तुम दिन के प्रकाश से लाभ उठा सको। और जो अपना जीवन केवल इसलिये निर्धनताओं में व्यतीत करते हैं ताकि तुम उन्नति के उच्च शिखर पर पहुँच जाओ।

और तुम, अय कवियो! अय जीवन को जीवित बनाने वाले जन-समूह! याद रखो कि तुम इंसानों की निर्दयता के कारण कमज़ोरों और विवशों पर छा गये हो। अभिमान और घमण्ड के काँटे तोड़कर तुमने इन पर विजय प्राप्त की, तुमने दिलों में अपना घर बसा लिया। और याद रखो, अय शाइरो! कि इस राज की कोई सीमा न होगी, अय शाइरों की जमात!

*** मेरा जन्म दिन

६ दिसम्बर, १९०८ को पैरिस में लिखा गया।

उसी दिन मेरा जन्म हुआ।

आज से २५ वर्ष पूर्व—इसी तारीख़ को—मैं सन्तोष और शान्ति की दुनिया से कोलाहल, उपद्रव, द्वेष और लड़ाई-झगड़े से भरे हुए संसार में फेंका गया।

मैंने पच्चीस बार सूरज की परिक्रमा की और मालूम नहीं कि चाँद ने कितने चक्कर मेरे आसपास काटे—लेकिन अब तक मैं न तो प्रकाश का पता लगा सका और न अन्धकार के भेद जान सका।

मैंने पृथ्वी, चाँद, सूरज और सितारों के साथ एक महान् केन्द्र के पच्चीस चक्कर पूरे किये लेकिन मेरा मन अब तक उस महान् केन्द्र के नाम से भी परिचित नहीं। जिस तरह पानी की रौ समुद्र की लहरों की आवाज़ के साथ-साथ टूटती है और उनके अस्तित्व से उसका अस्तित्व नत्थी है, लेकिन फिर भी इसकी यथार्थता को नहीं जानते। समुद्र के उतार-चढ़ाव की मीठी आवाज़ के साथ आवाज़ मिलाकर गीत गाते हैं लेकिन उतार-चढ़ाव को पा नहीं सकते।

हर साल इसी तारीख़ को दूषित विचार, बिखरी हुई कल्पनाएँ और विभिन्न घटनायें, मेरे दिल में पैदा होती हैं। बीते हुए दिनों की कहानियाँ मेरे सामने आती हैं। गुज़री हुई रातों के चित्र मेरी आँखों में फिरने लगते हैं—लेकिन थोड़ी देर के बाद उनका नाम व निशान तक बाक़ी नहीं रहता। बिल्कुल उसी तरह जैसे लालिमा के किनारे

बादलों के टुकड़े मामूली हवा से उड़कर दूर की वादियों में ग़ायब हो जाते हैं।

हर साल—इसी तारीख़ को दुनिया के चारों कोनों से विभिन्न आत्मायें मेरी तरफ़ दौड़ती नज़र आती हैं। ग़म से भरे हुए गीत गाती हुई मुझे घेर लेती हैं। लेकिन फिर धीरे-धीरे लौट जाती हैं और आँखों से ओझल हो जाती हैं। ऐसे जैसे पक्षियों के झुण्ड विभिन्न आशाएँ लेकर वीरान धरती की ओर उड़ते हैं लेकिन उनको कोई दाना नज़र नहीं आता और थोड़ी देर पर फड़फड़ाकर किसी दूसरे स्थान का इरादा करके उड़ जाते हैं।

हर साल—इसी दिन। बीते हुए जीवन का यथार्थ जंग लगे आइने की तरह मेरी आँखों के सामने आता है। मैं देर तक टकटकी लगाये उन्हें देखता रहता हूँ लेकिन मुझे उनमें मौत से भी ज़्यादा डरावने सालों के चिह्नों के सिवा और कोई प्रतिबिम्ब नज़र नहीं आता। बूढ़े मर्दों के झुर्रीदार चेहरों की तरह अपनी आशाओं, स्वप्नों और असफल अभिलाषाओं पर मेरी नज़रें पड़ती हैं। मैं अपनी आँखें बन्द करके फिर खोलता हूँ और फिर आइना देखने लग जाता हूँ और इस बार अपने चेहरे के सिवा और कोई चीज़ दिखाई नहीं देती। और जब ग़ौर करता हूँ तो अपने चेहरे में दुख और विपत्तियों के चिह्नों के अलावा किसी चीज़ के आसार नहीं पाता। मैं अपने इस दुख को सम्बोधित करना चाहता हूँ लेकिन वह गूँगा बन जाता है और बोलता नहीं। काश ! मेरा ग़म ही मुझे कुछ सुनाता। इसलिये कि उसकी बातें ईर्ष्यालु दुनिया की बातों से बहुत अधिक मीठी होतीं।

इन गत पच्चीस वर्षों में मैंने अनेकों को अपना प्रिय बनाया। मैंने अक्सर ऐसे लोगों से प्रेम किया जिनसे दुनिया घृणा करती थी। और अक्सर ऐसे लोगों को नफ़रत की नज़र से देखा जिनको दुनिया अच्छा समझती थी। मेरा प्रेम शाश्वत होता है। मैंने बचपन में जिसको अपना महबूब बनाया वह आज भी मेरा महबूब है। और जिससे मुझे

आज मुहब्बत है, मैं अपने जीवन के आख़री क्षण तक उससे मुहब्बत करता रहूँगा। मुहब्बत ही मेरे जीवन की पूँजी है। कोई शक्ति मुझसे मेरी मुहब्बत नहीं छीन सकती।

मैंने मृत्यु से मुहब्बत की। मैने उसे सबके सामने भी और एकान्त में भी मीठे-मीठे नामों से पुकारा। और इसके बावजूद कि मैंने मौत की मुहब्बत को दिल से नहीं निकाला। मैंने उससे अपनी मुहब्बत का प्रण नहीं तोड़ा। मैंने जीवन को भी प्यार किया। मेरे विचार में जीवन और मृत्यु दोनों ही सुन्दर हैं। दोनों प्यारे हैं। दोनों मेरे शौक़ और मुहब्बत की परवरिश करते हैं।

मैंने आज़ादी से मुहब्बत की। लोगों को अत्याचार के आगे सर झुकाते देखकर आज़ादी से मेरी मुहब्बत बढ़ती गई। उनकी मूर्खता के अंधकार में भटकते हुए और अपने हाथ से गढ़े हुए बुतों को पूजते देखकर मेरी मुहब्बत और अधिक विस्तार धारण करती गई। लेकिन इसके बावजूद—आज़ादी से मुहब्बत के कारण—मैंने उन ग़ुलामों को भी महबूब रखा जो अंधों की तरह काँटों की तरफ़ बढ़ते चले जा रहे थे। इसलिये मुझे उन पर दया आगई। काले नाग फन उठाये हुए उनके सामने खड़े हैं और ये उनकी तरफ़ क़दम बढ़ा रहे हैं लेकिन उनको भान भी नहीं है। अपने ही हाथों अपनी क़ब्र खोद रहे हैं और उनको पता ही नहीं—मैंने सबसे अधिक प्रेम आज़ादी से किया है इसलिये कि वह उस कुमारी की तरह है जो एकान्त से घबराई हुई है। लोगों से दूर-दूर रहते हुए भी वह एक कोमल विचार की तरह घरों में उड़ती फिरती है। रास्तों के मोड़ पर ठहरती है और उधर से गुज़रने वालों को पुकारती रहती है, लेकिन कोई उसकी आवाज़ पर ध्यान नहीं देता।

इन्हीं पच्चीस वर्षों में, सारे इंसानों की तरह नेकी और भलाई से प्रेम के सम्बन्ध स्थापित करना चाहे। मैं प्रतिदिन सवेरे उठकर

उसकी खोज में निकलता लेकिन कभी मेरी दृष्टि उस पर नहीं पड़ी। न कभी इंसानों की बस्ती के चारों ओर धरती पर कहीं उसके पद-चिह्न ही दिखाई दिये। और न आराधनाघरों में उसकी आवाज़ सुनाई दी। और जब मैंने अकेले उसकी खोज शुरू की तो मेरे अन्तःकरण ने चुपके से मेरे कान में कहा—"नेकी दिल की गहराइयों में पैदा होती है—वहीं परवरिश पाती है और वह दिल की दुनिया से बाहर क़दम रखना पसन्द ही नहीं करती।" मैंने अपने दिल के कोनों को टटोला। उसका सारा उपकरण वहाँ मौजूद था—आइना, तख़्त और अच्छे वस्त्र—लेकिन वह ख़ुद वहाँ नहीं थी।

मैंने लोगों से भी प्रेम किया है। बहुत अधिक प्रेम किया है जो मेरी दृष्टि में तीन प्रकार के हैं। कोई तो जीवन को कोसता है, कोई उसकी प्रशंसा करता है और कोई उसके बारे में सोचता है। मैंने पहली प्रकार के लोगों से इसलिये प्रेम किया कि वह ज़िन्दगी को कोसते हैं। दूसरी प्रकार के लोगों से इसलिये किया कि वे प्रशंसा करते हैं और तीसरी प्रकार के लोगों से उनके चिन्तन के कारण।

मेरे जीवन के पच्चीस वर्ष इस प्रकार व्यतीत हो गये। इस तरह मेरी रातें और मेरे दिन जल्दी-जल्दी बीत गये और मेरे जीवन की घड़ियों को कम करते गये। जिस तरह हेमन्त की सूखी हवायें वृक्षों के पत्ते झाड़ती हैं।

और आज थके हुए राहगीर की तरह, जो अपना आधा रास्ता तय कर चुका हो, खड़ा सोच रहा हूँ। चारों तरफ़ देखता हूँ मगर मुझे अपने भूत की कोई ऐसी निशानी दिखाई नहीं देती जिसकी ओर इशारा करके मैं कहा सकूँ कि यह मेरा है। जीवन की बहार का कोई फल दिखाई नहीं देता जिसकी तरफ़ उँगली उठाकर कह सकूँ कि यह मेरी बहार है। हाँ, गुनाह की काली स्याही से चितरे हुए कुछ पन्ने हैं और बेजोड़ शब्दों से काले किये हुए कुछ पृष्ठ हैं। इन बिखरे हुए पन्नों और मिटे हुए चिह्नों में मेरा चिन्तन, मेरे विचार और मेरे

मीठे स्वप्न लिपटे-लिपटाये पड़े हैं—जिस प्रकार किसान, दाने को धरती के अन्दर छुपाता है । मुझमें और उसमें केवल इतना अन्तर है कि वह शाम का आशाओं की दुनिया बसाते हुए घर लौटता है और मुझे अपने दिल की दुनिया बसने की न आशा है, न प्रतीक्षा है और न अभिलाषा ।

अब—इस उम्र को पहुँचकर—दुख और निराशा के कुहरे के पीछे भूतकाल के धुँधले चिह्न दिखाई दे रहे हैं । और भविष्य का नक़ाब ओढ़े हुए आने वाली ज़िन्दगी मेरे सामने है । मैं अपने दिल के आइने में जीवन के यथार्थ को देख रहा हूँ । लोगों के चेहरों पर मेरी दृष्टि गड़ी हुई है । उनकी चीख़ और पुकार आकाश में गूँज रही है । आबादियों में चलते हुए उनके क़दमों की चाप मेरे कानों में पड़ रही है । उनके विचारों की मौजें और उनके दिलों की धड़कनें मैं अनुभव कर रहा हूँ । बच्चे खेलते, एक दूसरे के चेहरे पर मिट्टी फेंकते, हँसते और क़हक़हे लगाते नजर आ रहे हैं । नवयुवक सर उठाये हुए चल रहे हैं और मालूम होता है कि सूरज की किरणों से लाल, दिल के किनारों में जवानी के गीत गाने में मग्न हैं । लड़कियाँ मृदुल डालियों की तरह लचकती हुई, कलियों की तरह मुस्कराती और शौक़ व मुहब्बत से फड़कती हुई, पलकों के नीचे आँखों के कोनों से नवयुवकों के यौवन से आनन्दित होने में लीन हैं । बूढ़े—झुकी हुई कमर, लाठी का सहारा लेते हुए ज़मीन पर झुककर चलने में इस प्रकार व्यस्त हैं मानों जीवन के खोये हुए मोतियों की तलाश में हैं । मैं अपने मकान की खिड़की के पास खड़े होकर दुनिया की इन सारी गतिवान तस्वीरों और सायों को ध्यान से देखता हूँ—इनकी गति में भी एक सन्तोष दिखाई दे रहा है, जो शहर के गली-कूचों में इधर-उधर दौड़ते फिरते हैं । फिर मैं शहर से बाहर की ओर दृष्टि उठाकर देखता हूँ तो स्थिर सौन्दर्य, बोलती हुई नीरवता, उजाड़ टीले, आकाश से बातें करने वाले

वृक्ष और उनकी लचकदार डालियाँ, महकने वाली कलियाँ, प्रकृति के गीत गाने वाली नदियाँ और बागों में चहचहाने वाले परिन्दे नज़र आते हैं और प्रकृति के इस हरे-भरे उद्यान से जब नज़रें आगे बढ़ती हैं तो अथाह समुद्र की लहरें किनारे से टकराती हुई दिखाई देती है। उसकी गहराई में दफ़न जवाहरात, उसकी तली में छिपे हुए रहस्य, उसकी सतह पर झाग से भरी हुई मौजें, आकाश में उड़ने वाले बादल जो थोड़ी देर इधर-से-उधर उड़ने के बाद वर्षा के रूप में फिर धरती पर आ जायेंगे आँखों के सामने दिखाई देते हैं। समुद्र से आगे फैला हुआ आकाश जिसमें सितारे चमक रहे है, सूरज और चाँद घूमते रहते हैं।

मैं इस दृश्य में तल्लीन होकर अपनी उम्र के पच्चीस वर्ष, इस पहले गुज़री हुई नस्लें और आगे आने वाले क़बीले--सब कुछ भूल जाता हूं। मेरा अस्तित्व और मेरे चारों ओर घूमने वाली दुनिया अपने सारे उपकरण के साथ एक बच्चे की ठण्डी आह से ज्यादा महत्त्व नहीं रखती।

लेकिन इन हालात में मुझे सिर्फ़ एक चीज़, एक तुच्छ करण के अस्तित्व का अहसास होता है। उसकी गति का मुझे ज्ञान रहता है और उसकी आवाज़ मेरे कानों में पड़ती रहती है—मुझे उसके याता-यात का पता रहता है। कभी तो मुझे यों मालूम होता है कि वह अपने पर खोलकर ऊँचाई की तरफ़ उड़ रहा है—और थोड़ी देर में उसके धरती की तरफ़ उतरने के लक्षण दिखाई देने लगते हैं। मैं सुनता हूँ कि वह चीख़-चीख़कर पुकारता है—"ज़िन्दगी---विदा! अय मीठे ख्वाबों की दुनिया, विदा! अय धरती के अंधकार को अपने विवेक से भरने वाले रोज़-ए-रौशन, विदा! और अय अपने अंधकार से आकाश के प्रकाश को प्रकट करने वाली रात, विदा! अय धरती की मस्त जवानी को वापस लाने वाले वसन्त! विदा! अय सूर्य की शक्ति का ज्ञान दिलाने वाली गर्मी! विदा! और अय इरादों को दृढ़ करने

वाली सर्दी ! विदा ! अय कौमों के विकार का इलाज करने वाले लोगो ! विदा । अय हमें कमाल की तरफ आकर्षित करने वाले जमाने ! विदा ! अय जीवन की लगाम थामने वाली और सूरज का नकाब ओढ़कर छुपने वाली आत्मा ! विदा ! अय ऊँचे इरादों के मालिक दिल ! विदा !

और यह तुच्छ कण—मेरा दिल है—जो शाश्वत है और जिसके कारण मैं अपने आप को—मैं कहकर पुकारता हूँ ।

★★★ मृत्यु

मेरा दिल प्रेम के नशे में चूर हो गया है। मुझे सो जाने दो। मेरी आत्मा दिन और रात की परिक्रमा कर-करके थक गई है। मुझे नींद की गोद में पड़ा रहने दो।

मेरी क़ब्र के चारों तरफ़ दिये जलाओ। अगरबत्तियाँ और लोबान जलाओ और मेरे शरीर पर गुलाब और नरगिस के फूलों की पत्तियाँ बिखेर दो। मेरे बालों में बारीक पिसा हुआ मुश्क लगा दो और मेरे ललाट पर मौत का लिखा हुआ ध्यान से पढ़ो।

मेरी पलकें इस बेदारी से बहुत थक चुकी हैं। अब मुझे नींद की गोद में आराम करने दो।

मेरी क़ब्र के पास वीणा के तारों को छेड़कर उनकी मधुर आवाज मेरे कानों तक पहुँचाओ।

जादू भरी आवाज से गाये हुए मधुर गीतों से मेरे कानों के पर्दे खोल दो और फिर मेरी आँखों से निकलती हुई आशा की किरणों को ध्यान से देखो।

मेरे प्यारे साथियो ! आँसू पोंछ लो और सुबह के समय सर उठाने वाली कलियों की तरह अपने सर उठाकर देखो। तुम देखोगे कि मौत की दुल्हन रौशनी के मीनार की तरह मेरी क़ब्र से आकाश में उठती हुई दिखाई देगी। थोड़ी देर के लिये अपने साँस रोक लो और उसके सफ़ेद परों की आवाज़ को मेरे कानों से कान लगाकर सुनो।

मेरे प्यारे भाइयो ! आओ ! मुस्कराते होंटों से मेरे ललाट को, अपनी पलकों से मेरे होंटों को और अपने होंटों से मेरी पलकों को चुम्बन देकर मुझे अन्तिम विदा कहो।

बच्चों को मेरी मौत के बिस्तर के निकट लाकर खड़ा कर दो और उन्हें छोड़ दो ताकि अपनी कोमल उँगलियाँ मेरी गर्दन पर फेरें। बूढ़ों को मेरे पास भेज दो कि वे अपने कठोर और पवित्र हाथ मेरे ललाट पर फेरें। क़बीले की लड़कियों को रहने दो ताकि वे ख़ुदा का ख़याल मेरी दोनों आँखों में देखें और मेरी तेज़ साँस के साथ निकलता हुआ अनश्वर गीत अपने कानों से सुनें।

*** विरह

पहाड़ की ऊँची चोटी पर आ पहुँची और मेरी आत्मा आजादी के वातावरण में फिरने लगी।

मेरे प्यारे भाइयो ! मैं तुम से बहुत दूर जा पहुँचा। आबादी के पास छोटे-छोटे टीले मेरी नजरों से छुप गये। वादियों में शान्ति और सन्तोष फैल गया। रास्तों और सड़कों के निशान तक भी बाक़ी नहीं रहे। सफ़ेद बादलों ने जंगलों, चरागाहों और हरी-भरी वादियों को ढँक लिया।

समुद्र की मौजों की मधुर आवाज कानों को सुनाई नहीं देती। शहर की उपद्रव और कोलाहल भरी आवाजें शान्त हो गईं और मुझे आत्मा की शाश्वत और अनश्वर आवाज के अलावा कोई आवाज सुनाई नहीं देती।

सुख—

रुई से बने हुए कपड़े का कफ़न मेरे शरीर से अलग कर लो और मुझे वृक्षों के हरे पत्तों का कफ़न पहना दो।

हाथी दाँत के बने हुए ताबूत से मेरी लाश बाहर निकाल लो और नीबू के हरे पत्तों का तकिया बनाकर मेरे शरीर को लम्बा फैला दो। मेरे प्यारे भाइयो ! मेरी लाश पर रोओ नहीं बल्कि खुशी और मस्ती के गीत गाओ। अय खेतों में फिरने वाली लड़कियो ! आँसू बहाना

छोड़ दो और कटनी के दिनों में गाये जाने वाले मीठे गीत गाना शुरू कर दो ।

मेरे सीने से लिपटकर दुख और निराशा की ठण्डी आहें भरना छोड़ दो और अपनी कोमल उँगलियों से मेरे दिल की मुहब्बत के तारों को छेड़ो और खुशी के सुर मिलाओ ।

मेरे शोक में काले कपड़े पहनना छोड़ दो और मेरे ही कपड़ों की तरह श्वेत कपड़े पहनकर मेरी खुशी में शरीक हो जाओ ।

हिचकियां ले-लेकर मेरे बिछुड़ने का दुःख न मनाओ बल्कि आँखें बन्द करके देखो । तुम मुझे अब भी अपने बीच पाओगे । आज भी, कल भी और कल के बाद भी—हमेशा ।

सर्ज के वृक्षों के झुरमुट में मेरी क़ब्र खोदो जहाँ बनफ़शा के फूल खिलते हैं ।

मेरी क़ब्र खूब गहरी खोदो ताकि बाढ़ का पानी मेरी जीर्ण हड्डियों को वादी में बहा ले जाये ।

मेरी क़ब्र खूब बड़ी हो ताकि रात को आने वाले साये मेरे पास बैठ सकें ।

मेरे ये कपड़े फाड़कर फेंक दो और मुझे बिलकुल नंगा करके आराम के साथ अपनी धरती माता के सीने पर लिटा दो ।

मेरे प्यारे दोस्तो ! अब मुझे अकेला छोड़ दो और शान्तिपूर्वक वापस चले जाओ ।

अपने घरों को वापस लौटो । वहाँ तुम्हें ऐसी चीजें मिलेंगी जिनको छीन लेने की शक्ति मौत में भी नहीं है ।

अब इस स्थान को छोड़ दो । इसलिये कि तुम जिसकी खोज में हो वह अब इस दुनिया से दूर—बहुत दूर पहुँच गया है ।

*** हवा से

अय ठण्डी हवा ! तू कभी तो खुशी के गीत गाती हुई उड़ती है और कभी शोकातुर ठण्डी आहें भरती हुई चलती है। तेरी आवाज तो हमारे कानों में पड़ती है लेकिन हमारी आँखें तुझे देख नहीं सकतीं। तेरा अस्तित्व अनुभव तो होता है लेकिन तू नज़र नहीं आती। तू प्रेम के उस सागर की तरह है जो हमारी आत्माओं को चारों ओर से घेरे हुए है लेकिन उन्हें डूबने नहीं देता। जो हमारे दिलों से खेलता है लेकिन हमारे दिलों में कोई व्याकुलता नहीं।

हवा ! तू टीलों के साथ-साथ ऊपर चढ़ती है और वादियों की साथी बनकर नीचे उतरती है। तू हरे-भरे मैदानों और लहलहाते खेतों में फैलती है। तेरे ऊपर चढ़ने में तेरे पक्के इरादे का हाथ है और उतरने में दया का भाव ! तेरे विस्तार में आनन्द और मेहरबानी मिले हुए हैं। तू उस बादशाह की तरह है जो कमजोरों के साथ सुस्ती से काम लेता है और घमण्डी तथा शक्तिशाली लोगों के सामने अपनी शक्ति का प्रदर्शन करता है।

हेमन्त ऋतु में तू वादियों में रोती फिरती है और तेरे रोने से वादी के सब वृक्ष रोने लग जाते हैं। सर्दी में तू तेजी से हमला करती है। और तेरे साथ प्रकृति की शक्ति हमला करती है। वसन्त में तू नाज-नखरे से चलती है और तेरी मृदुलता के कारण सारे खेत लहलहाने लगते हैं। और गर्मी में तू शान्ति और सन्तोष का नक़ाब ओढ़कर छुप जाती

है। और हम समझते हैं कि सूरज के तीर खाकर तू मर चुकी है और सूरज ने तुझे अपनी गर्मी का कफ़न पहना दिया है।

लेकिन इतना तो बता दे कि हेमन्त ऋतु में वृक्षों के वस्त्र छीनकर और उन्हें नंगा छोड़कर क्या तू उन पर रो रही थी या उनका मजाक उड़ा रही थी ?

सर्दी के मौसम में—बर्फ से ढकी हुई रातों के आस-पास तू प्रकोपित होकर घूम रही थी या प्रसन्नता से नृत्य कर रही थी ? वसन्त में क्या तेरी तबीअत कुछ ख़राब थी या उस प्रेमिका की तरह थी जो अपने प्रेमी से दूर रहने के कारण दुर्बल हो गई हो और ज़ोर-ज़ोर से ठण्डी आहें भरकर अपने प्रेमी की तरफ़ छोड़ रही हो ताकि उसे गहरी नींद से जाग्रत कर दे। और गर्मी के मौसम में क्या तू वास्तव में मर गई थी या फलों के दिलों और अंगूर की बेलों में जागकर हमारा तमाशा देख रही थी ?

× × ×

तू शहर की सँकरी और अँधेरी गलियों से बीमारियों के कीटाणु और ऊँचे-ऊँचे सब्ज़ाज़ारों से कलियों की मस्त सुगन्ध अपने साथ उड़ाकर लाती है। अच्छे दिल वाले ऐसा ही किया करते हैं कि जीवन की विपत्तियाँ धैर्य के साथ सहन करते हैं और उसी धैर्य के साथ अपनी ख़ुशियों से भी मिलते हैं।

तू गुलाब के सुर्ख़ फूल के साथ कानाफूसी करती रहती है—और उसे प्रकृति के वे रहस्य बताती है जिनको सिर्फ वही समझ सकता है। कभी तो वह परेशान होता है और कभी मुस्कराने लगता है। ख़ुदा की इंसानी आत्माओं के साथ ऐसी ही कानाफूसी करता रहता है।

तू कहीं तो आहिस्ता चलती है और कहीं प्रचंड आँधी की तरह। लेकिन तू ठहरती कहीं-नहीं। यही हालत इंसानी चिन्तन की है। उसका जीवन गतिमय है और सन्तोष उसके लिये मृत्यु का सन्देश है।

तू समुद्र की सतह पर कविताएँ लिखती है और फिर उनको मिटा देती है। दुनिया में कवि भी ऐसा ही किया करते हैं।

तू दक्षिण की ओर से प्रेम की तरह गर्म होकर आती है उत्तर की ओर से मौत की तरह ठण्डी। पूर्व में आत्माओं की तरफ़ कोमल रूप में उड़ती है और पश्चिम की तरफ़ प्रचण्ड रूप धारण कर लेती है। क्या तू भी समय की तरह बार-बार बदलती रहती है? या फिर दुनिया के चारों ओर का सन्देशवाहक, जो सब का सन्देश हमें सुनाती है?

तू रेगिस्तान में प्रचण्ड रूप धारण करके उड़ती है। कारवाँ के कारवाँ रौंद डालती है और फिर रेत के अन्दर उन्हें दफ़न कर देती है। बता तो क्या तू वही कोमल हवा है जो सुबह की किरणों के साथ धीरे से वृक्षों के कोमल पत्तों से उड़ती है? मीठे स्वप्नों की तरह वादी के मोड़ पर चलती है? तेरी मुहब्बत में कलियाँ तेरी तरफ़ झुकती हैं और वृक्षों की डालियाँ तेरे नशे में मस्त होकर झूमती हैं?

तू समुद्र की सतह पर हमला करती है। उसकी शान्त गहराइयों को गतिवान बनाती है। यहाँ तक कि जब क्रोध से उसके झाग निकलने शुरू हो जाते हैं तो तू उसका मुँह खोलती है। नावों और मानव की आत्माओं के कड़वे कौर उसके मुँह में फेंकती है। तो क्या तू वाक़ई वही हवा है जो अपने घरों के आसपास खेलने वाले बच्चों के बालों के साथ खेला करती है?

× × ×

आखिर तू हमारी आत्माओं, ठण्डी आहों और हमारे दिलों को किस ओर तेजी से उड़ाये लिये जा रही है? और आखिर तू हमारे दिलों की उड़ती हुई चिंगारियों से क्या काम लेना चाहती है? क्या तू उनको क्षितिज के पार ले जाना चाहती है? इस जिन्दगी से परे? या तू उनको जंगलों और भयानक बयाबानों की तरफ़ खींचकर ले जा

रही है, जहाँ तू उनको इधर-उधर फेंक देगी ताकि उनका नाम-निशान तक बाक़ी न रहे ?

रात की नीरवता में दिल अपने रहस्य तेरे सामने रखते हैं। सुबह के वक़्त आँखें अपनी पलकों की गति से तेरा स्वागत करती हैं। तो क्या तुझे दिलों के बतलाये हुए रहस्य और आँखों द्वारा देखे गये भेद याद हैं ?

एक बेचारा ग़रीब अपनी दीनता की सदायें, एक अनाथ अपने दर्द-नाक आर्तनाद और दुखी विधवा अपनी आहें तेरे सुपुर्द करते हैं। क्या तू भी उस धरती की तरह है कि हम जो भी उसके हवाले करते हैं, वह उसे अपने अन्दर समो लेती है ?

क्या तू मेरी यह फ़रियाद सुन रही है ? क्या तुझ पर मेरे इस आर्तनाद का कुछ असर हो रहा है ? क्या तू भी दुनिया के उन अत्याचारी धनिकों की तरह है कि ग़रीब उनके सामने हाथ फैलाते हैं तो वे आँखें फेर लेते हैं ? ग़रीबों की पुकार उनके कानों तक पहुँचती तो है लेकिन वे बहरे बन जाते हैं।

अय सुनने वाले के लिये जीवन के सन्देश ! क्या तू सुन रही है ?

*** आँसू और मुस्कराहट

सूरज ने हरे-भरे खेतों से अपना दामन समेट लिया। चाँद दूर क्षितिज पर प्रकट हुआ और उसके कोमल प्रकाश से खेतों का सौंदर्य निखर गया। मैं पास ही वृक्षों की ओट में बैठा वातावरण के इस परिवर्तन पर विचार कर रहा था। नीले आकाश पर सफ़ेद मोतियों की तरह फैले हुए तारों को वृक्षों की डालियों के बीच से देख रहा था। और दूर से नदी के बहने की आवाज आ रही थी।

जब पक्षी पत्तों से लदी डालियों में छुप गये, कलियों ने अपनी आँखें बन्द कर लीं और चारों ओर नीरवता छा गई तो मेरे कानों में किसी के क़दमों की चाप सुनाई दी। मैंने आँखें फेरकर देखा तो एक नवयुवक और एक नवयुवती को अपनी ओर आते हुए पाया। दोनों पास ही एक घने वृक्ष के नीचे बैठ गये। वे मेरी आँखों के सामने थे लेकिन मैं छुपा हुआ था।

थोड़ी देर के बाद नवयुवक ने चारों ओर देखा और सन्तोष की साँस लेकर कहने लगा --

"प्यारी! मेरे पास बैठ जा और मुझे अपनी मीठी-मीठी बातें सुना। मुस्करा, तेरी मुस्कराहट ही हमारे शानदार भविष्य का पता देती है। खुश हो! इसलिये कि जमाने की खुशी, हमारी ही खुशी से है। मेरी प्यारी! मुहब्बत में अविश्वास पाप है। मेरा विचार है कि तुझे मेरे बारे में शक है। लेकिन विश्वास रख कि यह चाँद की चाँदनी से प्रकाशित और हरे-भरे खेत तेरे ही होंगे। और बादशाहों के महलों

की तरह यह आलीशान महल तेरे ही अधिकार में होगा। गर्व से भरा हुआ दिल लेकर तू चमन की सैर किया करेगी और मेरे बहुमूल्य घोड़े तुझे खेल-कूद के मैदानों में लिये फिरेंगे।

प्रिये! मुस्करा, जैसे सोना मेरे ख़जाने में मुस्कराता है और मुझे ऐसी आँखों से घूरकर देख जैसे मेरे बाप के एकत्रित किये हुए मोती मुझे घूरा करते हैं।

प्यारी! कान लगाकर सुन ले। मेरा दिल तुझे अपनी फ़रियाद सुनाये बिना आराम नहीं करता। वे दिन आने वाले हैं जब हम असीम धन लेकर स्विट्ज़रलैण्ड के सुन्दर दृश्यों का आनन्द लूटेंगे। इटली के उद्यानों में घूमेंगे। नील के महलों और लिबनान की हरी-भरी वादियों में ऐश के दिन गुज़ारेंगे। वह दिन बहुत जल्द आने वाला है जब मैं तुम्हें बहुमूल्य आभूषणों और सुन्दर कपड़ों में सजा हुआ देखूँगा, जिन्हें देखकर दूर-दूर से आई हुई धनी औरतें और सुन्दर युवतियाँ तुझसे ईर्ष्या करने लगेंगी। क्या तू इन बातों से खुश नहीं हुई? आह, तेरी मुस्कराहट मुझे कितनी अच्छी लगती है! तेरे मुस्कराने से मेरी दुनिया जगमगा उठती है।"

थोड़ी देर बाद वह उठकर चलने लगा और नन्हीं-नन्हीं घास को अपने क़दमों के नीचे इस तरह रौंदने लगा जैसे सरमायादार ग़रीब का दिल रौंदा करता है।

वे दोनों मेरी आँखों से ओझल हो गये और मैं मुहब्बत की बातों में दौलत के हस्तक्षेप पर विचार करने लगा। मैं दौलत को इंसान के शैतानी विचारों का उद्गम और मुहब्बत को नेकी और प्रकाश का स्रोत समझ रहा था।

मैं इन्हीं विचारों में लीन था कि अचानक मेरे सामने से दो परछाइयाँ गुज़रती हुई दिखाई दीं। दोनों आगे जाकर बैठ गये। एक नवयुवक और एक कुमारी जो खेतों के उस तरफ़ से आये थे जहाँ ग़रीब किसानों की झोंपड़ियाँ थीं। थोड़ी देर तक नीरवता छाई रही। उसके बाद दिल की गहराइयों से ठण्डी आहों के साथ ये बातें सुनाई देने लगीं—

"प्यारी ! आँसू न बहा। प्रेम ने जब चाहा, हमारी आँखें खोल दीं और हमें अपना गुलाम बना लिया और प्रेम ही हमें धैर्य और बहादुरी प्रदान करेगा। आँसू रोक ले और धैर्य रख। हम प्रेम के धर्म पर ही एक दूसरे के सामने प्रेम की शपथ लेने आये हे। प्रेम के कारण ही हम दरिद्रता, दुर्भाग्य और विरह की कठिनाइयों में पड़े हुए हैं। मैं जमाने भर की विपत्तियों का सामना उस समय तक करता रहूँगा जब तक मेरे पास इतनी पूँजी एकत्रित न हो जाये जो तुझे भेंट कर सकूँ, जो हमें अपना जीवन व्यतीत करने के लिये काफ़ी हो।

प्रिये ! मुहब्बत के दरबार में—जो खुदा का दरबार है—हमारी ये ठण्डी आहें और गरम-गरम आँसू अवश्य स्वीकार होंगे और हमें निश्चय ही इनका उतना बदला मिलेगा जितने के हम पात्र हैं। अच्छा अब मैं चलता हूँ, इसलिये कि मुझे चाँद छुप जाने से पहले-पहले चले जाना चाहिये।"

इसके बाद एक बारीक आवाज सुनाई दी जिसमें ठंडी आहें मिली हुई थीं—एक सुन्दर युवती की आवाज—जिसमें मुहब्बत की वह सारी गर्मी मिली हुई थी जो प्रेम की भावना, विरह की तीव्रता और आशा की मधुरता से उसके दिल व जिगर में ठाटें मार रही थी। वह अपने प्रेमी से अलग होते हुए "अलविदा ! अलविदा !" पुकार रही थी।

दोनों प्रेमी अलग-अलग हो गये। मैं उसी वृक्ष के नीचे बैठा हुआ इस विचित्र दुनिया के विचित्र हालात पर विचार करता रहा।

उसी समय मैंने अपनी निगाहें ऊपर उठाईं और थोड़ी देर के लिये सोचने लगा। मैंने इसमें एक ऐसा भाव पाया जो असीम था। एक चीज जो धन-दौलत से खरीदी नहीं जा सकती। ऐसी चीज जिसे न हेमन्त के आँसू मिटा सकते हैं और न जाड़े का ग़म। ऐसी चीज जिसे न स्विट्जरलैण्ड के दृश्य पा सकते हैं न इटली के उद्यान। मैंने एक ऐसी चीज पा ली जो हमेशा सब्र से काम लेती हुई बसन्त में यौवन पर आती है और गर्मी में फल देती है।—मैंने उसमें मुहब्बत पाई।

प्रकृति के राग

*** गीत

मेरे दिल की गहराइयों में ऐसे गीत मचल रहे हैं जो शब्दों के वस्त्र पहनना पसन्द नहीं करते। ऐसे गीत जो दिल के खून से परवरिश पा चुके हैं। वह स्याही की मदद से कागज़ के पृष्ठ पर बनना नहीं चाहते जो मेरे दिल की प्रवृत्तियों के आसपास बारीक और स्वच्छ गिलाफ़ की तरह फैले हुए हैं। वे मेरी ज़बान से मुँह की झाग बनकर निकलना भी अच्छा नहीं समझते।

मैं भी उन्हें दिल से निकली हुई ठण्डी आहों के साथ मिलाकर फ़िज़ा में उड़ाना पसन्द नहीं करता। इसलिये कि फ़िज़ा की धूल और गर्द से वे धूसरित हो जायेंगे। मैं वे गीत किसे सुनाऊँ ? वे मेरे दिल के मकान में रहने के आदी हो चुके हैं। वे सुनने वालों के कानों की कठोरता क्योंकर सहन कर सकेंगे ? यदि तुम मेरी आँखों में आँखें डालकर देखो तो उन गीतों की गतिवान कल्पना की परछाइयाँ मेरी आँखों में फिरती दिखाई देंगी। और अगर तुम मेरी उँगलियों को छू दोगे तो उनके स्पन्दन से वे उँगलियाँ गतिवान पाओगे।

मेरी सब हरकतों में इन्हीं गीतों का प्रभाव प्रकट हो रहा है। जिस तरह कि समुद्र के पानी में सितारों का प्रतिबिम्ब साफ़ नज़र आता है और वह मेरे आँसुओं के साथ बहकर निकलते रहते हैं। जिस तरह फूल की सुगन्ध धूप पड़ने पर ओस के साथ उड़कर फ़िज़ा में फैलती है।

ऐसे गीत जो नीरवता में सुनाई देते है और कोलाहल में उनकी आवाज कानों में नहीं पड़ती। स्वप्न की दुनिया में जिन्हें अनुभव किया जा सकता है और जाग्रत अवस्था में उनका चिह्न तक दिखाई नहीं देता।

अय दुनिया के बसने वालो! ये मुहब्बत के गीत हैं, कौन है जो इन्हें पढ़कर सुनाये, बल्कि कौन है जो इन्हें गाकर लोगों के कानों तक पहुँचाये?

ये चमेली के फूलों से ज्यादा मृदुल और कुमारी के रहस्य से अधिक गम्भीर हैं।

—कौन है वह जो खुदाई के गीत गा सके!

*** मौजों के गीत

मैं और समुद्र का किनारा, एक दूसरे के आशिक़ हैं। मुहब्बत हमें मिलाती है और तीव्र हवायें हमें अलग करती हैं। मैं दूर नीले क्षितिज के किनारों से इसलिये आती हूँ कि अपनी चाँदी जैसी झाग को उसकी सोने की तरह सुर्ख़ चमकती हुई रेत से मिला दूँ। और अपनी ठण्डक से उसके दिल की गर्मी दूर कर दूँ।

सुबह सवेरे मैं इश्क़ और मुहब्बत के दरिया में डूबे हुए गीत अपने उस महबूब के कानों तक पहुँचाती हूँ और वह मुझे अपने सीने से लगा लेता है। शाम के वक़्त मैं शौक़ के राग उसे सुनाती हूँ और वह मेरा चुम्बन लेता है।

मैं हर वक़्त इश्क़ की गर्मी और विरह की आग में आहें भरती रहती हूँ और मेरा प्रेमी मुझे धैर्य का उपदेश देता है और वीरता का पाठ पढ़ाता है।

समुद्र का चढ़ाव आता है और मैं अपने प्रेमी से गले मिलती हूँ। और फिर उसका उतार शुरू होता है और मैं उसके क़दमों पर अपना सर रख देती हूँ।

मैंने अपने जीवन में समुद्र पर उड़ते हुए, ऊँचे-ऊँचे टीलों पर बैठ-कर, चमकते हुए तारों का तमाशा देखने वाले पक्षियों के आस-पास अनेकों बार नृत्य किया है। और कई बार जब अभागे आशिक़ की फ़रियाद सुनी है तो उसके साथ मिलकर रोई हूँ और ठण्डी आहें भरी हैं।

मैंने कई बार निस्तब्ध टीलों को पुकारा लेकिन उन्होंने मेरी पुकार नहीं सुनी। मैंने उन्हें हँसाने की कोशिश की लेकिन उनके होंटों पर मुस्कराहट के लक्षण भी दिखाई न दिये। मैंने समुद्र के भँवर में फँसी हुई बेजान लाशों को निकालकर जिन्दा इंसानों के सामने रखा और सुन्दर औरतों के सौंदर्य को असीम करने के लिये पानी की तह से मोती निकाले, लेकिन किसी ने मेरी ओर ध्यान नहीं दिया।

रात की नीरवता में जब दुनिया की बसने वाली मानव जाति, नींद की बदमस्ती में बेसुध पड़ी सोती है, मैं जागती हुई कभी गीत गाती हूँ और कभी ठण्डी आहें भरती हूँ।

अफ़सोस है कि मुझे इस जागने ने खत्म कर दिया लेकिन याद रखो, मैं आशिक़ हूँ और इश्क़ नाम है बेदारी और जागते रहने का।

यही मेरा जीवन है और यही उसका उद्देश्य!

*** नेकी के गीत

इन्सान मेरा और मैं इंसान का महबूब हूँ। मैं उसका उत्सुक और वह मेरा आशिक़ है। लेकिन अफ़सोस ! उसकी मुहब्बत में मेरा एक प्रतिद्वन्दी भी है जो मुझे कष्ट पहुँचाता है और उसे भी विपदा में डाले रखता है। वह एक बाग़ी शक्ति है—यानी भूत। जहाँ हम जाते हैं, वह हमारे पीछे-पीछे आता है और हमें एक दूसरे से दूर फेंकने का प्रयत्न करता रहता है। मैं—खुले मैदानों में—वृक्षों के नीचे और समुद्र के किनारे अपने महबूब—इंसान को तलाश करती हूँ—लेकिन उसे नहीं पाती इसलिये कि भूत उसे धोखा देकर शहर की आबादी की ओर ले गया है—भीड़ की तरफ़—विकार और दुर्भाग्य की तरफ़।

मैं उसे—इंसान को—अध्यात्म की पाठशालाओं और साइंस की आराधनागाहों में ढूँढ़ती हूँ लेकिन वह नहीं मिलता। इसलिये कि भूत, जो मिट्टी के वस्त्र पहने रहता है—उसे घमण्ड और अभिमान के उद्गम की तरफ़ खींचकर ले गया है।

मैं निस्पृहता और सन्तोष की हरी-भरी वादियों में उसकी तलाश करती हूँ लेकिन वह यहाँ भी नहीं है। इसलिये कि मेरा दुश्मन—भूत—उसे लोलुपता के क़ैदख़ाने में बन्द कर चुका है।

सुबह के सुहाने वक़्त में जब कि पूर्व मुस्कराता है—मैं उसे बुलाती हूँ, लेकिन वह मेरी आवाज़ नहीं सुनता। इसलिये कि बेसुधी की नींद से उसकी आँखें भारी होती हैं। शाम के वक़्त जब नीरवता छा जाती है, कलियाँ सो जाती हैं—मैं फिर उसे पुकारती हूँ, लेकिन वह मेरी

ओर ध्यान नहीं देता—इसलिये कि कल की चिन्ता में उसका मन व्यस्त रहता है।

वह मेरा प्रेमी है। मुझसे मुहब्बत करता है—लेकिन वह अपने कामों में मेरी तलाश करता है। हालाँकि मैं खुदा के कर्मों में ही मिल सकती हूँ। वह विवश मजदूरों की खोपड़ियों पर—सोने और चाँदी के ढेरों के बीच, निर्माण किये गये महल में मुझसे मिलने की इच्छा रखता है—लेकिन मैं उसे समुद्र के किनारे, प्राकृतिक मैदान के स्वतन्त्र वातावरण में ही मिल सकती हूँ। वह उपद्रवी और खूनी अत्याचारियों के जमघटे में मेरा प्यार लेना चाहता है, लेकिन मैं उसे अकेले में—पवित्र कलियों ही के सामने अपना प्यार दे सकती हूँ। वह बहाने और ढोंग को मेरे और अपने बीच साधन बनाना चाहता है—लेकिन मैं केवल परोपकारी—नेक अमल ही को साधन बनाना चाहती हूँ।

मेरे महबूब ने मेरे शत्रु—भूत से आर्तनाद करने की शिक्षा पाई है—लेकिन मुझे विश्वास उस समय आयेगा जब उसके दिल की आँखों से मुहब्बत के आँसू गिरेंगे। और उसकी आहें उसके दिल की गहराइयों से निकलेंगी—मैं उस वक़्त समझूँगी कि महबूब मेरा है और मैं सिर्फ़ उसी की हूँ।

*** इंसान के गीत

"तुम बेजान थे। फिर तुम में जान डाली। वही फिर तुम्हें मारेगा और फिर ज़िन्दा करेगा फिर तुम उसी की तरफ़ लौटाये जाओगे।"

—कुरान शरीफ़

मैं आदि से हूँ—आज भी हूँ और अन्त तक रहूँगा—मेरे अस्तित्व का कहीं अन्त नहीं।

मैं असीम फ़िज़ा में तैरता रहा, काल्पनिक दुनिया में उड़ता रहा, ज्योति के स्रोत के निकट तक पहुँच गया लेकिन अब मैं भूत का क़ैदी हूँ।

मैंने कंफ्युशस की शिक्षाएँ सुनीं। ब्रह्मा के दर्शन को समझा—जो बुद्ध के पास अध्यात्म के वृक्ष के नीचे बैठा रहा। लेकिन अब मैं अस्वीकृति और मूर्खता के साथ मुक़ाबले में लगा हुआ हूँ। जब ख़ुदा का नूर मूसा के सामने प्रकट हुआ तो मैं उस समय नूर पर ही था। मैंने अरदन के रास्तों में रहकर नासरी के चमत्कार देखे और मदीने में रहकर हज़रत मुहम्मद के वचन सुने लेकिन अब मैं जिज्ञासा का क़ैदी हूँ।

मैंने काबुल के आलीशान महल, मिस्र की शान और यूनान की महानता अपनी आँखों से देखी। लेकिन इन तमाम महानताओं में दुर्बलता, तिरस्कार और घृणा साफ़ नज़र आई। मैं मिस्र के जादूगरों,

असवर के ज्योतिषियों और फिलिस्तीन के अम्बियाओं के साथ बैठा रहा और हिकमत के गीत गाता रहा। हिन्द पर उतरी हुई हिकमत मैंने जबानी याद कर ली। अरब के रहने वालों के दिलों से निकले हुए शेर मैंने याद कर लिये। पश्चिमी देशों के लोगों की जबान से निकले हुए संगीत को मैंने अपने दिल में जगह दी—लेकिन मैं फिर भी अंधा ही रहा और मुझे कुछ नजर न आया। बहरा रहा और कुछ न सुना। लालची विजेताओं के अत्याचार सहन किये। अत्याचारी शासकों के अत्याचार सहे। बागी अभिमानियों के आगे सर झुकाया—लेकिन मैं फिर भी जमाने का मुक़ाबला करने से विवश ही रहा।

मैंने यह सब कुछ देखा और सुना जब मैं बच्चा था और शीघ्र ही मैं अपनी जवानी के कर्मों का भी निरीक्षण करूँगा। लेकिन बहुत जल्द मेरा बुढ़ापा आयेगा। मैं कमाल तक पहुँचूँगा और खुदा की तरफ़ लौट जाऊँगा।

मैं आदि से हूँ—अब भी हूँ और जमाने के अन्त तक रहूँगा। मेरे अस्तित्व का कोई अन्त नहीं।

——

*** वर्षा के गीत

मैं चाँदी का सफ़ेद चमकता हुआ तारा हूँ। खुदा मुझे ऊपर से धरती पर फेंक देता है—तबीअत मुझे पकड़कर वादियों में बहा देती है।

मैं म······ के ताज का बिखरा हुआ मोती हूँ। बादल मुझे चुरा लाया और खेती में बिखेर दिया।

मैं रोती हूँ तो हरे-भरे टीलों के चेहरों पर मुस्कराहट खेलती है और मैं नीचे गिरती हूँ तो क़लियाँ अपनी गोद में उठा लेती हैं।

बादल और खेत—दोनों एक दूसरे के आशिक़ हैं, मैं उनके बीच दूत हूँ। मैं बरसती हूँ तो एक की प्यास बुझाती हूँ और दूसरे की गर्मी को कम करती हूँ।

बिजली की कड़क मेरे आने की शुभ सूचना देती है और इन्द्र धनुष मेरी यात्रा समाप्त होने का पता देता है—ऐसे ही विलक्षण तत्त्वों से दुनिया के जीवन का आरम्भ होता है और शान्तिमय मृत्यु के हाथों उसका अन्त होता है।

मैं समुद्र के हृदय से उठकर आँधी के परों पर उड़ती हूँ और जब कोई सुन्दर उद्यान मेरे सामने आता है तो मैं वहाँ गिर पड़ती हूँ। उसकी कलियों के चुम्बन लेने लग जाती हूँ और उसकी डालियों से गले मिलती हूँ।

नीरवता के समय—मैं अपने कोमल और मृदुल हाथों से रौशन-दानों के शीशों को छेड़ती हूँ और उनसे एक ऐसा राग निकलता है जिसे भावुक हृदय ही सुन सकते हैं।

हवा की गर्मी मेरे जन्म का कारण है लेकिन मैं हवा की गर्मी की क़ातिल हूँ। ऐसे ही औरत अपनी उस शक्ति ही के द्वारा विजय प्राप्त करती है जो मर्द की प्रदान की हुई होती है।

मैं समुद्र की ठण्डी आह हूँ—आकाश के आँसू हूँ और खेती की मुस्कराहट हूँ—उसी प्रकार मुहब्बत—दिल की प्रवृत्तियों के समुद्र की ठण्डी आह है—चिन्तन के आकाश का आँसू है और हृदय की खेती की मुस्कराहट।

*** कवि की आवाज़

शक्ति मेरे दिल की गहराइयों में बीज बोती है। मैं उस खेती को काटता हूँ और उसके गुच्छों को एकत्रित करके भूखे इंसानों में वितरित किया करता हूँ। आत्मा इस छोटे से प्याले को भरती है और मैं उसकी शराब लेकर प्यासों को तृप्त करता हूँ। आकाश उस चिराग़ को तेल से भरता है, मैं उसे जलाता हूँ और राहगीरों के लिये उसे रात के अंधकार में अपने घर की खिड़की में रख लेता हूँ। मैं यह सब काम इसलिये करता हूँ कि इन्हीं से मेरा जीवन है। और जब ज़माना मुझे इन कामों से रोकता है और मैं रातों के हाथों क़ैदी बन जाता हूँ तो मौत माँगने लगता हूँ। इसलिये कि बाग़ी अनुयायियों के पैग़म्बर और अपने ही लोगों में रहने वाले अनजान शायर के लिये मौत से बेहतर कोई चीज़ नहीं।

इंसान तेज़ हवाओं की तरह शोर मचाते हैं और मैं धैर्य से ठण्डी आहें भरता हूँ। इसलिये कि मैं समझता हूँ कि ज़माने के एक ही झकोले में इन हवाओं की तीव्रता ख़त्म हो जायेगी लेकिन ठण्डी आहें ख़ुदाई हाथों में हमेशा-हमेशा बाक़ी रहेंगी।

इंसान बर्फ़ की तरह ठण्डे तत्त्व से मिलते हैं। और मैं मुहब्बत की गर्मी की खोज में हूँ कि उसे अपने सीने से लगाऊँ ताकि वह मेरी पस-लियों को खा ले और मेरे जिगर को काट दे। इसलिये कि मैंने देखा है कि तत्त्व तो इंसान को बिना कष्ट के मार देते हैं लेकिन मुहब्बत इंसान को मुसीबत में उलझाकर जीवन प्रदान करती है।

इंसान विभिन्न जातियों और कबीलों में बँटे होते हैं और विभिन्न देशों और शहरों से सम्बन्धित होते हैं लेकिन मैं स्वयं को एक ही शहर में अजनबी पाता हूँ। मैं अपनी जाति का अकेला व्यक्ति हूँ। सारी धरती मेरा देश है। और सब इंसान मेरे क़बीले के हैं। इसलिये कि मुझे मालूम है कि इंसान अशक्त है और यह उसकी मूर्खता है कि वह अपने आपको अलग-अलग टुकड़ियों में बाटता है। और धरती भी तंग है उसे हुकूमतों और देशों में बाटना मूर्खता है।

मानव जाति आत्मा को खत्म करने और शरीर की दुनिया आबाद करने में व्यस्त है। इस काम में इंसान एक दूसरे की मदद करने में लगा हुआ है। और मैं अकेला सबका शोक-गीत पढ़ता हूं। मैं कान लगाकर सुनता हूं तो अपने अन्तःकरण से मुझे एक आवाज सुनाई देती है जो कहती है :—

"जिस तरह मुहब्बत इंसानी दिल को विपत्तियों में जकड़कर जीवन देती है—उसी प्रकार मूर्खता उसे अध्यात्म का मार्ग दिखाती है। विश्वास रखो कि ये विपत्तियाँ और यह मूर्खता एक बड़े आनन्द और पूर्ण अध्यात्म का सूचक है। इसलिये कि खुदा ने सूरज के नीचे कोई वस्तु बेकार पैदा नहीं की।"

: २ :

मैं अपने देश का अभिलाषी हूँ। उसके सौंदर्य के कारण अपने देश-वासियों से प्रेम करता हूँ। लेकिन जब मेरा राष्ट्र राष्ट्रीय धर्मान्धता की पट्टी अपनी आँखों पर बाँधकर किसी निकटवर्ती राष्ट्र पर हमला करता है, वहाँ के लोगों के जान-माल को हानि पहुँचाता है, लोगों को क़त्ल करता है, बच्चों को अनाथ और स्त्रियों को विधवा बनाता है, वहाँ की धरती को वहीं के वासियों के खून से तृप्त करता है और वहाँ के गिद्धों को उसी देश के नवयुवकों का गोश्त खिलाता है, तो उस समय मुझे अपने देश से भी घृणा हो जाती है और देशवासियों से भी।

मैं अपने जन्म-स्थान का जिक्र सुनकर प्रसन्न होता हूं और जिस घर में मेरा लालन-पालन हुआ था उसका अभिलाषी रहता हूँ। लेकिन जब कोई यात्री गुजरते हुए उस घर में शरण माँगने लगता है और वहाँ के रहने वालों से जीवित रहने भर के लिये थोड़े से अन्न की याचना करता है और उस समय उसे धक्के मारकर निकाल दिया जाता है तो मैं—उस समय—उस घर का शोकगीत पढ़ने लगता हूँ—उस शौक़ को अपने दिल से निकाल देता हूँ और अपने दिल से कहता हूँ—

"वह घर जो किसी भूखे को रोटी का एक टुकड़ा देने में कृपणता से काम लेता है और बिस्तर माँगने वाले को बिस्तर देने में आनाकानी करता है, वह घर नष्ट-भ्रष्ट कर देने के योग्य है।"

मुझे अपने देश से थोड़ा-सा प्रेम है और उसी कारण मैं अपने जन्म-स्थान से भी प्रेम करता हूँ और मुझे चूँकि अपने असली देश—सारी धरती से—मुहब्बत है, इसलिये मुझे अपने मालिक से भी प्रेम है। मै धरती से इसलिये प्रेम करता हूँ कि वह मानवता की—धरती पर आत्मा की—चरागाह है—लेकिन मानवता—धरती पर आत्मा का प्रतिबिम्ब—वीरानों में खड़ी है। वह अपने नंगे शरीर को फटे-पुराने कपड़ों से ढँकने का प्रयत्न कर रही है। गर्म-गर्म आँसू उसके पीले गालों पर बहते रहते हैं। वह अपने बेटों—इंसानों—को ऐसी करुण आवाज़ से अपनी ओर बुलाती है जिससे सारे आकाश की फ़िज़ा आर्तनाद की सदाओं से भर जाती है। लेकिन उसकी औलाद—इंसान तरफ़दारी के गीतों में मस्त पड़े हैं और उसकी फ़रियाद नहीं सुनते। तलवार की झंकारों में वह उसके आँसुओं की तरफ़ देख भी नहीं सकते। दूर अकेली बैठी हुई मानवता राष्ट्र को अपनी सहायता के लिए बुलाती है लेकिन वह सुनते ही नहीं और यदि भूले-भटके से किसी इंसान ने उसकी फ़रियाद सुन भी ली और उसके निकट आकर उसके आँसू पोंछने लगा और उसकी विपत्तियों में उसे धैर्य दिलाने की कोशिश करने लगा

तो कौम कहने लगी—"उसे छोड़ दो—आँसू बुजदिल और कमजोर पर ही अपना असर करते हैं।"

मानवता धरती पर परमात्मा का रूप है। यह आत्मा कौमों के बीच फिरकर उनको मुहब्बत का रास्ता दिखाती है। जो जीवन के रास्तों की मार्ग दर्शक है लेकिन लोग उसकी बातों और शिक्षाओं पर हँसते हैं और उसका मजाक उड़ाते हैं। यही वह आत्मा है जिसकी आवाज कल नासरी ने सुनी तो लोगों ने उसे फाँसी के तख्ते पर लटका दिया। सुकरात ने उसकी आवाज में आवाज मिलाई तो उसे जहर दे दिया गया और जिसकी आवाज आज भी कुछ लोगों ने सुनी और वे नासरी और सुकरात के दर्शन को मानने लगे। लोगों को इस परम आत्मा की तरफ पुकार-पुकारकर बुलाया। लोग उन्हें कत्ल तो नहीं कर सके, लेकिन यह कहकर उनका मजाक उड़ाने लगे कि "मजाक़ कत्ल से अधिक कठोर और कड़वा होता है।"

यरूशलम के निवासी नासरी को क़त्ल न कर सके और न वे सुकरात को खत्म कर सके। वे दोनों तो हमेशा-हमेशा जीवित रहेंगे। इसी तरह मानवता की आवाज में आवाज मिलाने वालों के ऊपर इस मजाक़ का भी कोई असर नहीं होगा और वे हमेशा हमेशा तक जिन्दा रहेंगे।

: ३ :

हम दोनों एक ही पवित्र आत्मा की सन्तान हैं और मेरे भाई हैं। हम दोनों एक ही प्रकार की मिट्टी के बने हुए शरीरों के क़ैदी हैं। और यही कारण है कि तुममें और मुझमें कोई अन्तर नहीं है। तुम जीवन के मार्ग में मेरे साथी हो और इस यथार्थ को जो बादलों के पीछे छुपा हुआ है, मालूम करने में मेरे सहायक हो। मेरे भाई! तुम इंसान हो और मैं तुम्हें दिल से चाहता हूँ।

तू मेरे बारे में जो चाहे कहता रहा। दुनिया अपना फ़ैसला देगी और तेरा वक्तव्य उसके फ़ैसले और उसके इंसाफ के लिये मार्ग-दर्शक सिद्ध होगा।

मुझसे जो चाहे लेता रह। इसलिये कि तू मुझसे वही माल छीनेगा जिस पर तेरा भी अधिकार है। यदि तू थोड़े से हिस्से पर राजी हो जाता है तो निश्चय ही उसका कुछ हिस्सा तेरा है।

मेरे साथ जो चाहे कर। इसलिये कि तू मेरी वास्तविकता पर हाथ मारने में असमर्थ है। तू मेरा खून बहादे, मेरे शरीर को जलादे लेकिन तू न मेरे दिल को कष्ट पहुँचा सकता है न उसे मार सकता है। मेरे हाथों में लोहे की हथकड़ियाँ और पैरों में बेड़ियाँ डाल दे और मुझे क़ैदखाने की अँधेरी कोठरी में बेशक बन्द कर दे, लेकिन याद रख तू मेरे विचारों को क़ैद करने में सफल नहीं हो सकता। वह तो आकाश में उड़ने वाले प्रातः समीर की तरह स्वतन्त्र है। न उनकी कोई आवाज है न सीमा।

तू मेरा भाई है और मैं तुझे चाहता हूँ।

मैं तुझे मस्जिद में सजदा करते हुए, आराधनाघरों में झुके हुए और अपने गिरजाघर में पूजा करते हुए—हर हालत में चाहता हूँ—इसलिए कि हम दोनों एक ही धर्म—आत्मा—की सन्तान हैं।

मैं तुमसे तेरी उस वास्तविकता के कारण प्रेम करता हूँ जो तूने अपनी बुद्धिमानी से प्राप्त की है। वह वास्तविकता, जिसको मैं इस समय अपनी दृष्टिहीनता के कारण नहीं देख सकता, लेकिन मेरे दिल में उसकी इज्जत है। इसलिए कि वह दिल के कर्मों में से है। वह वास्तविकता जो परलोक में मेरी वास्तविकता से मिलेगी और कलियों की मस्त सुगन्ध की तरह एक-दूसरे में घुल-मिल जायेगी, प्रेम और सौंदर्य के शाश्वत जीवन के कारण वे दोनों भी एक ही वास्तविकता के रूप में अन्त तक जीवित रहेंगी।

मैं तुझसे इसलिये मुहब्बत करता हूँ कि मैंने तुझे कठोर-दिल शक्तिशालियों के सामने दुर्बल पाया। लोलुप धनिकों की आलीशा महलों की छाया में तुझे विवश और निस्सहाय देखा। तेरी दशा देखकर मैं रोया लेकिन अपने आँसुओं के पार तुझे न्याय के हाथों में जो तुझे देखकर मुस्करा रहा था और तेरे लिए परेशान होने वालों की मूर्खता का मजाक उड़ा रहा था।

तू मेरा भाई है और मैं तुझे चाहता हूँ।

: ४ :

तू मेरा भाई है। मैं तुझे चाहता हूँ। फिर तू क्यों मुझसे लड़ता है। आखिर तू क्यों मेरे देश की तरफ़ आता है और मुझे अपमानित करने का इरादा रखता है। क्या उन लोगों के लिये जो तेरी बातों से प्रतिष्ठा और तेरे कष्टों से प्रसन्नता प्राप्त करने की कोशिश करते हैं? तू क्यों अपनी जीवन-साथी—पत्नी—और अपने छोटे-छोटे मासूम बच्चों को छोड़कर मौत के पीछे-पीछे घर से दूर किसी और की धरती पर जाता है? क्या उन अत्याचारी शासकों के लिये जो तेरे खून से सत्ता खरीदना और तेरी माँ की व्यथाओं से अपने लिये उच्च स्थान प्राप्त करना चाहते हैं? लेकिन क्या यही उच्च स्थान है कि इंसान अपने भाई की जान ले ले।

वह कहते हैं कि भाई! अपने अस्तित्व की रक्षा एक स्वाभाविक चीज है। लेकिन फिर मैं उन्हीं लोगों को मैं देखता हूँ कि यह तुझे अपने अस्तित्व के मिटाने पर इसलिये राजी कर लेते हैं कि तू अपने भाइयों को उनका गुलाम बना दे। और वह यह भी कहते हैं कि बाक़ी रहने के लिये जरूरी है कि दूसरों के अधिकारों पर छापा मारा जाये। लेकिन मैं कहता हूँ कि दूसरों के अधिकारों की रक्षा ही अच्छे कर्मों में से एक कर्म है। मैं यह भी कहता हूँ कि तू मेरी जिन्दगी से दूसरों को मौत आती है तो फिर मेरे लिये मौत अधिक आनन्ददायक और प्रिय है।

अहंकार ही अंधी तरफ़दारी के जन्म का कारण बना और तरफ़दारी के पंजे में आकर लोग आपस में लड़ने-झगड़ने और एक दूसरे को गुलाम बनाने पर आमादा होते हैं। मूर्खता को प्रेम और अत्याचार को बुद्धि और न्याय के पराधीन बनाना चाहता है। लेकिन वह ऐसे शासन के विरुद्ध है जो अत्याचार और अज्ञान को और अधिक फैलाए।

वह आधिपत्य जिसने बाबुल की ईंट से ईंट बजा दी—यरूशलम की बुनियादों को जड़ से उखेड़ दिया। वह आधिपत्य जिसने वह ख़ूनी अत्याचारी पैदा किये जिनको लोग महान् व्यक्तित्व मानने लगे और किताबों में उनके नाम मोटे-मोटे अक्षरों में लिखे जाने लगे—और जिस तरह धरती ने—उस समय, जबकि वे इसी धरती को बेगुनाहों के पवित्र ख़ून से रंग रहे थे, अपनी सतह पर चलने से नहीं रोका—उसी तरह किताबें उनकी लड़ाइयों के क़िस्सों को अपने पृष्ठों पर जगह देंगी···।

फिर अय भाई ! तुम इस धोखा देने वाली तरफ़दारी से कितना धोखा खा चुके इस प्रकार की हानिकारक चीज़ से कितनी हानि उठा चुके ? वास्तविक आधिपत्य केवल ज्ञान है जो लोकप्रिय, न्यायपसन्द, प्राकृतिक क़ानून का रक्षक हो। क्या यह भी कोई न्याय है कि क़ातिल को तो तुम क़ानून के अनुसार क़त्ल करते हो, लुटेरों को क़ैद करते हो। लेकिन फिर ख़ुद ही एकत्रित होकर अपने पड़ोसी देशों पर हमला करके हज़ारों बेगुनाहों का ख़ून करते हो और उनका माल लूटते हो।

आख़िर तरफ़दारी रखने वाले इनके बारे में क्या हुक्म देते हैं ? जो स्वयं क़ातिल होते हुए दूसरे क़ातिलों को फाँसी पर लटकाते हैं और लूटने वालों को क़ैद करते हैं, हालाँकि वह ख़ुद लुटेरे हैं।

तुम मेरे भाई हो। और मैं तुम्हें चाहता हूँ और मुहब्बत, न्याय ही का दूसरा नाम है। तो यदि मैं तुमसे मुहब्बत करते हुए हर जगह न्यायी न रहूँ तो विश्वास रखो कि मैं वह धूर्त हूँगा जो मुहब्बत के बेहतरीन कपड़ों को घमण्ड के कपड़ों में छिपाता हो।

***सौन्दर्य के गीत

मैं प्रेम का तर्क, मन की शराब और दिल का भोजन हूँ।

मैं गुलाब का वह फूल हूँ जो दिन चढ़े खिल जाता है। कुमारी युवतियाँ उसे तोड़ती हैं, उसके चुम्बन लेती हैं और फिर उसे अपने सीने से लगा लेती हैं।

मैं सौभाग्य का शानदार महल हूँ। मैं खुशी का स्रोत हूँ और ऐश्वर्य का उद्गम हूँ।

मैं नाज़नीन कुमारी के होंटों पर कोमल मुस्कराहट हूँ। नवयुवक मुझे देखता है तो वह दुनिया की विपत्तियाँ भूल जाता है और उसका जीवन मधुर स्वप्नों की दुनिया में बदल जाता है।

मैं शायर के दिल की परोक्ष की आवाज़ हूँ। चित्रकारों और संगीतज्ञों का गुरु हूँ।

मैं मासूम बच्चे की आँखों में समाई हुई वह ज्योति हूँ कि जब माँ उस पर नज़र डालती है तो खुदा की आराधना—उसके सामने माथा टेकने और उसे धन्यवाद देने में व्यस्त हो जाती है।

मैं आदम के सामने हव्वा के रूप में प्रकट हुआ और उसे अपना गुलाम बनाया और सुलेमान के सामने उसकी प्रेमिका के रूप में प्रकट हुआ और उसे शायर और दार्शनिक बनाया।

मैं हेलाना के सामने मुस्कराया तो तरवादा को बर्बाद किया और क़िलोपतरा को मुहब्बत का ताज पहनाया तो नील की सारी वादी मुहब्बत के गीतों से गूँज उठी।

मैं ज़माने की तरह हूँ। आज एक चीज़ बनाता हूँ, कल उसे मिटा देता हूँ। मैं खुदा हूँ—पैदा करता हूँ और मारता हूँ। मैं बनफ़शा की कली की ठण्डी आहों से अधिक कोमल और प्रचण्ड आँधी से अधिक कठोर हूँ।

लोगो! सुनो, मैं ही यथार्थ हूँ—अच्छी तरह समझ जाओ कि मैं ही यथार्थ हूँ।

*** उपसंहार

मेरा मन, मेरा वह साथी है कि जब दुनिया की विपत्तियाँ तीव्रता धारण कर लेती हैं तो वह मुझे धैर्य बँधाता है और जब जीवन के कष्ट मुझे घेर लेते हैं तो वह सहानुभूति प्रकट करता है। जो अपने मन का साथी न हो वह लोगों का दुश्मन होगा और जिसे अपनी जाति में से कोई मित्र और सहायक न मिला हो वह निराश होकर मरेगा। इसलिये कि जीवन इंसान के अन्दर से निकलता है—बाहर से कभी नहीं आता।

मैं इसलिये आया कि कुछ बातें सुनाऊँ और मैं सुनाकर रहूँगा। यदि मृत्यु मुझे उसके कहने का अवसर नहीं देगी तो आने वाला समय उसे कहेगा। इसलिये कि जमाना जीवन की किताब में कोई बात छुपी हुई नहीं छोड़ता।

मैं इसलिये कह आया था कि प्रेम की महानता और सौन्दर्य के प्रकाश में जीवित रहो और देखो मैं जिन्दा हूँ। दुनिया की कोई शक्ति मुझे अपने जीवन से दूर नहीं फेंक सकती। यदि कोई मुझे अंधा कर दे तो मैं प्रेम के गीत और सौन्दर्य की मधुर आवाजें सुनकर ही रहूँगा। यदि कोई मुझे बहरा करदे तो मैं प्रिय मित्रों की ठण्डी साँसों से मिली हुई हवा को छोड़कर और सौन्दर्य की सुगन्ध सूँघकर खुशी के दिन काटूँगा। और यदि कोई हवा को भी मेरे पास आने से रोक दे तो मैं अपने मन के साथ ही मिलकर जीवन व्यतीत कर दूँगा। आखिर दिल प्रेम और सौन्दर्य ही की पैदावार है।

मैं इसलिये आया था कि मैं सबका रहूँ, सब के लिये रहूँ। आज मैं अकेले में जो काम करूँ भविष्य लोगों के सामने उसका एलान करदे और जो कुछ मैं इस वक़्त अपनी एक ज़बान से कहता हूँ—भविष्य उसे अनेक ज़बानों से प्रसिद्ध करे।

हमारे

उत्कृष्ट प्रकाशन

उर्दू-काव्य

दीवाने ग़ालिब	[मुग़नी अमरोहवी व नूरनबी अब्बासी]	६·००
उर्दू की सर्वश्रेष्ठ ग़ज़लें	[नूरनबी अब्बासी]	२·५०
ज़फ़र की ग़ज़लें	[नूरनबी अब्बासी]	२·५०
मीर की ग़ज़लें	[बृजेन्द्र]	२·५०
फ़ैज़ की ग़ज़लें	[नूरनबी अब्बासी]	२·५०

राजनीति व इतिहास

ऐटम और नेहरू	[बसन्तकुमार चटर्जी]	२·५०
नेहरू विश्वशान्ति की खोज में	[ओमप्रकाश गुप्ता]	४·५०
बाचा ख़ान	[फ़ारिग़ बुख़ारी]	६·००
मेवाड़	[टॉड]	३·७५

जीवन-उपयोगी

आपका व्यक्तित्व	[आनन्दकुमार]	४·००
जीना सीखो	[देसराज व गंधर्व]	३·००

विज्ञान

वैज्ञानिक चाँद [सचित्र]	[बसन्तकुमार चटर्जी]	१·५०
चन्द्रलोक [सचित्र]	[बसन्तकुमार चटर्जी]	२·५०
विज्ञान के चमत्कार [सचित्र]	[देसराज व गन्धर्व]	०·६२
विज्ञान के मनोरंजन [सचित्र]	[श्री शरण]	०·६२

नाटक व एकांकी

डाक घर	[रवीन्द्रनाथ टैगोर]	०·६२
जब पर्दा उठा	[प्रकाश पंडित]	४·२५
मेरे नाटक	[रवीन्द्रनाथ टैगोर]	३·५०

शरत् के नाटक	[शरत् चन्द्र चटर्जी]	५·५०
मीर साहब की ईद	[शौकत थानवी]	३·२५
राई का पहाड़	[देसराज]	०·३७

कहानी साहित्य

उड़ानें	[कृष्ण चन्द्र]	३·५०
एक खत एक खुशबू	[कृष्ण चन्द्र]	३·२५
सीमान्त	[रवीन्द्रनाथ टैगोर]	२·५०
चाँद सितारे	[रवीन्द्रनाथ टैगोर]	२·५०
आँचल और आँसू	[शिक्षा रानी 'सीगम']	३·५०
पागल	[खलील जिब्रान]	१·५०
लायसैंस	[मण्टो]	३·५०
दो गज़ ज़मीन	[टॉलस्टाय]	२·५०
आँसू और मुस्कराहट	[खलील जिब्रान] आगामी आकर्षण	

स्पोर्ट्स

खेलें कैसे ?	[पी० एन० अग्रवाल]	५·२५
क्रिकेट	[पी० एन० अग्रवाल]	१·२५

शिल्प

माडर्न कशीदाकारी	[चित्रकार]	४·००

उपन्यास

माधवी	[गुलशन नन्दा]	४·५०
सूखे पेड़ सब्ज़ पत्ते	[गुलशन नन्दा]	४·५०
पत्थर के होंठ	[गुलशन नन्दा]	३ ७५
एक नदी दो पाट	[गुलशन नन्दा]	४ २५
डरपोक	[गुलशन नन्दा]	४·००
बादल छँट गए	[कृष्ण चन्द्र]	३·००
ललितांगी	[यादवचन्द्र जैन]	३·७५
आँचल में दूध : आँखों में पानी	[यादवेन्द्र शर्मा "चन्द्र"]	५·००
मिट्टी का कलंक	[यादवेन्द्र शर्मा "चन्द्र"]	३·००
क्रान्ति, संघर्ष और प्रेरणा	[एस. पी. पांडेय]	५·००

ग़ज़ाला	[शौकत थानवी]	३·७५
नसीम	[शौकत थानवी]	३·५०
इंशा अल्लाह	[शौकत थानवी]	३·००
कुतिया	[शौकत थानवी]	४·२५
कार्टून	[शौकत थानवी]	४·२५
चार सौ बीस	[शौकत थानवी]	३·२५
साँच को आँच	[शौकत थानवी]	३·७५
विल फैंक	[शौकत थानवी]	२·७५
तन के उजले मन के काले	[जमनादास "अख्तर"]	३·२५
बारामूला	[जमनादास "अख्तर"]	४·२५
ओस और अंगारे	[जमनादास "अख्तर"]	३·७५
कश्मीर की बेटी	[जमनादास "अख्तर"]	२·७५
आँसू	[जमनादास "अख्तर"]	३·२५
आग	[जमनादास "अख्तर"]	२·५०
बुर्दा फ़रोश	[जमनादास "अख्तर"]	२·२५
फाँसी की कोठरी से	[जमनादास "अख्तर"]	४·००
पायल	[जमनादास "अख्तर"]	४·५०
राख की परतें	[कमल शुक्ल]	३·२५
धरती की बेटी	[कमल शुक्ल]	३·५०
तूलिका	[सॉमर सेट मॉम]	५·२५
एक ही पतवार	[शिवव्रतलाल वर्मन]	३·२५
शाही लकड़हारा	[शिवव्रतलाल वर्मन]	३·५०
प्रेमपुजारिन	[सुदर्शन]	२·२५
कौन किसी का ?	[रवीन्द्रनाथ टैगोर]	२·२५
समाज का अत्याचार	[शरत्चन्द्र चटर्जी]	२·७५
डाल का पंछी	[शरण]	४·७५
पंछी, पिंजरा और उड़ान	[शरण]	३·५०

नारायणदत्त सहगल एण्ड संज़

दरीबा कलाँ, दिल्ली।